संगीत विषय संबंधी पाठों की रूपरेखा

: लेखक :

श्रीपाद रामचंद्र नाईक

संगीत अलंकार,

धुलीया

मूल्य १ रु. ८ आ.

अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, प्रकाशन

संगीत विषय सम्बधी पाठों की रूपरेखा

: लेखक :

श्रीपाद् रामचंद्र नाईक

संगीत अलंकार,

धुलीया

मूल्य १ रु. ८ आ.

प्रकाशक :–
बा. र. देवधर
अध्यक्ष
अ. भा. गां. महाविद्यालय मंडल, बम्बई

मुद्रक :–
नी. वि. महाबल
गजानन मुद्रणालय, मिरज.

प्रस्तावना

भारत में, सन् १९०६ ई. तक शास्त्रीय संगीत सिखलाने की कोई खास व्यवस्था नहीं हो सकी थी। डा. एनी बेसेन्ट ने उसी वर्ष काशी विश्वविद्यालय और थियॉसॉफिकल विद्यालय नामक संस्थाओं की स्थापना की। इन संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शुरू से ही संगीत को विशेष महत्व दिया गया। उन्ही दिनों कहीं कहीं पाठशालाओं में संगीत के और भी शिक्षक रखे जाने लगे। सौभाग्यवश आज भारत के अनेक विद्यालयों में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया है।

प्रारम्भ में तो अधिकतर पेशेवर गायकों की ही संगीत शिक्षक के रूप में नियुक्ति की जाती थी। वे गायक, विद्वान जरूर होते थे किन्तु संगीत-शिक्षणशास्त्र से वे भली भाँति परिचित न थे। उस्तादी संगीत जानने वाले उन गवइयों को पाठशाला में सामुदायिक रूप से बच्चों को संगीत सिखाने में तरह तरह की कठिनाइयाँ पड़ती थी। इन परिस्थितियों को देखते हुये लोगों को धीरे धीरे संगीत-शिक्षणशास्त्र के जानकार प्राध्यापकों की आवश्यकता प्रतीत होने लगी।

स्वर्गीय पं. विष्णु दिगंबर जी ने लाहोर में सन १९०१ में गान्धर्व महाविद्यालय स्थापित किया। संस्था की व्यवस्थित नियमावली तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया। शिक्षणसम्बन्धी सुविधा के लिये एक संगीत लेखन पद्धति (Notation System) निश्चित की गई। अन्य पाठशालाओं की भाँति संगीत विद्यालय में भी तख्तास्याह का उपयोग किया जाने लगा। सामुदायिक रूप से संगीत शिक्षण के मूलतत्वों से पण्डित जी ने अपने विद्यार्थियों को अवगत कराया और उसका प्रत्यक्ष प्रयोग भी प्रस्तुत किया। संगीत का धीरे धीरे प्रचार बढ़ने लगा। हिन्दुस्तान के अनेक शहरों से आधुनिक पद्धति के संगीत प्राध्यापकों की मांग पण्डित जी के पास आने लगी। इस कमी को पूरा करने के लिये पण्डित जी ने गान्धर्व महाविद्यालय में तय्यार किये हुये लगभग साठ सत्तर संगीतशिक्षकों को भारत के कोने कोने में भेजा।

गान्धर्व महाविद्यालय के अन्तंगत संगीत की परीक्षायें सन् १९०१ से ही होने लगी थी। तदुपरान्त लगभग १९२० में पं. वि. ना. भातखण्डे जी के प्रयत्नों द्वारा बडोदा और ग्वालियर इत्यादि शहरों में आधु-निक संगीत शिक्षण संस्थायें खोली जाने लगी। लखनऊ में भातखंडे शैली के आधार पर 'मॉरिस म्युजिक कॉलिज,' नामक संस्था की प्रस्थापना लगभग सन १९२६ में हुई। इन तीनों संस्थाओं में व्यवस्थित ढग से संगीत की शिक्षा दी जाने लगी और परीक्षायें होने लगी। सन् १९५० तक इस प्रकार की परीक्षा लेनेवाली और भी संस्थाओं की स्थापना होती रही। इस समय तक प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं के लिये संगीत के शिक्षक भी सरलता से मिलने लगे थे। गत २५ वर्षों से अनेक विश्वविद्यालयों ने संगीत का समावेश करके इस विषय की ऊँची ऊँची पदवियाँ प्रदान करना आरम्भ कर दिया गया है। इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिये संगीत के अच्छे विद्वान और शिक्षणशैली के ज्ञाताओं की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। साथ ही संगीत शास्त्र के ज्ञाताओं ने संगीतशिक्षण सम्बन्धी प्रभावशाली रूपरेखायें तय्यार करनी शुरु कर दीं। अन्य बी. टी. कालेजों की भांति, 'प्रयाग संगीत समिति' इलाहाबाद, गां. म. वि. मण्डल कानपूर और मॉरिस कॉलिज लखनऊ ने भी अपने यहाँ बी. टी. के कोर्स लगभग दो तीन वर्ष पूर्व शुरू कर दिये हैं। ऐसी संस्थाओं के लिये सदु-पयोगी पुस्तकों का अभाव अवश्य प्रतीत हो रहा था। इसलिये विवश हो कर कभी कभी संगीत-शिक्षण-शास्त्र की अंग्रेजी पुस्तकों के आधार पर विद्यार्थियों को सिखाया जाने लगा।

धूलियानिवासी श्री एस. आर. नाईक, 'संगीत कला विहार' के प्रमुख लेखकों में से हैं। श्री नाईक धूलिया ट्रेनिंग कॉलेज में संगीत के प्राध्यापक हैं। बडे परिश्रमी और अध्ययनशील व्यक्ति हैं। उनमें कल्पना-शक्ति और लगन देख कर मैं ने उन्हे सुझाया कि ट्रेनिंग कॉलेज के संगीत बी. टी कॉलिज और संगीत शिक्षकों के मार्गदर्शन के हेतु वे इस प्रकार की पाठों को रूपरेखायें तय्यार करें। शीघ्र ही श्री नाईक ने उन कल्पनाओं को प्रत्यक्षरूप में परिणित करना आरम्भ कर दिया। आज उसीके फलस्वरूप 'संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा सकी है।

इस सम्बन्ध में एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि श्री नाईक न विद्यार्थियों के वर्ग मे पहले स्वयं इन पाठों का प्रत्यक्ष प्रयोग किया तदुपरान्त उन्ही अनुभूतियों के आधार पर संगीत पाठों को पुस्तक के रूप में संग्रहित किया है। मुझे विश्वास है कि संगीत के प्राध्यापक इस पुस्तक से लाभ उठा सकेंगे। उपर्युक्त पुस्तक का वास्तविक मूल्यांकन करने के बाद ही गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल ने अपनी, 'संगीत शिक्षा सनद', 'संगीत शिक्षा विशारद' तथा 'संगीत शिक्षा पारंगत,' की परीक्षाओं के लिये इस पुस्तक को मान्यता प्रदान की है। मुझे आशा है कि सरकार की ओर से सारे ट्रेनिंग कॉलिजों के लिये इस पुस्तक की उपयोगिता शीघ्र ही स्वीकार की जायगी।

'संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा,' नामक श्री नाईक की पुस्तक के मूल्यांकन पर अनेक विद्वानों ने अपने अपने विचार व्यक्त कर ही दिये हैं जो प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित किये गये हैं। इसी लिये मैं ने इस सम्बन्ध में अधिक प्रकाश डालना आवश्यक न समझा। पुस्तक की सफलता पर बधाई देते हुये लेखक के प्रति मैं हार्दिक शुभ कामनायें व्यक्त कर रहा हूँ।

बी. आर. देवधर

अभिप्राय

आपकी लिखी हुई, "संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा" मैं ने पढ़ी। इस रूपरेखा को तय्यार करने में आपने बडा परिश्रम किया है। शालोपयोगी वर्तमान संगीत को अनेक पुस्तकों से आपने जानकारी प्राप्त कर जिस प्रकार एक व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध रूपरेखा तय्यार की है, विद्यार्थियों तथा संगीत के प्राध्यापकों का दृष्टिकोण से यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं समझता हूँ अगर इन पाठों को ध्वनिमुद्रित कर के पाठशालाओं को उनके रेकार्डस दे दिये जायें तो और भी अच्छा होगा। गायन वादन श्रवणप्रधान विद्या है। इसलिये प्रत्यक्ष रूप में गले से निकले हुये रागालाप, शब्दोच्चार इत्यादि विद्यार्थियों को अधिक प्रभावित कर सकेंगे।

ईश्वर आपके प्रयत्नों को यशप्रदान करें यही मेरी हार्दिक कामना है।

(हस्ताक्षर) **श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर**
गायनाचार्य
प्रिन्सपल, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय, लखनऊ

"संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा" श्रीयुत नाईक की सूझ और कल्पना का प्रतीक है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई पाठों की यह रूपरेखा सरल और स्पष्ट है। नई और पुरानी पीढी के संगीत शिक्षकों को इस नवीन लेखनशैली से आशा है लाभ होगा। श्री नाईक की लेखनशैली में ओज और कला है। पुस्तक में आदि से अन्त तक उन्होंने एक प्रकार का सिद्धान्त प्रस्थापित किया है। उनका प्रयत्न सर्वथा प्रशंसनीय है।

(हस्ताक्षर) **रा. ना. वले,**
जिला शिक्षणाधिकारी, प. खा. धूलिया

संगीत के शास्त्रीय तथा प्रात्यक्षिक विभाग के लिये तो आज पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है। परन्तु व्यवस्थित रीति से पाठ कैसे पढाने चाहियें इस सम्बन्ध में अभीतक कदाचित कोई भी पुस्तक नहीं छपी। "संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा" नामक श्री नाईक द्वारा लिखित पुस्तक संगीत शिक्षण के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयास है। हम इस पुस्तक का स्वागत करते हैं। हमें आशा है संगीत शिक्षकों के लिये यह पुस्तक मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

(हस्ताक्षर) **शं. ग. व्यास**
१४८ हिंदू कॉलनी, व्यास भुवन, दादर-बम्बई नं. १४.

"संगीत कला विहार' में आपके लिखे हुये पूर्वप्रकाशित लेख भी मैं बराबर पढता रहा। ट्रेनिंग कालिजों में दूसरे विषयों के पाठ जिस व्यापक तथा ध्येयात्मक दृष्टि से पढाये या सिखाये जाते हैं, संगीत के विषय में उसी प्रकार का आपका यह प्रयास स्तुत्य है। संगीत ही एक ऐसी विद्या है जिस में अक्षरशः Direct Method ईमानदारी से लागू किया जा सकता है। श्रवण और अनुकरण दोनों ही संगीत के महत्वपूर्ण साधन हैं। इस लिये ऐसी विद्या के लिये प्राठ पद्धति कहाँतक उपयोगी सिद्ध होगी यह तो अनुभव द्वारा ही हम जान सकेंगे; तथापि वह अनुभूति प्राप्त करने के लिये आवश्यक भूमिका तथा साधनसामग्री आपने संग्रहीत की है। आपका यह प्रयास अभिनन्दनीय है। इस कार्य के लिये मेरी शुभ कामनायें आपके साथ हैं।

(हस्ताक्षर) **गणेश हरी रानडे**
प्रोफेसर, फर्ग्युसन कालेज, पूना
Ex-member and Secretary,
Music Education Committee,
appointed in 1948-49, by
the Government of Bombay.

संगीत शिक्षक के लिये संगीत कला और अध्यापन दोनों ही मे परिचित होना आवश्यक है। अध्यापन भी एक कला है। इसका अपना एक स्वतंत्र शास्त्र है। दोनो कलाओं के जाननेवाले शिक्षक बहुत कम हैं। परन्तु सौभाग्यवश हमारे यहाँ श्री नाईक जैसे कार्यकुशल और परिश्रमी शिक्षक मौजूद हैं। आजतक सर्वसाधारण संगीत शिक्षकों के मार्गदर्शन के हेतु संगीत के अध्यापन की एक भी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी। "संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा" लिख कर श्री नाईक ने इसकी अभावपूर्ति में एक नया कदम उठाया है। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये मैं श्री नाईक का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

श्री नाईक द्वारा लिखी हुई "संगीत विषयक पाठों की रूपरेखा" विशेषतः संगीत–शिक्षा–विशारद और संगीत शिक्षा पारंगत, में बैठने वाले विद्यार्थियों के लिये है। परन्तु इस परिक्षा में प्राथमिक और माध्यमिक पाठशालाओं के बहुत कम विद्यार्थी बैठते हैं। ट्रेनिंग कॉलेज से भी बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है। इसलिये इस प्रकार के विद्यार्थियों को जब शालोपयोगी विषय समझ कर संगीत सिखाने की आवश्यकता पडेगी तब संगीत शिक्षकों को अपनी शिक्षण शैली में कुछ परिवर्तन करके संगीत सिखाना पडेगा। ऐसे समय में संगीत–शास्त्र के अतिरिक्त शिक्षक को मानसशास्त्र की ओर ध्यान देना पडेगा। शास्त्रीय संगीत के साथ साथ सुगम संगीत भी सिखाना चाहिये। आज भी पाठशाला और कॉलेज के विद्यार्थियों को राष्ट्रगीत तक व्यवस्थित ढंग से गाना नहीं आता। यह अवस्था हमारे कॉलेज और पाठशालाओं के संगीत शिक्षण का शोचनीय दशा का दिग्दर्शन कराती है।

मैं श्री नाईक से अनुरोध करूँगा कि वह कोई ऐसी पुस्तक भी प्रकाश में लायें जो संगीत परिक्षाओं में न बैठनेवाले पाठशाला और कॉलेज के सामान्य विद्यार्थियों के लिये मार्गदर्शन कर सके।

(हस्ताक्षर) एस. वी. केलकर
प्राचार्य, जी. बी. टी. सी. धूलिया

———

निवेदन

प्रिय पाठकों

"संगीत विषय संबंधी पाठों की रूपरेखा" नामक पुस्तक आज प्रकाशित हो रही है। पुस्तक लिखने का मेरा उद्देश यही है कि वर्तमान संगीत शिक्षकों को संगीत शिक्षण सम्बन्धी पर्याप्त विवरण प्राप्त हो सके। माध्यमिक शाला, ट्रेनिंग कालेज और संगीत पाठशालाओं में संगीत सिखाते समय मिलने वाली स्वानुभूतियों के आधार पर ही मैं ने यह पुस्तक लिखी है।

यह सत्त है कि संगीत की विद्या निरन्तर गुरुमुख से सुन सुन कर ही ग्रहण की जाती है। परन्तु आजकल पाठशालाओं में अन्य विषयों के साथ साथ संगीत को अधिकाधिक महत्व मिल रहा है। एक निश्चित समय के अन्दर ही किस प्रकार विद्यार्थियों को संगीत सिखलाया जाय इसके लिये किसी न किसी पद्धति का सहारा लेना आवश्यक है। मैंने इस दिशा में पहले स्वयं प्रयोग किया, तत्पश्चात इस पद्धति का प्रत्यक्ष प्रयोग मैंने आधाव प्रायमरी ट्रेनिंग कॉलिज, धूलिया, तथा वहीं के कमलाबाई शं. कन्याशाला (High School) तथा आदर्श संगीत विद्यालय में करके देखा। इन तीनों संस्थाओं में मुझे सफलता मिली।

इस सफलता के आधार पर मैं चाहता हूँ कि मेरे इस प्रयोग से दूसरे संगीत के शिक्षक भी लाभ उठायें, और एक निश्चित समय के अन्दर पाठशाला के विद्यार्थियों को संगीत के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी दे सकें। यही मेरी हार्दिक इच्छा है और इस पुस्तक के प्रकाशन में यही मेरा उद्देश्य भी है।

प्रारम्भ में "पाठों की रूपरेखा" का अर्थ स्पष्ट किया गया है, तदुपरान्त संगीत के विभिन्न विषयों की रूपरेखा किस प्रकार बनाई जा सकती है इसका विवेचन दिया गया है। छः पाठों में संगीत शास्त्र का विवरण है। तबलावादन की प्रारम्भिक जानकारी के लिये १ पाठ, विभिन्न राग की चीजों, राग विस्तार और तान इत्यादि के लिये ८ पाठ, तथा खयाल, ठुमरी, तराना, ध्रुपद के लिये एक एक अर्थात ४ पाठों में इस पुस्तक का विभाजन किया गया है। प्रत्येक रूपरेखा के अन्त में विद्यार्थी शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण भी दिया गया है। इस पद्धति में संभवतः किस प्रकार की अड़चनें आ सकती है, तथा उन कठिनाइयों को दूर करने के बाद किस प्रकार पाठ को प्रभावशालो बनाया जा सकता है इसका भी स्पष्टीकरण कर दिया गया है। इस पुस्तक में सन् १९४८-४९ की, सरकार द्वारा नियुक्त म्यूज़िक एज्युकेशन कमिटी की शिफारिश के आधार पर स्वीकृत स्वरलेखन पद्धति का उपयोग किया गया है। पुस्तक में दिया हुये दुर्गा, काफी और भैरवी, ठुमरा की चीजें मेरी बनाई हुई हैं, बाकी चीजें, खयाल, तराना, ध्रुपद आदि की रचनायें पुरानी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में आपको भाषासौन्दर्य नहीं मिलेगा क्यों कि मैंने अपनी अनुभूतियों और कल्पनाओं को सरल से सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है। मेरे इन विचारों की अभिव्यक्ति "संगीत कला विहार" के क्रमशः अंकों द्वारा होती रही। इस पुस्तक के प्रकाशन का श्रेय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल के अध्यक्ष माननीय प्रो. बी. आर देवधर जी को है। उन्ही के प्रोत्साहन, सहानुभूति तथा सहयोग के कारण ही मेरा यह प्रयास भी सफल हो सका है। मेरी पुस्तक पर प्रस्तावना लिख कर उन्हो ने मुझे अनुग्रहीत किया है। इन समस्त उपकारों के लिये मेरे पास शब्द ही नहीं है कि मैं उनका आभार व्यक्त कर सकूं।

इसी प्रकार पं. एस. एन. रातांजनकर, श्री शंकररावजी व्यास, प्रा. जी. एच रानडे, माननीय आर. एन. वले, डॉ. एस. वी. केलकर जैसे महानुभाओं ने मेरी प्रार्थना स्वीकार की। मेरी पुस्तक का अध्ययन करके पश्चात समय निकाल कर इन प्रतिष्ठित विद्वानों ने अभिप्राय के रूप में तत्सम्बन्धी अपने अपने विचार व्यक्त किये। इस प्रोत्साहन के लिये मैं उन सब का चिरकृतज्ञ रहूँगा।

श्री गजानन मुद्रणालय मिरज के संचालक तथा संगीत कला विहार के मॅनेजर श्री एन. वी. महाबल ने कम से कम खर्च में पुस्तक छाप कर जिस सहानुभूति तथा अपनेपन का परिचय दिया है उसके लिये मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

अन्त में, अ. भा. गांन्धर्व महाविद्यालय मण्डल के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शन करना मेरा परम कर्तव्य है। इस पुस्तक का प्रकाशन बिना मण्डल के सहयोग के असम्भव था'। 'कम्पोजिंग चार्जेस,' माफ कर देने से प्रकाशन का आर्थिक बोझ मुझ पर बहुत कम पड़ा। इसके अतिरिक्त अ. भा. गां. म. वि. मण्डल ने अपने पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मेरी पुस्तक को मान्यता प्रदान की है। इस कार्य के मैं मण्डल का सदैव ऋणी रहूँगा।

मैं संगीत के प्राध्यापकों तथा संगीत प्रेमियों से आशा करूंगा कि वे यथा सम्भव इस पुस्तक से लाभ उठा कर अपने विचारों से मुझे अवगत करते रहेंगे।

श्रीपाद रामचंद्र नाईक
लेखक

स्वर लेखन पद्धति का स्पष्टीकरण

(१) सा और प दोनों स्वर अचल हैं। इसलिये वे सदा शुद्ध होते हैं।

(२) शुद्ध स्वरों में कोई चिन्ह नहीं दिया गया। जैसेः- रे ग म ध इत्यादि।

(३) कोमल स्वरों के नीचे झुकी हुई तिरछी लकीर है। जैसेः- रे॒ ध॒ ग॒ इत्यादि।

(४) तीव्र मध्यम का चिन्ह; स्वरों के ऊपर सीधी खडी रेखा। जैसेः- मं ।

(५) मध्य सप्तक के स्वरों में कोई चिन्ह नहीं है। जैसेः- स रे ग म इत्यादि।

(६) मंद्र सप्तक का चिन्ह, स्वरों के नीचे बिन्दु है। जैसेः- नी़ ध़ प़ इत्यादि।

(७) तार सप्तक के स्वरों के ऊपर बिन्दु दिया गया है। जैसेः- सां रें गं मं इत्यादि।

(८) स्वर लेखन में स्वर या अक्षर लम्बे करने का चिन्ह, अवग्रह चिन्ह। जैसेः- रे ऽ म ऽ।

(९) स्वर या अक्षर के नीचे यदि कंस न हो तो प्रत्येक स्वर या अवग्रह 'एक-मात्रा' का समय लेता है।

(१०) एक कंस के अन्दर के सारे स्वर अथवा अक्षर एक मात्रा में ही समझना चाहिये।
जैसेः- सारेगम या जाऽ नेऽ नाऽ इत्यादि।

(११) पुनरुच्चारण के लिये उतनी ही बार नोटेशन के स्वरों को फिर से लिखना चाहिये।
जैसेः- पनियाँ भरन इत्यादि।
रे रे रे मममम

(१२) एकही स्वर या अक्षर को लम्बा करना हो तो - मो ऽ ऽ री ऽ के जैसा लिखना चाहिये; इस
रे ऽ ऽ म ऽ
का मतलब यह है कि मो का अक्षर रे के एक ही स्वर पर तीन मात्रा तक और री का अक्षर म के ही स्वर पर दो मात्राओं के समय तक कहते रहना चाहिये।

(१३) अलंकारिक कण स्वर दिखाना हो तो स्वर के ऊपर बाई तरफ छोटे अक्षर में लिख दिया जाता है। जैसेः- ᵍप (ग प)

तालों के चिन्ह

(१४) सम का निशान - गुणा के चिन्ह जैसा होता है। जैसेः- ×

(१५) बाकी जिन मात्राओं पर ताली होंगी, उन मात्राओं के नीचे (सम को पहली ताली मान कर) अगले अंक अर्थात २, ३, ४, लिखे जायें जैसे | १ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | इत्यादि
| × | २ |

(१६) खाली का निशान खोखला शून्य है। जैसे | ९ १० ११ १२ | इत्यादि
| ० |

(१७) ठेके के अक्षरों के बाद में आने वाली खडी लकीरें तालों के खण्ड दिखलाती है।
जैसेः- | १ २ | ३ ४ | ५ ६ | इत्यादि

(म्यूझिक एज्युकेशन कमिटी का शिफारिशों पर आधारित स्वर-लेखन पद्धति)

– अर्पणपत्रिका –

जिन की कृपा से, मैं ने संगीत संसार में प्रवेश किया तथा
आज भी संगीत कला की सेवा कर रहा हूँ
मेरे गुरुवर्य

पं. श्रीपत बी. शास्त्री

को

सादर समर्पित।

– लेखक

लेखक

श्री. श्रीपाद रामचंद्र नाईक

संगीत अलंकार, धुलिया

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

यदि हम चाहते हैं कि किसी भी विषय को व्यवस्थित ढंग से सिखलायें, तो उस के लिये, प्रत्यक्षरूप से शिक्षा शुरू करने के पहले ही यह बाकायदा लिखकर रख लेना चाहिये, कि हमें आज क्या सिखलाना है और कैसे सिखाना है। ऐसा करने से ऐन वक्त पर गड़बडी नहीं होती और विद्यार्थियों को पाठ भली भांति समझाया जा सकता है। इसी लिखने को हम पाठों की रूपरेखा (Lesson–plan), कहते हैं। यह रूपरेखा तय्यार करना शिक्षण शास्त्र का एक महत्व पूर्ण विषय है। और इसी पर शिक्षकों के अध्यापन का यश अवलंबित है।

संगीत विषय के दो स्वतंत्र विभाग हैं, एक शास्त्र, दूसरा प्रात्यक्षिक। शास्त्र के पाठ तथा प्रात्यक्षिक के पाठ, दोनों की पद्धति में थोडा अन्तर होता है। इसी प्रकार प्राथमिक अथवा माध्यमिक शालाओं की तथा संगीत शालाओं की शिक्षा प्रणालियों में भी अन्तर होता है। इस का कारण पहला तो यह कि दोनों जगहों का अभ्यासक्रम एक तरह का नहीं होता। दूसरा कारण यह है कि माध्यमिक शालाओं में इस विषय के लिये, नीचे के वर्गों के लिये हफ्ते में २ घंटे (Periods) और ऊपर की कक्षाओं के लिये तो केवल एक ही घटा भरपूर मिलता है। इस परिस्थिति में तो केवल यह उद्देश्य पूरा हो सकता है कि विद्यार्थियों को रागों की पहचान हो जाय, स्वर और ताल में ठीक ठीक गा सकें, और संगीत के अच्छे श्रोता बन सकें। संगीत एक कला है। पाठशाला के वर्ग का प्रत्येक विद्यार्थी संगीत सीख जाय यह कोई कैसे कह सकता है? क्यों कि किसी के पास आवाज नहीं है तो किसी के पास मेहनत और अभ्यास का अभाव है। गायन के अतिरिक्त स्कूलों में वाद्य सिखाना सम्भव नहीं है (बाजों के अभाव के कारण)।

संगीत विद्यालय के विद्यार्थी के गायकी सिखानी पड़ती है; इस के अतिरिक्त व्यक्तिशः वाद्यों का बजाना सिखाया जाता है, यह सब यही के लिये सम्भव है। कारण यह है कि स्कूल के विद्यार्थियों की अपेक्षा संगीत विद्यालय के वर्ग में उनकी संख्या कम होती है। संगीत शाला के प्रत्येक वर्ग में अधिक से अधिक १०, १२ विद्यार्थी होते हैं; इस से ज्यादा होने भी नहीं चाहिये। और फिर संगीत शालाओं में ३५ या ४० मिनट के घंटे के बजाय ६० मिनट का घंटा (Period) होता है। इन सब कारणों से दोनों शालाओं की शिक्षण पद्धति में अन्तर का होना स्वाभाविक ही है। रूपरेखा तय्यार करने में इन दोनों पद्धतियों पर विचार तो होगा ही, किन्तु इसके पहले कि दोनों स्थानों पर पाठ की शुरुआत की जाय, निम्न लिखित महत्व पूर्ण सूचनाओं पर ध्यान रखना आवश्यक है।

(१) वर्ग :– (अ) संगीत शाला के विद्यार्थियों का वर्ग बैठक के ढंग पर होना चाहिये। चेहरे का रुख उस ओर हो जिधर से गले में हवा न जाय। विद्यार्थियों की संख्या एक वर्ग में अधिक से अधिक दस हो।

(ब) पाठ जिस समय चलता रहे, बेंच पर बैठे हुये सारे विद्यार्थियों को व्यवस्थित ढंग से सीधे हो कर बैठना चाहिये।

(२) पूर्व तय्यारी :– (१) पाठ के लिये आवश्यक वस्तुयें (बाजे इत्यादि) पाठ शुरू होने के पहले ही इकठ्ठा करके स्वर में मिला लेना चाहिये।

(२) पाठ के लिये आवश्यक सामान ही विद्यार्थी के पास रहना चाहिये। पाठशाला में समय पर उनकी उपस्थिति का होना अत्यन्त आवश्यक है।

(३) तय्यारी इतनी करके रख लेना चाहिये कि शान्ति के साथ, उत्साह पूर्वक, तथा आत्मविश्वास और उमंग के साथ पाठ की शुरुआत हो सके।

(३) पाठों की भूमिका :– (१) शिक्षण शास्त्र का नियम है कि विषय प्रवेश करते समय प्रस्तावना उस के अनुरूप होना चाहिये। सिखाते समय विद्यार्थी के सामने उस विषय को इस ढंग से रखना चाहिये कि उसके प्रति विद्यार्थियों के हृदय में उत्सुकता बढ़े।

(२) जो विषय सिखाना हो उस के विभाग कर लेना चाहिये, फिर प्रत्येक विभाग को अहिस्ते अहिस्ते, आवश्यकतानुसार तख्ती पर, स्पष्ट करके सिखाना

चाहिये। शिक्षक को विषय का रूप निश्चित करके सिखाना चाहिये। यह देखने के लिये कि सिखाया हुआ विषय उन की समझ में अच्छी तरह आ गया है कि नही। विद्यार्थियों से योग्य प्रश्न भी पूछने चाहिये।

(३) कभी कभी विद्यार्थी केवल पाठान्तर करके बिना अच्छी तरह समझे ही प्रश्नों के उत्तर दे दिया करते हैं। उस समय उनके उत्तर पर भरोसा न करके यह अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि सिखाया हुआ विषय विद्यार्थी ने अच्छी तरह समझ लिया है अथवा नही।

(४) सिखाते समय विद्यार्थी को यह अवसर देना चाहियें कि वह अपनी कल्पना तथा विचार शक्ति दिखा सके, अर्थात शिक्षक को चाहिये कि वह उसे सब कुछ न बता दे। उत्तर देने के लिये क्षात्रों को थोडा समय देकर, प्रश्न ऐसे विचारने चाहिये जिनके उत्तरों से पाठ में अधिक से अधिक सहायता मिल सके।

(५) किसी राग को सिखाते समय, उस में, अथवा उसी प्रकृति के दूसरे रागों के साधारण नियम एक जैसे होते हैं, इस परिस्थिति में अलग अलग तद्विषयक प्रदर्शनों के द्वारा अच्छी तरह समझा देना चाहिये।

(६) विद्यार्थियों को सिखाते समय यदि कोई नई चीज सिखाई जाय, तो अपने पाठ में उस का उपयोग करके देख लेना चाहिये ताकि पता चल जाय कि उन की समझ में ठीक से आ गया है अथवा नहीं। उदा-हरणार्थ :- हम ने वादी संवादी स्वर विद्यार्थी को समझाया। किन्तु उसके साथ यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों द्वारा ही रागों में उसका प्रत्यक्ष उपयोग करके देख लिया जाय। (आवश्यकतानुसार उस में भूल सुधार करना चाहिये)

(७) विषय प्रतिपादन करते समय उद्देश्य को छोडना नहीं चाहिये। स्पष्टीकरण के लिये अधिक से अधिक उदाहरण देने चाहिये। यह सब करते हुये भी मुख्य विषय में किसी तरह की कमी नहीं रह जानी चाहिये।

(८) विषय सिखलाने के बाद उसे दुहराना भी शिक्षण शास्त्र का महत्वपूर्ण अंग है। प्रश्नोत्तर के रूप में पाठ का दुहराना अच्छा है। यदि प्रात्यक्षिक दुह-राना हो तो वह विद्यार्थियों से ही करा लेना चाहिये। प्रात्यक्षिक के समय इस बात का खयाल रखना चाहिये कि वह बहुत लम्बा चौडा तथा ऐसा न हो जिस से जी ऊब जाय। संगीत विषय तक सीमित इस प्रात्य-क्षिक के दुहराने का नाम यदि हम **व्यक्तिगत प्रात्य-क्षिक** रखें तो कोई हर्ज नहीं।

(४) प्रश्न- (१) केवल होशियार को छोड कर बाकी सब विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने चाहिये अथवा गाने के लिये कहना चाहिये। सवाल का जबाब देने के लिये उन्हे पर्याप्त समय देना चाहिये।

(२) प्रश्न सरल, तथा विचार शक्ति पर जोर देनेवाला होना चाहिये।

(३) ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिये जिसका जबाब केवल 'हाँ' अथवा 'ना' तक सीमित रहे।

(४) यदि विद्यार्थी से प्रश्न का जबाब केवल आधा ही मिले तो उसे पूर्ण करा लेना चाहिये। उत्तर कठिन हो तो थोडी देर उस रट भी लेना चाहिये। प्रात्यक्षिक पाठ के समय कुछ स्वर समुदाय और तान इत्यादि, जब तक अच्छी तरह न आ जाये, गवाते ही रहाना चाहिये।

(५) आदत ऐसी डालनी चाहिये कि एक समय में एक ही विद्यार्थी उत्तर दे। चार पाँच विद्यार्थियों के एक साथ जबाब देने का तरीका अच्छा नहीं है।

(५) तख्ता स्याह (Black Board) :- (१) पाठ शुरू होने के पहले विद्यार्थियों को तख्ता सियाह (Black Board) साफ पोंछ डालना चाहिये और आवश्यकतानुसार उस का उपयोग करना चाहिये।

(२) पट्टी की लिखावट ऐसी हो जो सरलता से पढी जा सके साथ ही सुन्दर भी हो। विद्यार्थी स्वभावतः अनुकरणशील होने के कारण, हम जिस तरह लिखते हैं, गाते हैं, तथा बजाते हैं, वो उसी की नकल करते हैं, इस लिये शिक्षक को स्वतः व्यवस्थित होना चाहिये।

(३) पट्टी पर लिखे हुये अक्षर सुन्दर हों तथा लिखे जायें। यदि शास्त्र सिखाने के समय अथवा वाद्यों के विषय में जानकारी देते समय चित्र खींच कर सम-

झाया जाय तो उस का परिणाम अच्छा होगा। हो सकता है सारे बाजों को इकठ्ठा कर के विद्यार्थियों को दिखाना पाठशाला के लिये सम्भव न हो सके इस परिस्थिति में चित्रों के द्वारा इस अभाव की पूर्ति की जा सकती है।

(६) पाठों की सफलता :- (१) शिक्षकों का व्यक्तित्व रोबदार रहने से विद्यार्थियों पर वजन अधिक पडता है।

(२) सवाल पूछने में, तथा उत्तरों का उचित उपयोग कर लेने का कौशल्य शिक्षकों में होना आवश्यक है।

(३) विषय प्रतिपादन सिलसिले वार होना चाहिये।

(४) विद्यार्थियों के छोटे मोटे कानों पर भी ध्यान रखना चाहिये।

उदाहरण :- गाते समय चेहरे की मुद्रा खराब तो नहीं हो रही है, आवाज चूरा कर तो नहीं निकालते, नाक से तो नहीं गा रहे हैं? शाला के विद्यार्थी गाते समय ताल हाथ से बराबर देते है अथवा नहीं, इन सब पर शिक्षक की नजर रहनी चाहिये।

ऊपर लिखी हुई सारी बातों में ही यश की सफलता निहित है। पाठ की तय्यारी के साथ इन वातों पर भी अच्छी तरह ध्यान देना अनिवार्य है।

अब हमें यह देखना चाहिये कि पाठों की, विषयवार और वर्गवार, रूपरेखा कसे लिखी जानी चाहिये।

एक पूरा कागज लीजिये, उसे लम्बाई की ओर से पकडिये, उसे अपने सामने रखने के वाद, अपने बायें हाथ के कोने पर **पाठों का क्रमांक** रखिये। दाहिनी तरफ कोने में पाठ में लगने वाला **समय** डालिये। मध्य भाग में पाठ का **दिनांक, महिना** और **सन,** लिखिये। वायें ओर जहां पाठों का क्रमांक लिखा जाता है, उस के नीचे, जिस कक्षा तथा वर्ष में पाठ लेना हो वह **कक्षा** तथा **वर्ष** लिखना चाहिये। उस के नीचे पाठ के लिये लगने वाले **सामान** का नाम हो। उस के भी नीचे पाठ सम्बन्धी **प्रस्तावना** लिखिये। और उस के नीचे **हेतु कथन** (जो आज सिखाना हो) उस के बाद बीच में जहां दिनांक आदि लिखा है, उस के नीचे **पूर्वज्ञान** (जो विषय सिखाने के लिये लिया गया है वह, और विद्यार्थियों को उस के पहले की जानकारी) लिखना चाहिये। इन सब के पश्चात उस दिये हुये कागज को तीन विभागों में बाँटें। बायें ओर पहले विभाग में **विषय विवेचना,** मध्य भाग में **प्रश्न और पध्दति** ओर तीसरे में **पाटी लेखन** होना चाहिये।

मुद्यांसह विषय	प्रश्नांसह पद्धति	फलक लेखन

विषय विवेचना :- (१) शिक्षकों का कला-दर्शन, (२) हेतु प्रश्न (प्रात्यक्षिक के बाद जो भी समझ में आया है, उस के सारांश पर आधारित प्रश्न), स्पष्टीकरण, विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रात्यक्षिक, (अर्थात दुहराना) और उसके बाद गृह पाठ आदि होने चाहिये।

प्रश्न और पद्धति :- इस खाने में, पहले प्रकरण के प्रत्येक विषय संबंधी क्या प्रश्न पूछने है, अथवा पाठ लेने के लिये किस पद्धति को ग्रहण करना है इस का स्पष्टीकरण होना चाहिये।

पाटी लेखन :- इस खाने में पहले यह लिखिये कि पाटी पर आप को क्या क्या लिखना है। किंतु शास्त्र संबंधी पाठ पढाते समय तथा पाठशाला के वर्ग को पाठ देते समय पहले प्रकरण के विषय कुछ बदलने पडेंगे। इस प्रकार संगीत विद्या विषयक पाठों की रूपरेखा तीन तरह की होगी।

(१) प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं में सिखाने के लिये।

(२) संगीत विद्यालय के विद्यार्थियों को सिखाने के लिये।

(३) शास्त्र सिखाने के लिये।

भविष्य में हम यह बताने का प्रयत्न करेंगे कि भिन्न भिन्न प्रकार से यह रूपरेखा कैसे लिखी जाय, उन का विषय क्या हो, प्रश्न कौन से और कैसे पूछे जाने चाहिये इत्यादि।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक २

क्रमांक:- १ ला दिनांक- महिना- सन- **समय:- ३५ मिनट.**

कक्षा:- ५ वीं. विषय:--उपविषयों के सहित **संगीत शास्त्र-** स्वर का अर्थ तथा उसका उपयोग समझाकर बताना

साहित्य:- (१) ध्वनि यंत्र अथवा एक बर्तन
(२) एक लकडी साधारणत: ६ इंच लम्बी
(३) लकडी के दो टुकडे
(४) हार्मोनियम

पूर्वज्ञान:- (१) विद्यार्थियों ने भांति भांति के गाने सुने हैं (२) सपेरे का खेल देखा है (३) प्रदर्शनी में पालने अथवा झूले पर बैठने से मिलने वाला आनन्द अनुभव किया है।

प्रस्तावना:- छोटा बच्चा यदि रोने लगे, उसे चुप कराने के लिये उसकी माता क्या करती है ? सपेरा नाग का खेल करता है, उस समय किस वस्तु का उपयोग करता है ?

हेतुकथन:- गाने में अथवा तुमडी आदि की आवाज में मनोरंजकता किस कारण आती है, यह आज हमें देखना है :-

विषय· (तत्वसहित)	पद्धति- (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह - लेखन
प्रतिपादन:- स्पष्टीकरण-आवाज-	अब मैं यह समझाऊँगा कि ये लकडी के दो टुकडे मैं एक दूसरे से टकराता हूँ; प्रत्यक्ष आघात लगने के बाद कितनी देर टिकी ? इसी प्रकार मैं हाथ से ताली बजाता हूँ। प्रत्यक्ष ताली बजाने के पश्चात यह आवाज कितनी देर टिकी ? इस प्रकार जिस आघात का मस्तिष्क में आभास होता है परन्तु अन्त:करण तक नहीं पहुचती, उसे आवाज कहते हैं।	आवाज- दिमाग को भास होता है, पर अन्त:करण तक नहीं पहुँचता, ऐसे आघात को आवाज कहते हैं !
कोलाहल-	मैं अब यह कहना चाहता हूँ कि वर्ग में शिक्षक के आने से पहले विद्यार्थियों के बोलने आदि की मिश्रित आवाज, यदि आप में से किसी शान्त विद्यार्थी ने सुना, तो उस के कानों को कैसा लगेगा ? अथवा जब आप साग भाजी के बाजार में जाते हैं, उस समय प्रत्येक की एकत्रित आवाज आप के कानों को कैसी लगती है ? ये आवाज कष्टदायक क्यों लगती हैं। इस प्रकार कम - अधिक ऊँचाई की मिली हुई आवाज को कोलाहल कहते हैं।	कोलाहल - कम - अधिक ऊँचाई वाली एकत्रित मिली हुई तथा कानों को कष्ट-दायक आवाज को कोलाहल कहते हैं।

विषय-(तत्वसहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह – लेखन
नाद–	मैं समझाऊँगा कि अब इस (मेज पर रखे हुये) बरतन पर मैं डंडे से आघात करता हूँ। इस आवाज में तथा ताली के या लकडी के टुकडे की आवाज में क्या फर्क मालूम पडता है? इन में कौनसी आवाज आप के कानों को मधुर लगती है? जिस आवाज से लहरें उतपन्न होती हैं, उसे 'नाद' कहते हैं।	नाद– जिस आवाज में कम्पन संख्या होती है, और जो अन्तःकरणतक जा पहुँचती है, उसे नाद कहते हैं।
कंपन संख्या–	प्रत्येक नाद की लहरें यंत्र की सहायता से नाप सकते हैं, उन्हे कम्पन संख्या कहते हैं।	
स्वर–	उस के बाद हार्मोनियम पर भिन्न भिन्न स्वर आहिस्ता बजा कर दिखाऊँ–गा। इस प्रत्येक आवाज में आपको क्या फर्क लगता है? इस निश्चित ऊँचाई तथा निर्धारित कम्पन संख्या के मनोरंजक नाद को स्वर कहते हैं।	स्वर– निश्चित ऊँचाई तथा निश्चित कम्पन संख्या के मनोरंजक नाद को स्वर कहते हैं। (स्वर अंतःकरणतक जा पहुंचते हैं)
आरोहावरोह–	छोटे बच्चे को पालने में सुलाते हैं, उस समय झोंके देते समय वह कौन सी क्रिया होती रहती है जिससे बच्चे सो जाते हैं? ऐसी ही क्रिया (ऊपर जाना व नीचे आना) स्वरों के लिये भी लागू की गई है। उस क्रिया को संगीत में 'आरोह' व 'अवरोह' कहते हैं। आरोहावरोह, स्वरों के झोंके होने के कारण इससे पशु, पक्षी, मानव सभी का मनो-रंजन होता है। इस का प्रात्यक्षिक दिखाने के लिये, एक छोटा सा गीत गाकर, उसमें आरोहावरोह कैसे मनोरंजक लगते हैं, यह बताऊंगा।	आरोहः- क्रमानुसार स्वरों का ऊंचे ऊंचे गाते जाना, इस का नाम आरोह है। अवरोहः- क्रमानुसार स्वरों का कम कम (उतरते क्रमसे) गाते आना। इसी को अव-रोह कहते हैं
उपसंहार–	आज आप लोगों ने देखा कि स्वर के क्या अर्थ है, और गाने में अथवा संपेरे की तुमडी में स्वरों के आरोहावरोह रहते हैं।	
आवृत्ति–	(१) आवाज मनोरंजक क्यों नहीं होती? (२) कोला-हल कष्टदायक क्यों होता है? (३) नाद मनोरंजक क्यों लगता है? (४) नाद और स्वर में क्या अन्तर है? (५) स्वरों के आरोहावरोह का उपयोग क्या होता है?	
गृहपाठ–	अपने, रोज के व्यवहार में, अनेक प्रसंगों पर मनोरंजन के लिये गाने का अथवा वाद्यों का उपयोग किया जाता है, उस समय किस प्रसंग पर, गाने का अथवा वाद्यों का उपयोग कैसे करते हैं। इसे लिख कर लाने के लिये कहना।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ नं. १ के विषय में
विद्यार्थी – शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

संगीत शास्त्र सिखाने के लिये शाला की पांचवी कक्षा अथवा संगीत शाला के प्रथम वर्ष से ही शुरु करने के लिये उपविषय में मैं ने दिखाया है कि, स्वर का अर्थ तथा उसकी उपयोगिता क्या है यह समझाकर बताना चाहिये। विद्यार्थियों को मुख्य विषय एक दम न बताकर मै ने यह प्रयत्न किया है कि विषय की ओर ले जाने के लिये, क्रम क्रम से व्यवहारिक रीति से प्रात्यक्षिकों के द्वारा जाना चाहिये। विद्यार्थियों ने भांति भांति के गाने सुने हैं, सपेरे का खेल देखा है, झूले में बैठने का मजा लिया है ये बातें उन का पूर्वज्ञान समझ कर, प्रस्तावना करते समय, प्रश्न, उनके पूर्वज्ञान पर आधारित रखकर, उनसे, 'माँ गाना गाती है' व 'सपेरा तुमडी बजातर हैं' इस प्रकार के उत्तर निकाल लिये गये हैं। प्रश्न के उत्तर यदि विद्यार्थियों ने थोडे अलग भी दिये तो भी कुशल शिक्षक उन से अपनी आवश्यकतानुसार इच्छित उत्तर निकलवा लेता है। इस के बाद हेतु कथन में "गायन तथा तुमडी में मनोरंज-कता किस कारण आती है यह हमें देखना चाहिये"। इस प्रकार शुरु करके विषय प्रतिपादन का आरम्भ किया गया। प्रथम लकडी के दो टुकडों को एक दूसरे से टकराने में और ताली बजाने में, ये दो प्रकार की आवाज प्रत्यक्ष आघात के पश्चात कितनी देर तक टिकी रहती है? इस प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थियों ने बताया "आघात होने के साथ ही आवाज बन्द हो गई"। इसके बाद उन्हे बताया गया कि आघात होने के बाद न टिकने वाले मसितिष्क को पता चल जाय किन्तु अन्तःकरण तक न पहुचने वाले आघात को ही हम आवाज कहते हैं। जब यह प्रश्न पूछा गया कि "कक्षा में शिक्षक के आने से पहले विद्यार्थियों द्वारा होनेवाली एकत्रित आवाज, अथवा भाजी बजार में अनेक लोगों की मिली जुली आवाज तुम्हारे कानों को कैसी लगती है? तो विद्यार्थियों ने उत्तर दिया कि "वह आवाज कष्टदायक है" इस उत्तर के आधार पर उन्हे बताया गया कि "ऐसी कम – अधिक ऊँचाई वाली मिली जुली तथा कानों को तकलीफ पहुचाने वाली आवाज का नाम है 'कोलाहल'। यहाँ एक और प्रश्न पूछा जा सकता था, "यह आवाज (भाजी बजार की) भांति भांति की क्यों होती हैं? इस प्रश्न का हेतु यह है कि विद्यार्थियों से यह उत्तर आये कि "वे आवाजें अलग अलग इस लिये सुनाई पडती है क्यों कि कम – अधिक ऊँचाई की होती हैं।" उस के पश्चात, बरतन मेज पर रख कर, उस पर डंडे से आघात किया, और "यह आवाज कैसी लगती है?" यह प्रश्न विचारने के बदले "इस में, और लकडी के टुकडों अथवा ताली की आवाज में तुम्हे क्या फर्क लगता है? यह प्रश्न पूछ कर विद्यार्थियों के मुंह से ही दोनो आवाजों का फर्क कहलवा लिया "बरतन से निकली हुई आवाज मधुर लगती है क्यों कि आघात के पश्चात इस से स्वर लहरियाँ निकलती हैं।" ऐसा उत्तर आने पर, उन लहरियों को "कम्पन संख्या" कहते हैं और उसे यंत्र की सहायता से नाप सकते हैं, यह मैंने बताया। और यह भी कहा कि जिस आवाज में कम्पन संख्या होती है, उसे "नाद" कहते हैं। फिर मै ने कुछ स्वर हार्मोनियम पर आहिस्ता बजाकर दिखाया। विद्यार्थियों से मैं ने यह जवाब निकलवा लिया कि "यह प्रत्येक आवाज एक से दूसरी अधिक ऊँची है, प्रत्येक आवाज में कम्पन संख्या है तथा वह कानों को मधुर लगती है"। फिर मैं ने यह बता कर कि हार्मोनियम में प्रत्येक आवाज निश्चित ऊँचाई तथा कम्पन संख्या वाली है, उन्हे समझाया कि "एक निश्चित ऊँचाई तथा मर्यादित कम्पन संख्या वाले मनोरंजक नाद को ही "स्वर कहते हैं"। एक विद्यार्थी ने यह जवाब दिया कि "स्वर चूंकि अन्तःकरण तक जा पहुँचता है इसी लिये वह मनोरंजक होता है"

पाठ नं. १ के विषय में विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण
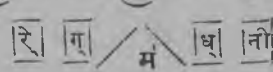
तत्पश्चात आरोहावरोह समझाने के लिये पालने का उदाहरण दे कर विद्यार्थियों से यह उत्तर प्राप्त कर लिया कि " ऊपर जाने – नीचे आने की क्रिया में ही झूले की मनोरंजकता है "। मैं ने उन्हे बताया कि यही क्रिया स्वरों के लिये भी लागू है, क्रमानुसार ऊँचे जाने वाले स्वरों को 'आरोह' तथा नीचे आने वाले स्वरों को 'अवरोह' कहते हैं। यह दिखाने के लिये, कि स्वरों के इस आरोहावरोह के कारण झूले की भांति गाने में भी मनोरंजकता आती है, मैं ने एक छोटा गीत गा कर दिखला दिया। इस प्रकार स्वर तथा उस के उपयोग जैसे मुख्य विषय में सिलसिलेवार जाकर सारी बातें समझा दीं। अन्त में इस शंका समाधान के लिये कि विषय ठीक से समझा गया है या नहीं, उसकी पुनरावृत्ति की, और उस में सीखे हुये विषय के सम्बन्ध में उल्टे प्रश्न पूछे "आवाज मनोरंजक क्यों नहीं ?" होती ? कोलाहल कष्टदायक क्यों लगता है ? नाद मनोरंजक क्यों है ? नाद और स्वर में क्या अन्तर है ? स्वरों के आरोहावरोह का उपयोग क्या है ?" और गृह पाठ के लिये मैं ने यह लिख लाने के लिये कहा कि " नित्य व्यवहार में गाने तथा वाद्यों के मनोरंजन के लिये, कौन, कब और कैसे उपयोग करता है "। इस विषय को देने में मेरी अपेक्षा यह थी कि " मोटवाला मोट चलते समय ललकारता है, नाविक, नाव चलाते समय गीत गाते हैं, गवाले गाय चराते समय वंशी बजाते हैं, स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाने गाती हैं, सर्कस के समय बैन्ड बजता है, नट के तमाशे में ढोल बजती है "। विद्यार्थियों की ओर से यह सिद्ध करने वाले उत्तर आये कि स्वर मनोरंजकता के लिये कारणीभूत है। इस प्रकार एक निश्चित समय के अन्दर विषय सिखा कर समाप्त कर दिया गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ३ रा

पाठ का क्रमांक १ (दिनांक– महिना– सन–) **समय ४० मिनट**

कक्षा ५ वीं **विषय** – (उपविषय सहित) **संगीत शास्त्र** – स्वरसम्बन्धी संपूर्ण जानकारी।

सामान – तम्बूरा (अथवा हार्मोनियम) **पूर्वज्ञान** – विद्यार्थियों को यह मालूम है कि स्वर के अर्थ क्या हैं.

प्रस्तावना – पिछले घंटे में हम ने यह सीख लिया कि स्वर क्या है।

हेतु कथन – आज हमें यह देखना है कि जिस पर सारी संगीत आधारित है, ऐसे सब मिलाकर कितने तथा कौन से स्वर हैं।

विषय तत्व सहित	पद्धति–प्रश्नसहित	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन – स्पष्टीकरण –	यदि किसी लडके का नाम रामचन्द्र है, तो उसे हम "अरे रामचंद्र" इस प्रकार पूरा नाम ले कर नहीं पुकारते किस नाम से पुकारते हैं ?	
(१) स्वरों के सम्पूर्ण नाम –	उसी प्रकार, ऐसा बताना चाहिये, कि षड्ज, रिषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद, स्वरों के पूर्ण नाम हैं. किन्तु गाने के लिये सुविधाजनक हों, इस लिये उनके आधे अक्षर लेकर क्रमानुसार सा, रे, ग, म, प, नी कह कर गाते हैं। ये सातों विभिन्न स्वर एक दूसरे से ऊंचे होते जाते हैं।	स्वरों के सम्पूर्णनाम, – गाने के लिये सुविधा–जनक स्वरों के नाम (१) षड्ज ... . सा (२) रिषभ ... . रे (३) गंधार ... ... ग (४) मध्यम ... ... म (५) पंचम ... . प (६) धैवत ... . ध (७) निषाद ... . नी
(२) शुद्ध स्वर	उन्हे यह बता कर कि रे, ग, म, ध, नी, इन निश्चित ऊंचाई वाले स्वरों को शुद्ध–स्वर कहते हैं। फिर मैं कहूंगा कि उन की मूल ऊंचाई में थोडा कम ज्यादा करके, पांच और भी अलग स्वर तय्यार हो गये हैं। किसी व्यक्ति की ऊंचाई अथवा उम्र में फरक पड गया तो उनके नाम पूर्णतः नहीं बदलते। समझिये यदि बचपन में किसी का नाम 'गोपाल' है तो बडे होने पर उसे क्या कह कर पुकारें गे ? इसीं प्रकार शुध्द स्वरों की कम, ज्यादा ऊंचाई के कारण पडे हुये स्वरों के मूल नाम वही होते हैं। केवल उनके नाम के पीछे कम अथवा अधिक ऊंचाई दिखाने वाला शब्द लगा देते हैं। ऐसे उदारणोद्वारा उन्हे समझा दूंगा।	अचल अचल अचल स्वर२ (सा) रे ग म (प) ध नी शुद्धस्वर५ रे ग म ध नी विकृत स्वर५ शुद्ध स्वर:– मूल (निश्चित) ऊंचाई के स्वर को शुद्धस्वर कहते हैं।

विषय–तत्वसहित	पद्धति– प्रश्नसहित	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
(३) विकृत–स्वर	ऐसे ऊंचाई बदलने के कारण बने हुवे पांचों स्वरों को मिलाकर एक अलग नाम 'विकृत स्वर' दिया गया है। यह बता कर, प्रत्येक शुद्ध-स्वर (एक एक) में गाऊं गा, और उसी का कोमल स्वर गा कर दिखाऊं गा, और विद्यार्थियों से यह कहलवा लूगा कि 'इन स्वरों की ऊंचाई शुध्द स्वर से कम है' इसी प्रकार पहले शुद्ध 'मध्यम' गाकर दिखाऊं गा, और फिर तीव्र 'मध्यम' गा कर विद्यार्थियों से ही यह कहलवा लूगा कि शुद्ध मध्यम से तीव्र मध्यम अधिक ऊंचा है।	विकृतस्वर–शुद्धस्वरों की मूल ऊंचाई में थोडा कम, ज्यादा फर्क कर के बने हुये पाँच स्वर मिलकर विकृत स्वर कहते हैं। विकृत स्वर दो प्रकार के होते हैं :– (१) कोमल स्वर (२) तीव्रतर रे, ग, ध, नी ये चार स्वर कोमल हैं। और (मं) ही एक तीव्र हैं। इस प्रकार सब मिलकर पाँच पाँच विकृत स्वर हैं।
(४) कोमलस्वर	उस के पश्चात, यह बता कर कि शुद्ध स्वर की अपेक्षा कमी ऊंचाई वाले स्वरों को कोमल स्वर कहते हैं। यह कहूं गा कि कोमल स्वर चार हैं:– (१) कोमल रिषभ (रे) (२) कोमल गंधार (ग) (३) कोमल धैवत (ध) कोमल निषाद (नी)। यदि कोमल स्वर लिख कर दिखाना पडा तो, उन्हे बताऊं गा कि ऐसे अक्षरों का पांव मुड जाता हैं ! तत्पश्चात –	कोमल स्वर– शुद्ध स्वर की अपेक्षा थोडी कम उंचाई के स्वर को कोमल स्वर कहते हैं।
(५) तीव्रस्वर	शुद्ध स्वर की अपेक्षा थोडी अधिक ऊंचाई वाले स्वर को 'तीव्र स्वर' कहते हैं। और उन्हे यह बता कर कि ऐसा स्वर केवल एक है, वह है, तीव्र मध्यम (मं) यदि तीव्र मध्यम लिख कर दिखाना पडा तो मैं यह कहूं गा कि ऐसे अक्षर पर (सर पर) खडी सीधी रेखा खींच देते हैं। फिर मैं समझाऊं गा कि 'सा' और 'प' की ऊंचाई में कम या अधिक कोई	तीव्र स्वर–शुद्ध स्वर की अपेक्षा थोडी अधिक ऊंचाई वाले स्वर को तीव्र स्वर कहते हैं।
(६) अचल स्वर	फर्क नहीं होता, इसी लिये उन्हें अचल स्वर कहते हैं। इस के बाद ऊपर लिखे हुये प्रत्येक प्रकार में क्रमशः कौन से और कितने स्वर हैं, इसे तख्ता–स्याह (पाटी)	अचल स्वर-जिन स्वरों की मूल ऊंचाई में, कम या अधिक कोई भी परि–वर्तन नहीं होता उन दो स्वरों को अचल स्वर कहते हैं।
(७) स्वर संख्या सब मिलाकर	पर लिखें गे और यह समझा देंगे संगीतोपयोगी स्वर सब मिला कर बारह हैं।	
(८) सप्तक	फिर यह बता कर कि सा, रे, ग, म, प, ध, नी इन सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। गाने के योग्य तीन सप्तक होते हैं, यह भी बताऊंगा।	सा, प –२– अचल स्वर रे, ग, म, ध, नी, –५– शुद्ध स्वर रे, ग, ध, नी, –४– कोमल स्वर } विकृतस्वर मं— १ – तीव्र स्वर } संपूर्ण — १२ स्वर है।
(९) मध्य सप्तक	अपनी मूल आवाज में जिस मर्यादित ऊचाई के सात स्वर हम गाते है, उसे मध्य सप्तक कहते हैं। इस हिसाब से मैं मध्य सप्तक के स्वर गा कर दिखाऊं गा। और बाद में विद्यार्थियों से भी गवा लूगा।	

विषय– तत्वसहित	पद्धति– प्रश्नसहित	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
(१०) मंद्र सप्तक (११) तार सप्तक	उस के बाद मंद्र सप्तक के स्वर गा कर दिखाऊं गा। ये स्वर मध्य सप्तक की अपेक्षा कम उंचाई के हैं अथवा अधिक? इस प्रश्न का उत्तर आने के पश्चात में यह समझाऊं गा कि मध्य सप्तक में प्रत्येक स्वर की ऊंचाई क्रमानुस.र आधी करने के पश्चात जो स्वर सप्तक तय्यार होता है उसे मंद्र सप्तक कहते हैं। इसी पध्दति के अनुसार मध्य सप्तक के प्रत्येक स्वर की ऊंचाई क्रमशः दुगनी करने से जो सप्तक तय्यार होता है, उसे तार सप्तक कहते हैं, यह बताऊं गा, और विद्यार्थीयों के द्वारा ही कुछ स्वर गवा लूंगा। और इन तीनों सप्तक के स्वर लिख कर दिखाते समय,–मध्य सप्तक के स्वरों के लिये कोई चिन्ह नहीं हैं, मंद्र सप्तक के स्वरों के नींचे बिन्दु रहता है, और तार सप्तक के स्वरों के अक्षर पर (सर पर) बिन्दु देते हैं यह समझाऊं गा।	सप्तक– ' सा रे ग म प ध नी ' इन सप्त स्वरों का (५ विकृत स्वर, उसमेंही समाविष्ट होते हैं) समूह को सप्तक कहते हैं। मध्य सप्तक– आपने मूल, आवाज में जो निश्चित ऊंचाई के स्वर गाये जाते हैं, उसे मध्य सप्तक कहते है। मंद्र सप्तक– मध्य सप्तक के स्वरों के (क्रमशः) आधी ऊंचाई के स्वर सप्तक को तार सप्तक कहते हैं। तार सप्तक– मध्य सप्तक के स्वरों के (क्रमशः) दुगनी ऊंचाई के स्वर सप्तक को तार सप्तक कहते हैं।
(१२) स्वरालंकार	इन बारह स्वरों की पक्की पहचान (स्वर ज्ञान) करने के लिये, विभिन्न स्वरों के विविध स्वर समूह उलट फेर करके उन्हे गा कर पक्का करने की आवश्यकता है। ऐसे स्वर समूह को 'स्वरालंकार' कहते हैं, यह बताऊं गा।	स्वरालंकार– स्वरों के विभिन्न उल्टे पुल्टे समूह को स्वरालकार कहते हैं।
उपसंहार–	इस प्रकार हम स्वरों के सम्पूर्ण तथा छोटे नाम, स्वरों के प्रकार, स्वर संख्या, इसी प्रकार सप्तक व स्वरालंकार आदि चीजों की जानकारी प्राप्त कर भी है।	
आवृत्ति–	(१) स्वरों के सम्पूर्ण नाम क्या ह? (२) गाने की सुविधा के लिये, हम किन नामों का उपयोग करते हैं? (३) सब मिला कर स्वर कितने हैं? (४) उनके कितने प्रकार हैं, (५) विकृत स्वर के दो प्रकार कौन से हैं? (६) विकृत तथा अचल स्वर कौन से हैं? (७) कोमल और तीव्र स्वर किसे कहते हैं? (८) सप्तक क्या है? (९) मुख्य सप्तक कौन से है? मंद्र सप्तक तथा तार सप्तक के क्या अर्थ है? (१०) स्वरालंकार किसे कहते है? (११) स्वरालंकार का उद्देश क्या हैं?	

विषय– तत्वसहित	पद्धति– प्रश्नसहित	तख्ता स्याह(पाटी)लेखन
गृहपाठ	निम्नलिखित जोडों में क्या अन्तर है, लिख कर लाइये :– (१) कोमल स्वर – तीव्र स्वर (२) मन्द्र सप्तक – तार सप्तक । इसी प्रकार तीनो सप्तक के स्वरों का गाने का अभ्यास करके आइये ।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ क्रमांक १ का स्पष्टीकरण

विद्यार्थी शिक्षकों के लिये ।

पिछले पाठ क्रमांक १ में शास्त्र सिखाना प्रारम्भ हुआ । उसमें आवाज, कोलाहल, नाद, कम्पन संख्या, स्वर तथा आरोहावरोह का अर्थ बताने के पश्चात यह सिखलाया गया कि संगीत की मनोरजकता के लिये स्वर एक महत्वपूर्ण विभाग है । आज, 'स्वर सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी' आगे का विषय सिखाते समय, यह समझते हुये कि पिछले पाठ में सिखाये हुये विषयों का पूर्वज्ञान विद्यार्थियों को है, स्वर विषयक सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कराने के लिये, पहले, स्वरों के पहले पूरे पूरे नाम बताये, फिर यह समझाया कि गाने की सुविधा के लिये, उन नामों के केवल आधे अक्षर उपयोग में लाये जाते हैं । इसके लिये मैं ने विद्यार्थियों से यह प्रश्न पूछा कि ''यदि किसी लड़के का नाम रामचन्द्र हो तो हम उसे पूरे नाम से नहीं पुकारते; फिर किस नाम से पुकारते हैं ? इस का उत्तर मिला कि केवल 'राम' कह कर हम पुकारते हैं । इसी प्रकार स्वरों के सम्पूर्ण नाम के बदले आधे अक्षरों का उपयोग किया जाता है, यह मैं ने समझाया । तत्पश्चात क्रमशः शुद्ध स्वर, अचल स्वर तथा विकृत स्वर कौन से हैं, यह बता कर, उन्हे समझाया कि संगीत में इस प्रकार बारह स्वर हैं । विकृत स्वरों के विषय में बताते समय मैंने कहा कि बदले हुये स्वरों के मूल नाम वही होते हैं, केवल ऊँचाई कम और अधिक होने के कारण बने हुये शब्दों, में इंचाई दिखलानेवाला शब्द लगाया जाता है यह समझाने के लिये, मैं ने प्रश्न पूछ कर विद्यार्थियों से यह उत्तर निकलवा लिया कि बचपन में गोपाल कह कर पुकारने वाले लडके का नाम, बडे होने पर 'गोपालराव' पड जाता है । इस प्रकार व्यवहारिक उदाहरणों द्वारा कठिन विषय भी जल्दी समझाया जा सकता है । उस के बाद, स्वरो के सप्तक कैसे बनते हैं, सप्तक के कितने प्रकार हैं, आदि अर्थ सहित बताकर, विभिन्न प्रकार के सप्तक कैसे होते हैं, यह मैं ने प्रत्यक्ष गा कर दिखाया और विद्यार्थियों से भी गवा लिया ।

पाठ चलते रहने के समय, विद्यार्थियों से यथा–सम्भव अधिक से अधिक उत्तर प्राप्त कर लिया जाय, इसी कारण बीच बीच में, प्रश्नादि तथा कुछ स्वर भी गवा लिये जाने चाहिये । इसी कारण हमें यह पता चला कि सिखाई हुई बातें विद्यार्थियों की समझ में अच्छी तरह आ गई हैं । बाद में स्वरों के 'अलंकार' तथा उसकी उपयोगिता, स्वर-ज्ञान पक्का करने के लिये होती है, यहां तक स्वर सम्बन्धी संपूर्ण जानकारी से अवगत कराया । आवृति के प्रश्न में थोडा फर्क शाब्दिक अन्तर कर के, कोमल स्वर व तीव्र स्वर और ''मंद्र सप्तक व तार सप्तक'' इन जोडियों में क्या फर्क है यह लिख कर लाने के लिये कहा । इस से मेरा अभिप्राय केवल यह जानने का था कि विद्यार्थियों की समझ में कोमल तथा तीव्र स्वर का अन्तर और मंद्र तथा तार सप्तक का अन्तर समझ में आ गया है अथवा नहीं । इस प्रकार एक निश्चित समय में संपूर्ण विषय सिखा दिया गया ।

———

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ४ थाँ

पाठ का क्रमांक– ३ (दिनाक– मास– सन १९) **समय** :– **४५ मिनट**.

कक्षा पाँचवी, संगीत शाला का प्रथम वर्ग **विषय** (उपविषय साहित) लय, ताल तथा ताल की संगीत में आवश्यकता

सामान:– घडी (टाइमपीस) और डग्गा. **पूर्व ज्ञान**:– विद्यार्थियोंने बेंड का तालस्वर पर होने वाली 'पोलिस–परेड' देखी है; साथ ही घडी में हर सुई तथा समय सम्बन्धी जानकारी है, और श्वासोच्छ्वास संबन्धी बातें भी विद्यार्थी जानते हैं।

प्रस्तावना:– (१) आप ने साथियों सहित पुलिस परेड देखी है। आपने उस में क्या ऐसी विशेष आकर्षक बात देखी ?

(२) आप का श्वासोच्छ्वास सदा चलता रहता है; एक सांस लेकर उसे छोडते हैं; फिर सांस लेकर छोडते हैं, यह क्रिया निरंतर चलती रहती है; इस में क्या खास बात आप के ध्यान में आती है ?

हेतु कथन:– इन लगातार पडने वाले समान अन्तर के ठेकों को संगीत में क्या कहते हैं और उन की आवश्यकता क्या है, यह आज हमें देखना है।

विषय (तत्वसहित)	पद्धति–(प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह – लेखन
प्रतिपादन :– स्पष्टीकरण :–	एक पागल आदमी रास्ते में चलता है। जरा बताओं तो उस की चाल और अपनी चाल में क्या फर्क होता है ? अब थोडी देर सब लोग शान्त रहिये, और इस घडी की 'टिक्–टिक्' आवाज सुनिये; उसके बाद मैं जिस से पूछूंगा, उसे ऐसा ही 'टिक्–टिक्' शब्द दस बार अपने मुंह से कह कर सुनाना पडेगा। (इस प्रकार का प्रयोग १,२ विद्यार्थियों से करा लूगा) साधारणत: यह शब्द दस बार आप ने कहा; इस में प्रत्येक टिक के बाद दूसरा, तीसरा आदि घडी के अनुसार 'टिक' शब्द कहने के लिये क्या विशेष ध्यान दिया ? अब अपने सीने पर बाई ओर हात लगाकर हृदय की गति के ठेके सुनिये, कैसे पड रहे है ? इस हिसाब से लगातार समान गति को संगीत में बडा महत्व है। मैं यह बताऊंगा। मैं यह समझाने के लिये कि विभिन्न गीत गाते समय, वाद्यों पर गति बजाते और नृत्य करते समय, गति बराबर रखनी पडती है; एक गीत गा कर	(१) पुलिसोंके पाँव – **समान अन्तर** से पडते हैं (२) घडी की 'टिक टिक' **समान अन्तर** से होती है। (३) अपने दिल की धडकन **समान अन्तर** से चलती है। (४) अपनी नाडी **समान अन्तर** से चलती है। (५) गीतों के शब्द **समान अन्तर** से सुनाई पडे।

विषय (तत्वसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह – लेखन
	विद्यार्थियों की समझ में आने योग्य लय के अनुसार, डग्गे पर ठेका भी देता जाऊंगा। यह गीत सुनते समय क्या बात झट से समझ में आयी ?	
(१) लय	इस लिये निश्चित समय के अनुसार, लगातार बराबर अन्तरवाली गति को (वेग को) लय कहते हैं। और यह भी बताऊंगा कि लय के मुख्य तीन प्रकार हैं (१) बिलंबित लय (२) मध्य लय (३) द्रुतलय। साथ ही प्रत्येक का अर्थ स्पष्ट करके बताऊंगा।	लय– निश्चित समयानुसार निरंतर बराबर अन्तरवाली गति को संगीत में 'लय' कहते हैं।
(२) विलंबित–लय	बिलकुल धीरे धीरे बजने वाली गति को संगीत में विलंबित लय कहते हैं।	विलंबित लय– आहिस्ता गति को 'विलंबित लय' कहते हैं।
(३) मध्य–लय	न बहुत जल्दी, न बहुत अहिस्ता, ऐसी गति 'मध्य लय' कहलाती है और जल्दी बजने वाली गति का 'द्रुत लय' नाम है।	मध्य लय– न बहुत आहिस्ता, न बहुत जल्दी, ऐसे गति को 'मध्य लय' कहते हैं।
(४) द्रुत–लय–		द्रुत लय– जल्द गति को 'द्रुत लय' कहते हैं।
(५) लयों में पारस्परिक सम्बन्ध	मध्य लय का आधा विलंबित लय और मध्य लय का दुगना 'द्रुत लय' होता है। विद्यार्थियों को तीनों लय का पूर्ण पहचान होने के लिये मैं तीनों लय में गीत की एक पंक्ति गाऊंगा और हर बार यह प्रश्न पूछूगा, मैं ने जो भी गाया वह कौन सी लय थी ? इस प्रकार लय के प्रकार समझा दूंगा। यह मैं बताऊंगा कि ऐसे ही गीत की हर पंक्ति, निश्चित समयानुसार लय में गानी पडती है। जिस प्रकार अनाज, साग सब्जियाँ, सोना चांदी तोलने के लिये भांति भांति के वजन और माप होते हैं, उसी प्रकार दोनो हाथों अथवा तबला की सहायता से या पखावज आदि वाद्यों की सहायता से, गीत के योग्य लय में एक निश्चित किया हुआ समय नापा जाता है, यह मैं बताऊंगा।	लय का एक दूसरे से सम्बन्ध :– विलंबित–लय मध्यलय द्रुत–लय ½ : १ : २
(६) ताल–	और बराबर गति वाली, निश्चित समय की नाप को संगीत में ताल कहते हैं; ताल की ऐसी करके समझाऊंगा और यह भी बताऊंगा कि ताल द्वारा संगीत में एकसूत्रपन आता है जिस से रंजकता पैदा होती है।	ताल– बराबर गति वाली, निश्चित समय की माप को ताल कहते हैं।
	घडी में होने वाली 'टिक टिक' की प्रत्येक आवाज कितने समय की होती है ?	

विषय (तत्वसहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह–लेखन
(७) मात्रा–	में बताऊंगा कि इतने समय में होने वाले एक सेकेन्ड के अन्तर को संगीत में एक 'मात्रा' कहते हैं। घडी की सुइयाँ फिरती हैं, उस का एक चक्कर पूर्ण हो जाने पर क्या होता है?	मात्रा– एक सेकेंड का समय संगीत में एक 'मात्रा' कहलाता है।
(८) आवर्तन–	जिस तरह घडी की सुई एक बार चक्कर लगाने के बाद, दूसरी बार, तीसरी बार अखंड घूमती रहती है, और अपना समय नापती रहती है, इसी प्रकार तालों की निश्चित मात्रा भी लगातार लय में घूम कर अपना चक्कर पूरा करती है। ऐसे चक्र गीत, वाद्य वादन अथवा नृत्य खतम होने तक बराबर चलते रहते हैं। मात्राओं के निश्चित किये हुये संपूर्ण चक्र को एक आवर्तन कहते हैं।	आवर्तन– निश्चित मात्राओं की एक संपूर्ण फेरी को एक आवर्तन कहते हैं।
(९) सम– (१०) काल–	प्रत्येक ताल की **पहली मात्रा** को 'सम' कहते हैं और ताल की लगभग बीच की मात्रा को 'काल' कहते हैं। हाथ से ताल देते समय, काल पर ताली न देकर, हाथ किनारे कर लेना पड़ता है।	सम– प्रत्येक ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं। काल– ताल की लगभग मध्यवर्ती मात्रा को 'काल' कहते हैं।
(११) ठेका	में यह समझाऊंगा कि ताल, हाथ से भी दिया जाता है परंतु जिस समय ताल तबला या पखावज पर बजाया जाता है, उस समय तबले आदि पर ताल के संपूर्ण आवर्तन को अक्षर में ताल का 'ठेका' कहते हैं।	ठेका– तबला अथवा पखावज आदि ताल वाद्यों पर बजाये जाने वाले ताल के संपूर्ण आवर्तन के अक्षरों को ताल का ठेका कहते है।
	कल्पना कीजिये कि एक आदमी की मूर्ति बनाई गई है, और जिस की मूर्ति बनाई गई है, वह भी पास ही खडा है। उन दोनों में क्या फर्क है? ऐसे ही ताल संगीत का 'प्राण' अथवा 'जीव' है। और विभिन्न तालों की अलग अलग लय से ही संगीत में सुगमता, सौंदर्य तथा माधुर्य आता है। में कहूँगा कि अलग अलग लय से अलग अलग रस और भावों का प्रदर्शन होता है। गाते वक्त, वाद्य बजाते समय अथवा नृत्य करते हुये मनोरंजन के लिये कब, कहाँ और कितना ठहरना चाहिये, शुरुवात और अंत कैसे करना चाहिये इत्यादि बातें ताल द्वारा ही समझी जा सकती	

विषय(तत्वसहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह – लेखन
	हैं। इस प्रकार उन्हे विश्वास दिला दूगाँ कि ताल संगीत का एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंग है।	**ताल की आवश्यकता**
उपसंहार–	आज हम न यह सीखा कि लय और ताल का क्या अर्थ है और संगीत में ताल की कितनी और आवश्यकता है।	(१) ताल के कारण संगीत में रंजकता तथा माधुर्य आता है।
आवृत्ति–	अच्छा अब बताइये (१) लय क्या है ? (२) लय के मुख्य प्रकार कितने और क्या क्या है ? (३) ताल क्या है ? (४) मात्रा किसे कहते हैं ? (५) आवर्तन के क्या अर्थ है ?(६)सम क्या होता है ? (७) ठेका किसे कहते हैं ? (८) यदि संगीत में ताल न होता तो क्या होता ?	(२) ताल के विभिन्न लयों द्वारा, अलग अलग रस तथा भाव दर्शाये जाते हैं। (३) ताल द्वारा यह समझ में आता है कि गाने, बजाने में कहाँ, कैसे और कितना रुकना चाहिये, आरंभ और अंत कैसे और कहाँ होना चाहिये।
गृहपाठ–	घर से 'संगीत में ताल की आवश्यकता' विषय पर अपने विचार लिख कर लाओ। प्रकृति के प्रत्येक कृति में 'लय' होती है, इस के कुछ उदाहरण लिख लाओ।	(४) ताल संगीत का प्राण है।
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ क्र. ३ के विषय में
विद्यार्थी शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में स्वर सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी समझाने के बाद, पाँचवी कक्षा अथवा संगीत शाला के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को सिखाने के लिये 'लय और ताल की आवश्यकता' का एक संगीत का दूसरा महत्वपुर्ण विषय लिया गया है। विद्यार्थियों ने बैन्ड के साथ होने वाली पुलिस परेड देखी है, घडी को सेकन्ड की सुई, मिनट की और घंटे की सूई से विद्यार्थी भली भांति परिचित हैं। अपना श्वासोच्छ्वास कैसे होता है यह भी वे जानते हैं। यह सब उनका पुर्वज्ञान मान कर विषय की प्रस्तावना के समय, पुर्वज्ञान पर तीन प्रश्न पूछे।

पहला प्रश्न :— बैन्ड के साथ होने वाली पुलिस परेड में क्या खास बात तुम्हे मालूम हुई ?

विद्यार्थियों की ओर से उत्तर मिला (१) सारे पुलिस के पाँव एक साथ पड रहे थे। (२) पुलिस के पाँव बैन्ड के ठेके पर पड रहे थे। उनके ये उत्तर मान्य करके मैं ने फिर पूछा "अपने श्वासोच्छ्वास में ऐसी क्या विशेष चीज तुम्हारे ध्यान में आई ?" उत्तर मिला कि "प्रत्येक सांस समान अन्तर से चलती हैं"। तत्पश्चात इसी उत्तर के आधार पर हेतु कथन में मैं ने कहा कि हमें आज यह देखना है कि "समान अन्तर से पडने वाले जिस ठेके का संगीत में इतना बडा महत्व है, संगीत की भाषा में उसे क्या कहते हैं ?

हेतु कथन में विद्यार्थियों को एकदम अपना विषय बता नहीं देना चाहिये। बाद को विषय प्रतिपादन में विद्यार्थियों से पूछा कि "एक पागल की चाल और अपनी चाल में क्या फर्क है ?" उत्तर मिला कि "पागल आदमी का पाँव टेढे और झोंका खाते चलते हैं और अपने पाँव

बराबर सीधे पडते हैं। इसके पश्चात उनके सामने घडी रखी गई। मैं ने शान्त रह कर विद्यार्थियों को ध्यान से टिक टिक सुनने को कहा और बाद में दस बार उसका अनुकरण करने की आज्ञा दी। एक दो विद्यार्थियों से यह प्रयोग करा लिया। इस का उद्देश यही था कि मुझे मालूम होना चाहिये कि क्या विद्यार्थी घडी के अनुसार बराबर लय में टिक टिक कर सकेंगे। एक विद्यार्थी ने पाँच, छः बार तो बराबर लय में टिक टिक कहा, किन्तु बाद लय कम ज्यादा होने लगी। इस लिये दूसरे विद्यार्थी से यह कर दिखाने को कहा गया। उस ने ठीक ठीक दस बार टिक टिक लयसहित कह कर दिखाया। मैं ने एक तीसरे लडके से पूछा कि पहले और दूसरे विद्यार्थी के कहने में क्या अन्तर है? उस ने जबाब दिया कि पहले के शब्द कभी आहिस्ते और कभी जल्दी आते थे और दूसरे के शब्द लगातार बराबर समय में पड रहे थे। इसपर मुझे अपने विषय के लिये थोडा इशारा मिला। यह जानकर मैं ने फिर कहा कि अब जरा अपने सीने की धडकन और नाडी का कम्पन, ये दोनो कैसे लगते हैं, देखो। लोगों ने देखकर बताया कि "एक के बाद दूसरी धडकन बराबर गति से पड रही है।"

फिर लय की पूरी और पक्की कल्पना देने के लिये मैं ने एक छोटा सा गीत गा कर सुनाया। उस समय हाथ में डग्गे पर ठेका देता जाता था। गीत सुना कर मैं ने पूछा "इसे सुनते वक्त क्या खास चीज तुम्हारे ध्यान में आई?" "आपके हाथ से दिये हुये ठेके हिसाब से ही गाने के शब्द आ रहे थे" एक ने उत्तर दिया। इस प्रकार प्रयोग के पश्चात

(१) पुलिसों के पाँव समान अन्तर से पडते हैं।
(२) घडी की टिक टिक समान अन्तर से सुनाई देती है।
(३) हृदय की धड़कन समान अन्तर से चल रही है।
(४) अपनी नाडी समान अन्तर से चल रही है।
(५) गीतों के शब्द समान अन्तर से सुनाई पडते हैं।

इस प्रकार तख्तासियाह पर लिखता गया। साथ ही हर एक के सामने समान अन्तर का शब्द जोर दे कर रखता गया। फिर मैं ने बताया कि इस समान अंतर वाली गति को संगीत में लय कहते हैं। गाने में, बजाने में अथवा नृत्य में लय का बड़ा महत्व है। इसके बाद मैं ने लय के तीनो प्रकार (विलंबित, मध्य और द्रुत) समझाया और क्रमशः इन तीनो लयों का ½ : १ : २ अनुपात होता है, यह भी बताया। तीनो लय भली भांति समझाने के लिये मैं ने एक गीत की एक पंक्ति विलंबित, मध्य और द्रुत लय में गा कर सुनाई; और उन से पूछा कि यह कौन कौन सी लय हैं। विद्यार्थियों के उत्तर ठीक ठीक आये। इस प्रकार लय का पाठ पूरा समझा दिया गया।

तत्पश्चात 'ताल' सिखाने के लिये मैं ने समझाया कि जिस तरह अनाज, साग, सब्जियाँ और सोने चांदी की तौल के लिये वज़न होते हैं उसी तरह चलती रहने वाली गति की निश्चित समय की नाप को ताल कहते हैं। ताल मात्रा द्वारा नापी जाती है, इस लिये मैं नें 'मात्रा' को घडी की टिक टिक से मिला कर यह बताया कि "प्रत्येक टिक एक सेकन्ड का होता है"। विद्यार्थियों की ओर से यह उत्तर आने पर मैं ने समझाया कि "एक सेकन्ड के समय को 'मात्रा' कहते हैं। फिर मेरे एक प्रश्न के उत्तर में विद्यार्थियों ने उत्तर दिया कि सेकन्ड सुई का घेरा ६० सेकन्ड का होता है और फिर वह काँटा १ से फिरता है। ऐसे ही, मिनट और घंटे की सुई क्रमशः ६० मिनट और एक घंटे में घेरे का चक्कर लगा कर फिर एक से शुरु होती है। इसी आधार मैं ने कहा कि 'मात्राओं' के एक चक्कर को आवर्तन कहते हैं। यह बता कर मैं ने समझाया कि निश्चित 'मात्रायें' समाप्त हो जाने पर फिर वह चक्कर एक से शुरु होता है, ऐसे प्रत्येक चक्कर को आवर्तन कहा जाता है।

प्रत्येक ताल में दो आवश्यक मात्रायें होती हैं। मैं ने बताया कि पहली मात्रा को 'सम' और साधारणतः मध्यवर्ती मात्रा को (अपवाद क्षम्य है) 'काल' कहते हैं। तबला आदि पर बजाने में संपूर्ण आवर्तन के अक्षरों को ताल का 'ठेका' कहते हैं यह बताया। यह प्रश्न पूछने पर "मनुष्य के पुतले और सदेह मनुष्य में क्या फर्क है?" जबाब मिला "सदेह शरीर में प्राण होता है"। मैं ने इस पर समझाया कि "ताल भी संगीत का प्राण है"। इस प्रकार उन की समझ में ताल का महत्व आ गया। ताल की बदौलत ही संगीत में सुगमता, माधुर्य तथा सौंदर्य आता है, तरह तरह के रसों की उत्पत्ति होती है। और यह भी बताया कि ताल से ही यह समझ में आ जाता है कि संगीत में रंजकता के हेतु कहाँ, कब और कैसे रुका जाय। इस प्रकार लय और ताल की आवश्यकता का विषय समझाने के बाद आवृत्ति के समय सिखलाये हुये विषय के अन्तर्गत ७,८ प्रश्न भी पूछे गये। इस से विश्वास हो गया कि विषय भली भांति समझ में आ गया है।

अन्त में गृहपाठ देते समय विद्यार्थियों की कल्पना और विचार-शक्ति पर जोर देते हुये और प्रश्नों के साथ "प्रकृति के प्रत्येक कृत्य में भी लय होती है, उदाहरण सहित लिख कर लाओ" इस का भी लिखित उत्तर मंगवाया। उद्देश यही था, कि मुझे पता चल जायेगा कि "छाती की धडकन, नाडी की कम्पन, दिन निकलना, रात होना आदि सारी बातें लय के अनुसार ही होती हैं, यह लड़के अच्छी तरह समझ गये हैं अथवा नहीं। निश्चित किये हुये समय के अंदर ही पाठ समाप्त कर दिया गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

पाठ का क्रमांक :- ४ था (दिनांक- माहे- सन १९) **समय ४५ मिनट.**

कक्षा ५ वीं तथा संगीत शाला का प्रथम वर्ष

विषय (उपविषय सहित) तबले के ठके के अक्षर पहचानना और त्रिताल का ठेका.

सामान :- तबला - डग्गा, पटरी, खडिया मिट्टी

पूर्व ज्ञान :- ताल हात से दिया जाता है और ताल के ठेके तबले पर और पखावज पर बजाये जाते हैं यह विद्यार्थी जानते हैं।

प्रस्तावना :- पिछले घंटे में हम ने यह सीखा कि ताल हाथ से दिया जाता है। उसी प्रकार, बाजों पर भी ताल के ठेके बजाये जाते हैं। जरा बताओ तो किन बाजों पर ठेके बजाये जाते हैं ? कोई भाषा सीखने के पहले क्या सीखना पडता है ?

हेतु कथन :- इसी तरह तबले का ठेका समझने के लिये, सब से पहले ठेके के अक्षर कैसे बजाये जाते हैं, यह देखना चाहिये।

विषय (तत्वसहित)	पद्धति - (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह-लेखन
प्रतिपादन :- १ स्पष्टीकरण:-	पहले पखावज (मृदंग) और तबला के विषय में थोडी बातें बता कर, आज कल तबला अधिक प्रचार में होने के कारण, उस के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष जानकारी, ठेके और उनके अक्षरों की पहचान नीचे लिखे ढंग से कर दूंगा।	पुडी - तबले और डग्गे के खोकले मुंह पर जो चमडा मढा रहता है उसे स्याही, चाट, गजरा, इत्यादि सब को पुडी कहते हैं। तबले की पुडी पर तीन स्थान १ चाट २ स्याही ३ मैदान
२ तबला -	खोखली लकडी के ऊपर चमडे की पुडी बिठाई रहती है, इसी को तबला कहते हैं।	
३ डग्गा -	तांबे, पीतल, या जर्मन सिलवर, धातु के पतरे से बनाया हुआ, खोखले के गोलाकार मुंह पर चमडे की पुडी मढी रहती है, इस भाग को डग्गा कहते हैं।	
४ चाट-	तबले की पुडी पर किनारे की गोल पट्टी चाट कहलाती है।	चाट - तबले की पुडी के किनारे गोल पट्टी को चाट कहते हैं।
५ स्याही-	तबले और डग्गे के बीचो बीच चमडे की पुडी पर बैठाये हुये गोलाकार भाग को स्याही कहते हैं।	स्याही - तबला और डग्गा की पुडी पर काले रंग का गोलाकार भाग स्याही कहलाता है।
६ मैदान -	चाट और स्याही के बीच के हिस्से को मैदान कहते हैं। इस प्रकार मैं उन्हे समझाऊंगा। इस के बाद ७,८ प्रच-	मैदान - चाट और स्याही के बीच के भाग को मैदान कहते हैं।

विषय (तत्वसहित)	पद्धति– (प्रश्नसहित)	तख्ता स्याह–लेखन
	लित ठेकों के अक्षरों की पहचाम निम्न लिखित ढंग से करा दूंगा। (अक्षर ज्ञान कराते समय उन के प्रयोग भी करके दिखाता जाऊंगा।)	
७ ना	यह अक्षर तबले की चाट पर (दाहिने हाथ से) अंगूठे की पास की उंगली से बजाया जाता है।	
८ धा	यह अक्षर तबले की चाट पर पहली उंगली से बजा कर, उसी समय डग्गे पर ताल खोखला पर के बीच की उंगली और अनामिका के मिले हुये आघात से बजाया जाता है। देखिये, इस तरह (प्रयोग)।	
९ धीं	यह अक्षर तबले की स्याही पर और डग्गे पर एक साथ मिला कर बजाने से निकलता है।	
१० 'तीं' अथवा' 'तू'–	ये अक्षर तबले की स्याही पर दाहिने हाथ की अगूंठे की नजदीक की पहली उंगली से खुली आवाज करके बजाया जाता है। देखिये, इस प्रकार (प्रयोग)–।	
११ कत् –	यह अक्षर दाहिने हाथ की तीनों उंगलियाँ (पहली, बीच की, और अनामिका) मिला कर, तबले की स्याही पर दबा कर आघात करने से बजता है।	
१२ त्रक –	क्रमानुसार, पहिली तथा बीच की उंगली से, एक के बाद दूसरी से तबले की स्याही पर बन्द आघात करके बजाया जाता है।	
१३ गे–	यह अक्षर केवल डग्गे पर तलुआ खोखला रख कर बीच की उंगली से खुली आवाज से निकलता है।	
१४ तिरिकट –	इस में पहलीं 'ति' का अक्षर बीच की उंगली और अनामिका मिला कर तबले की स्याही पर बन्द आवाज से बजाते हैं। बाद में केवल पहली उंगली से तबले की स्याही पर आघात करके बन्द आवाज करने से 'रि' बजती हैं। डग्गे पर बायें हाथ से सारी उंगलियाँ मिला कर, बन्द आवाज में थाप देकर 'कि' बजाते हैं और 'ट' का अक्षर पुनः दाहिने हाथ की बीच की उंगली से	

विषय (तत्वसहित)	पद्धति–(प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह –लेखन
	तबले की स्याही पर बन्द आवाज में बजाने से निकलता है। इस प्रकार 'तिरिकट' का बोल बजाते हैं, यह मैं समझा कर बताऊँगा। तत्पश्चात मैं यह बताऊँगा कि त्रिताल में १६ मात्रायें होती हैं। तख्तासियाह पर बराबर अन्तर से १६ तक अंक लिखूंगा। अपने व्यवहार की सुविधा के लिये, जिस प्रकार रात और दिन दो विभाग किये गये हैं, और फिर दिन के चार पहर और रात के चार पहरों का बराबर विभाजन किया गया है इसी भांति ठेके के भाग किये जाते हैं; संगीत में	
१५ खंड –	इन भागों को खण्ड कहते हैं, यह मैं बताऊँगा। फिर यह बताकर कि त्रिताल के ऐसे ही चार खण्ड हैं। प्रत्येक चार मात्रा का खण्ड किया जाता है; तख्ता स्याह पर १६ मात्राओं का खडी लकीरों द्वारा चार खण्ड करके, हर मात्रा के नीचे ठेके के अक्षर लिख कर, मैं सारे ठेके लय में बोल कर दिखाऊँगा और बाद में विद्यार्थियों से भी कहला लूंगा। इस के बाद मुंह से ठेके बोल कर, हाथ से ताल दे कर दिखलाऊँगा और फिर विद्यार्थियों से भी ताल देने को कहूँगा। तत्पश्चात, तख्तास्याह पर लिखे हुये ठेके को विद्यार्थियों को थोडी देर मनन करने को कहूँगा।	ताल – त्रिताल (देखें नीचे की तालिका)
१६ हेतु–प्रश्न –	(१) इस ताल में सब मिला कर कितनी तालियाँ हैं? (२) इस ताल की किस मात्रे पर खाली है? (३) सम का नाधींधींना हो जाने पर, खाली कब आती है? (४) 'खाली' (अर्थात, नातींतींना) हो जाने पर 'सम' कब आता है? (५) 'खाली' के बाद फिर कब 'खाली' आती है? (६) सम आ जाने के बाद फिर कब 'सम' आता है? इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों से कहला लूंगा। इस के बाद त्रिताल के प्रत्येक खण्ड की (नाधीं धींना इत्यादि) ४–४ अक्षर तबले पर सफाई से बजा कर "ये कौन से अक्षर बजे?" इस सवाल का जवाब निकाल लूंगा। फिर सम्पूर्ण ठेका बजा कर उन से 'सम' और 'काल' पहचानने के लिये कहूँगा। इस तरह मैं ठीक ठीक समझ जाऊँगा कि विद्यार्थियों की समझमें ठेका अच्छी तरह आया है अथवा नहीं।	

ताल – त्रिताल

मात्रा	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२	१३ १४ १५ १६
ठेका	ना धीं धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना
चिन्ह	×	२	०	३
चिन्हका अर्थ	सम	ताली	काल	ताली.

विषय (तत्वसहित)	पद्धति (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह–लेखन
१७ उपसंहार –	इस प्रकार आज हम ने यह सीखा कि तबले के अक्षर की पहचान कैसे की जाती है, त्रिताल का ठेका कैसे बजाया जाता है, उसके 'सम' और 'खाली' की पहचान कैसे की जाती है। दूसरे घंटे में मैं आज कल के चार प्रचलित तालों के ठेके के विषय में बताऊँगा।	
१८ आवृत्ति –	अब मैं तबले के कुछ ऐसे ठेके बजाता हूँ जो मैं ने तुम्हे सिखाये हैं। एक एक करके आप लोग बताइये कि वे अक्षर कौन कौन से हैं। बाद में मैं त्रिताल बजाता हूं, लेकिन उस में यह बताइये कि शुरू की मात्रा और 'सम' कहाँ है। शुरुआत में किसी भी खण्ड के प्रथम मात्रे से करूंगा।	
१९ गृहपाठ –	लिख कर लाइये कि त्रिताल के ठेके के अक्षर तबले और डग्गे पर कहाँ और कैसे बजाये जाते हैं।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. ४ का स्पष्टीकरण

विद्यार्थी और शिक्षकों के लिये

पिछले पाठ में लय, ताल और संगीत में ताल की आवश्यकता संबंधी चर्चा करने के बाद आज ताल के ठेकों का अक्षर ज्ञान और त्रिताल का ठेका समझाने का विषय लिया गया। ताल हाथ से दिया जाता है और ताल के ठेके तबले या मृदंग पर बजाये जाते हैं यह विद्यार्थी जानते हैं। यह उनका पूर्व ज्ञान मान कर, इस पर प्रस्तावना करते समय जो प्रश्न पूछे गये, उस का उत्तर यह आया, कि ताल के ठेके तबले अथवा मृदंग पर बजाये जाते हैं। दूसरा सवाल था, कि 'कोई भाषा सीखते समय प्रथम क्या सीखना पड़ता है ?' उत्तर मिला " उस भाषा के अक्षरों की पहचान और शब्द पहले समझने पड़ते हैं। हेतु कथन में इसी का आधार ले कर मैं ने बताया कि तबले के ठेके सम–झने के लिये, आज हमें यह देखना है, कि तबले के ठेके के अक्षर आदि बजाये कैसे जाते हैं। बाद में तबले और पखावज की जानकारी देते हुये मैं ने कहा कि :—

पखावज एक अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। यह (अंडे की आकारवाली) एक खोखली लकडी के दोनों तरफ मुंह पर चमडे की पुडी, चमडे की रस्सी द्वारा खूब कस कर बैठाई जाती है। एक पुडी छोटी और दूसरी बडी होती है। बडी पुडी को 'धुम' कहते है और उस पर स्याही के बदले गीला आटा लगाया जाता है। पखावज का उपयोग अधिक तर भजन और ध्रुपद गायकी के लिये किया जाता है। उस के पश्चात मुसलमानों के शासन काल में ख़याल गायकी का साथ देने के लिये तबले का अविष्कार हुआ। इस में तबला और डग्गा दो भाग होते हैं। तबले में खोखली लकडी के टुकडे से बना कर मुंह पर चमडे की पुडी लगाते हैं। चमडे की पट्टी और लकडी के गट्टे लगा कर कस दिया जाता है। डग्गा अधिकतर तांबे, पीतल या जर्मन सिलवर के पतरे का खोखला गोलाकार होता है। तबले की तरह इस के मुंह पर भी चमडे की पुडी बैठाई जाती

है। तबला और मृदंग के बोल में बड़ा अंतर होता है। इस के पश्चात मैं ने यह समझाया कि चाट, स्याही और मैदान क्या होता है, और प्रत्यक्ष दिखला भी दिया। तत्पश्चात साधारण प्रचार में त्रिताल, एकताल, दादरा, झपताल और रूपक ठेके में आनेवाले अक्षरों की पहचान प्रत्यक्ष प्रयोग की सहायता से करा दी, और फिर सिखाने के लिये त्रिताल का ठेका लिया। पहले यह बता कर, कि त्रिताल में १६ मात्रायें होती हैं, तख्तास्याह पर भी लिखता लिखता गया। फिर खंड की कल्पना देने के लिये उदाहरणार्थ मैं ने यह बताया कि २४ घंटे के रात और दिन दो विभाग किये गये हैं और फिर दिवस के चार पहर और रात के चार पहरों के समान विभाग किये गये हैं। इसी तरह ठेके में किये हुये विभागों को खंड कहते हैं। अक्षर लिख कर मैं ने दिखाया, और खड़ी रेखाओं द्वारा १६ मात्राओं के चार खंड किये गये। प्रत्येक मात्रा के नीचे ठेके के अक्षर लिखे गये। उस के नीचे (×,) सम की ताली, ५ वीं मात्रा की दूसरी ताली और १३ वीं मात्रा की तीसरी ताली और ९ वीं मात्रापर (O) खाली का चिन्ह दिया गया है। बाद में मैं ने मात्रा और ठेका मुह से बजा कर, हाथ से ताल दे कर दिखलाया और विद्यार्थियों से भी यही करा लिया। हेतु प्रश्न पूछने के लिये १ मिनट मैं ने ठेका मनन करने की आज्ञा दी और फिर ५, ६ हेतु प्रश्न पूछे। पहले प्रश्न का उत्तर आया "त्रिताल में तीन तालियां आती है।" दूसरे का जवाब आया " त्रिताल में 'खाली' ९ मात्रा पर आती है।" तीसरा जवाब मिला "सम का ना धीं धीं ना हो जानेपर ५ वीं मात्रा के दूसरे ना धीं धीं ना के बाद 'खाली' (ना तीं तीं ना) आता है"। चौथे प्रश्न के उत्तर में "खाली के बाद तिसरे ना धीं धीं ना (अर्थात १३ वीं मात्रा का खंड) के पश्चात 'सम' आता आता है" जवाब मिला। पाचवाँ उत्तर था " खाली के बाद तीन बार ना धीं धीं ना बजेगा और फिर 'खाली' आयेगी"। और छठवें सवाल का जवाब आया " सम के बाद एक पाचवीं मात्रा का ना धीं धीं ना बाद में खाली (ना तीं तीं ना) फिर १३ वीं मात्रा की ताली का ना धीं धीं ना बजने के बाद 'सम' आयेगा"। तत्पश्चात इस ठेके के प्रत्येक खंड के चार चार अक्षर तबले पर स्पष्ट बजा कर यह देखा कि विद्यार्थी ये अक्षर पहचान सके या नहीं। उन का उत्तर ठीक आया। फिर यह समाधान करने के लिये कि जो ठेका बजाया गया, विद्यार्थियों की समझ में भली भांति आ गया या नहीं इस लिये मैं ने उन्हें ' सम ' और ' खाली ' पहचानने के लिये कहा। अंत में उपसंहार के बाद आवृत्ती के समय यह समझने के लिये कि शुरु के तबले के बोल विद्यार्थी पहचानते हैं अथवा नहीं, क्रम छोड कर यही वे अक्षर बजाते गये, और यह पूछते रहे कि " ये कौन से बोल हैं ?"। त्रिताल दुहराने के लिये, प्रथम ' सम ' से संपूर्ण ठेका बजा कर, फिर ५ वीं मात्रा से शुरु करके पूरा आवर्तन बजाया और पूछा कि " मैं ने किस मात्रा से बजाना शुरु किया ? जवाब में एक ना धीं धीं ना हो जानेपर खाली के अक्षर ना तीं तीं ना बजाया, इस लिये हम ने पहचान लिया की आप ने ५ वीं मात्रा से बजाना शुरु किया" यह ठीक उत्तर विद्यार्थियों ने दिया। ऐसे ही दो तीन तरह से बजाने के बाद " सम कहाँ है ? खाली कहाँ है ?" इत्यादि प्रश्न पूछे। समाधानकारक उत्तर प्राप्त हुये। फिर गृहपाठ में मैं ने उन से त्रिताल में आने वाले बोल तबले और डग्गे पर कहाँ बजाते हैं, यह लिख लाने को कहा। पाठ समय के अंदर समाप्त हो गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ६ वाँ

पाठ का क्रमांक :– ५ वाँ (दिनांक– माह– सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा ५ वीं तथा संगीत शाला का प्रथम वर्ष **विषय–** (उप विषय सहित) ताल सहित स्वरालंकार, व दादरा ताल का ठेका और प्रारम्भिक स्वर लेखन.

सामान :– तबला, डग्गा, हार्मोनियम (या तानपूरा) पटरी

पूर्वज्ञान :– तबले के ठेके का अक्षर ज्ञान, त्रिताल का ठेका खण्ड–सम-काल–इत्यादि की जानकारी, और स्वरालंकार के क्या अर्थ हैं यह विद्यार्थियों को मालूम है।

प्रस्तावना :– पिछले घंटे में हम लोगों ने त्रिताल का ठेका सीखा। त्रिताल में कितनी मात्रायें होती हे ? उस में तालियाँ कितनी हैं ? खाली किस मात्रा पर है ? स्वरालंकार भी हम ने सीखा लिया है। स्वरालंकार किसे कहते हैं ?

हेतु कथन :– त्रिताल की तरह आज हम एक और नवीन ठेका सीखना है। आज के नये ठेके और त्रिताल के ठेके पर स्वरालंकार किस तरह गाया जाय यह भी हमे देखना है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्नसहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन–	प्रथम विद्यार्थियों के हाथ से त्रिताल का ठेका दिलवाऊँगा, बाद में स्वरालंकारों में पहला स्वरालंकार पाटी पर लिखूंगा। सब मिला कर ये कितने स्वर हैं ? यह प्रश्न पूछूंगा। उत्तर आने पर यह कहूँगा कि ये स्वर, आओ हम लोग, त्रिताल में एक मात्रा में एक के हिसाब से गायें। और उसे पाटी पर लिखने के पहले स्वर लेखन का मतलब क्या है, यह समझा दूंगा।	गीतों की चाल का वर्णन, अक्षर-स्वर व ताल की मात्रा की सहायता से करने को स्वर लेखन कहते हैं।
१ स्वर-लेखन–	अक्षर, स्वर और ताल की मात्रा की सहायता से, गीतों की चाल का वर्णन (लेखन) करने को स्वर लेखन कहते हैं। इस प्रकार इतर लेखन की व्याख्या समझा दूंगा। अभी हम केवल स्वरालंकार का ही स्वर लेखन करेंगे। आगे चल कर भिन्न भिन्न रागों के गीत सीखने के बाद उन की चालों का स्वर लेखन करेंगे, यह बताऊँगा। और अब पाटी पर त्रिताल की १६ मात्रायें और ठेका लिख कर, प्रत्येक मात्रा के नीचे एक एक स्वर क्रमश: लिखूंगा।	

विषय (अर्थसहित)	पद्धति – (प्रश्नसहित)	तख्ता स्याह(पाटी)लेखन
२ शिक्षकों के गायन-(स्वरालंकार १ला) ३ ताल–दादरा–	तत्पश्चात १६ मात्राओं में १६ स्वर हार्मोनियम (अथवा तानपूरा) पर गा कर दिखाऊँगा, और विद्यार्थियों से हाथों से ताल दिलवा लूंगा, और उसी समय मुंह से अलंकार गा कर दिखाऊँगा– पाटी पर लिखा हुआ सब मिटा दूंगा। और 'दादरा' ताल का ठेका मात्रा–खण्ड, और चिन्ह सहित तख्ता स्याह पर लिखूं–गा। पाटी पर लिखा हुआ ठेका विद्यार्थियों को मन ही मन पढने के लिये कहूंगा, और एक मिनट के बाद नीचे लिखे हुये प्रश्न पूछूंगा।	**स्वरालंकार १ ला** सा रे ग म प ध नी सां सां नी ध प म ग रे सा.
४ हेतुप्रश्न–	(१) इस ताल का क्या नाम लिखा गया है ? (२) यह कितनी मात्रा का ताल है ? (३) कितने विभाग किये गये हैं ? (४) एक एक खण्ड कितनी मात्रा का है ? (५) किस मात्रे पर खाली है ? 'अब में जो करता हूं ध्यान से देखो' यह सूचना देकर में 'दादरा' ताल बजा कर दिखलाऊँगा। और विद्यार्थियों से भी हाथ से ताल दिलवा कर, मुंह से कहला लूंगा। फिर तबले पर 'धाधीना धातूना ' इन में से एक एक अक्षर अलग अलग बजा कर यह कौन सा अक्षर है ? इस तरह ६ बार पूछूंगा, फिर सारा ठेका विलंबित लय में बजा कर पूछूंगा, कि सम किस जगह और खाली कहां है ? बाद में वही ठेका मध्य लय तथा द्रुत लय में बजा कर, इस में भी सम और खाली की पहचान पूछूंगा। इस प्रकार यह समाधान हो जायेगा कि विद्यार्थियों को तीनों लयों के ठेके समझ में आ गया हैं। इस तरह यह समाधान हो जायेगा कि विद्यार्थियों को तानो लयों के ठेके समझ में आ गये हैं। ठेका इस तरह समझ जाने पर इसी ताल में दूसरा अलंकार तख्तास्याह पर लिखूंगा।	
५ अवग्रह चिन्ह	प्रत्येक दो स्वरों के बाद लिखे हुये चिन्ह (ऽ) अवग्रह चिन्ह कहलाते हैं, यह बता कर यह कहूंगा कि जिन स्वरों के आगे यह ऽ चिन्ह होते हैं उन स्वरों को (अथवा अक्षर) एक मात्रा दीर्घ कहना चाहिये। फिर यह प्रश्न पूछूंगा कि यह	

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ठेका:	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
	सा	रे	ग	म	प	ध	नी	सां	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	सा
	×				२				०				३			
	सम				टाली				काल				टाली.			

ताल–दादरा, मात्रा ६

मात्रा–	१ २ ३	४ ५ ६
ठेका–	धा धी ना	धा तू ना
खुणा–	×	०
चिन्ह का अर्थ	सम	काल.

विषय (अर्थसहित)	पद्धति (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह(पाटी)लेखन

दो स्वरों का गट कितनी मात्रा में गाना चाहिये ? और उस के पश्चात काली पाटी पर इस अलंकार का स्वर लेखन कर के दिखाऊँगा। तत्पश्चात में खुद ताल सहित अलंकार गा कर दिखाऊँगा। फिर मैं अपना अनुकरण करने के लिये कहूँगा। इसी ताल में तीसरा अलंकार कैसे गाया जा सकता है यह सिखाने के लिये (तख्तास्याह पोंछ कर) तीसरा अलंकार उस पर लिखूंगा। एक मिनट मन में पढने के लिये कह कर नीचे लिखे प्रश्न पूछूंगा।

६ स्वरालंकार दूसरा

७ स्वरालंकार तिसरा

(१) इस अलंकार में कितने कितने स्वरों का एक एक गुट है ? (२) यह अलंकार अगर दादरा ताल में गाना हो तो एक एक आवर्तन में कितने कितने स्वर आयेंगे ? (३) पिछले अलंकार और इस में, गाने में, क्या फर्क करना पडेगा ?

इस अलंकार का स्वर लेखन भी तख्तास्याह पर कर दिखाऊँगा। मैं पहले ताल सहित यह अलंकार गा कर दिखाऊँगा, फिर विद्यार्थियों की ओर से ताल सहित गवा लूंगा (पाटी लेखन पोंछ डालूंगा)।

८ उपसंहार

आज हम लोगों ने इस प्रकार तीन अलंकार ताल सहित तथा दादरा ताल का ठेका सीख लिया।

९ आवृत्ति –

अच्छा बताइये तो– (१) दादरा ताल में कितनी मात्रायें होती हैं ?

(२) उस में तालियां कितनी है ?

(३) खाली किस मात्रा पर है ?

(४) दादरा ताल का ठेका क्या है ?

(५) स्वर लेखन का क्या अर्थ है ?

(६) ये तीनों अलंकार गाते समय मात्रा और स्वर का सम्बन्ध क्या है ?

स्वरालंकार दूसरा

साऽगऽ रेमऽ गपऽ मधऽ पनीऽ धसांऽ
सांधऽ नीपऽ धमऽ पगऽ मरेऽ गसाऽ

१	२	३	४	५	६
धा	धी	ना	धा	तू	ना
×			०		
सा	ग	ऽ	रे	म	ऽ
ग	प	ऽ	म	ध	ऽ
प	नी	ऽ	ध	सां	ऽ
सां	ध	ऽ	नी	प	ऽ
ध	म	ऽ	प	ग	ऽ
म	रे	ऽ	ग	सा	ऽ

स्वरालंकार तिसरा

सारेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसां
सांनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेसा.

१	२	३	४	५	६
धा	धी	ना	धा	तू	ना
×			०		
सा	रे	ग	रे	ग	म
ग	म	प	म	प	ध
प	ध	नी	ध	नी	सां
सां	नी	ध	नी	ध	प
ध	प	म	प	म	ग
म	ग	रे	ग	रे	सा

विषय (अर्थसहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह(पाटी)लेखन
	(७) दादरा ताल में ही, दो अलग अलग अलंकार करते समय क्या फर्क करना पडा ? (८) यह फर्क क्यों करना पडा ?	
१० गायन –	ऊपर के तीनों अलंकार (क्रमश: एक के बाद दूसरा) विद्यार्थियों से ताल देकर गवा लूँगा।	
११ गृहपाठ –	आज हम ने जो सीखे उन तीनों अलंकारों को पर से ताल सहित याद करके आइये। और प्रत्येक अलं– कार उन तालों में जिस प्रकार गाया जाता है, उन के स्वर लेखन कर के लाइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. ५ के विषय में
विद्यार्थी शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में तालों के ठेकों का अक्षर ज्ञान और त्रिताल का ठेका समझाने के बाद आज दादरा ताल ठेका तथा दादरा और त्रिताल तालों के तीन स्वरा– लंकार कैसे गाये जाये यह विषय लिया गया है।

स्वरालंकार क्या है, मात्रा, खंड, सम, खाली के क्या मतलब हैं, ठेके के अक्षर ज्ञान, तथा त्रिताल का ठेका विद्यार्थियों को मालूम हैं, यह उन का पूर्व ज्ञान मान कर, प्रस्तावना करते समय त्रिताल की सारी जानकारी और स्वरालंकार क्या है इत्यादि प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लिये हैं। हेतु कथन में त्रिताल की तरह और एक नया ठेका हमें सीखना है, और इन दोनों तालों में हमें यह देखना है कि स्वरालंकार किस प्रकार गाना चाहिये। यह सब कहने के पश्चात विषय प्रति– पादन का आरम्भ किया गया है।

पहले विद्यार्थियों से त्रिताल का ताल दिलवाया, बाद में पहला अलंकार तख्तास्याह पर लिखा, और प्रश्न किया कि ये कुल स्वर कितने हैं? उस का उत्तर आया कि १६ स्वर हैं। त्रिताल की मात्रायें भी १६ और ये स्वर भी १६ हैं; अर्थात एक मात्रे में एक स्वर, यानी १६ स्वर गाये जायें, यह कह कर १६ मात्रायें, और प्रत्येक मात्रा के नीचे एक एक स्वर क्रमानुसार लिख कर दिखा दिया। और बताया कि इस प्रकार मात्रा, स्वर और गीत के शब्दों का संयोग मिलाकर लिखने को स्वर लेखन पद्धति कहलाती है। उसी के अनुसार में ने १६ स्वरों को १६ मात्रा में गा कर सुनाया। मैं गाते हुये स्वयं दाहिने हाथ से हार्मोनियम पर स्वर बजा रहा था और उसी के साथ साथ बायें हाथ से ताल भी देता जा रहा था। संगीत शाला में विद्यार्थियों के हाथ में तानपूरा था और मैं खुद ठेका लगा रहा था। अपने पश्चात विद्यार्थियों की ओर से में ने ताल सहित वह अलंकार गवा लिया। फिर जो कुछ पाटी पर लिखा था, पोंछ डाला; और दादरा ताल का ठेका, मात्रा, विभाग और चिन्ह लिख दिया गया। ध्यानपूर्वक एक मिनट, उसे देखने को कह कर उस पर ३, ४ प्रश्न पूछे। जबाब ठीक ठीक आने के बाद में ने हाथ से दादरा ताल दे कर दिखाया, और विद्यार्थियों से भी उसी प्रकार दिलवा लिया तथा मुह से ठेके बोल कहलवा लिये। तत्पश्चात तबले पर स्वतंत्र रूप से 'धा धी ना धा

तू ना' के बोल एक एक कर के बजाता गया, और पूछता भी गया कि यह कौन सा अक्षर है। उत्तर ठीक आया। फिर सम्पूर्ण ठेका मैं ने विलंबित, मध्य तथा द्रुत लय में बजाया, और सम खाली आदि के विषय में प्रश्न पूछ कर अच्छी तरह जान लिया कि विद्यार्थी इसे भली भांति समझ गये हैं। फिर मैं ने वह स्वरालंकार लिख कर दिखाया जो इस ताल मे गाना था। इस अलंकार में प्रत्येक दो स्वरों का गुट, ३ मात्राओं के एक एक विभाग में होने के कारण, सा ग ऽ, रे म ऽ, आदि के अनुसार अवग्रह चिन्ह भी लिखता गया और फौरन बतलाया कि 'ऽ' चिन्ह को अवग्रह चिन्ह कहते हैं। यह भी समझा दिया कि जिन स्वरों के सामने यह चिन्ह होता है उसे एक मात्रा लम्बा कर के कहना चाहिये। मैं ने फिर पूछा कि दो स्वरों का यह प्रत्येक गुट गाने से कितनी मात्रा में गाने का अर्थ होता है? जबाब मिला कि दो स्वरों का एक एक गुट गाने से ३ मात्रा का अर्थ होता है। इसी के अनुसार मैं ने इस का स्वर लेखन कर दिखाया। मैं ने खुद भी वह अलंकार गाया और विद्यार्थियों से भी अनु-करण करने को कहा। जो कुछ लिखा था, फिर मिटा दिया। फिर दादरा ताल में तीसरा अलंकार कैसे गाया जायगा यह सिखाने के लिये, मैं ने तीसरा अलंकार पाटी पर लिखा; मन में एक मिनट विचार पूर्वक पढने को कह कर तीन सवाल पूछे। उन के भी जबाब ठीक मिलने पर तीसरे अलंकार के स्वर लिख कर दिखाये। फिर मैं ने उसे ताल में गाया और विद्यार्थियों से गाने को कहा। दुहराने के पहले, जो कुछ लिखा था मिटा दिया, और आठ प्रश्न पूछे। उत्तर ठीक मिलने पर फिर क्रमशः तीनों अलंकार ताल सहित याद कर लाने को कहा, साथ ही तीनों अलंकारों का स्वर लेखन भी घर से कर लाने को कहा। उद्देश यह था, कि विद्यार्थियों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, कि ताल, तालों के ठेके तथा स्वरालंकार ताल सहित कैसे गाना चाहिये।

इस प्रकार निश्चित समय के अन्दर पाठ समाप्त कर दिया गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ७ वाँ

पाठ का क्रमांक :– ६ वाँ (दिनांक– माहे– सन १९) **समय** ४० मिनट

कक्षा ५वी और संगीत शाला का प्रथम वर्ष

सामान :– तबला, डग्गा, हार्मोनियम (अथवा तानपूरा), पटरी

विषय (उप विषय सहित):– झपताल व रूपक (मात्रा ७) के ठेके और इन तालों के स्वरालंकार

पूर्वज्ञान :– त्रिताल, दादरा ताल के ठेके और इन तालों के स्वरालंकार कैसे गाते हैं और उनके स्वर लेखन किस प्रकार किये जाते है, यह विद्यार्थियों को मालूम है।

प्रस्तावना :– हम ने पिछले घंटे में कौन कौन से ठेके सीखे? त्रिताल, की कितने मात्रायें हैं? दादरा ताल में कितनी मात्रायें होती हैं? दादरा ताल का ठेका क्या है? उन में तालियाँ कितनी है? खाली किस मात्रे पर है? त्रिताल में हम ने अलंकार कौन से सीखे? हमने दादरा ताल में कौन सा अलंकार गाया था?

हेतु कथन :– आज और दो नये तालों के ठेके और उन तालों में अलग अलग स्वरालंकार किस प्रकार गाये जायंगे यह हमें देखना है।

विषय (तत्व सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन – (१) ताल झपताल –	पहले तख्ता स्याह पर झपाताल का ठेका, मात्रा, खण्ड, चिन्हों के सहित लिखूगा, और उस पर एक मिनट ध्यान देने के लिये कह कर, नीचे लिये प्रश्न पूछंगा	(see table below)
(२) हेतु प्रश्न –	(१) इस नये ठेके का नाम क्या है? (२) इस ताल में कितनी मात्रायें हैं? (३) कितने खण्ड किये गये हैं? (४) एक एक खण्ड कितनी कितनी मात्रा का है? (५) इस में तालियाँ कितनी हैं? (६) खाली किस मात्रा पर है? बाद में मैं विद्यार्थियों से मेरी ओर ध्यान देने के लिये कह कर, हाथ से झपताल की ताल देकर दिखाऊंगा और विद्यार्थियों से भी हाथ से ताल दिलवा कर मुंह से बोल कहलवा लूंगा।	

ताल – झपताल

मात्रा	१ २	३ ४ ५	६ ७	८ ९ १०
ठेका	धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना
चिन्ह	×	–	०	–
चिन्हों का खुलासा	सम	ताली	खाली	ताली

विषय (तत्व सहित)	पद्धति–(प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन

उसके बाद ठेके बोल एक एक सफाई से तबले पर बजा कर पूछूंगा कि मैं ने कौन से अक्षर बजाये। बाद में विलंबित लय में सम्पूर्ण ठेका बजा कर उन से 'सम' और 'खाली' की जगह पहचानने को कहूंगा। वही ठेका मध्य तथा द्रुत लय में बजा कर विद्यार्थियों से ही 'सम' और 'खाली' की पहचान करा लूंगा। तत्पश्चात इस ताल का अलंकार पाटी पर लिख कर नीचे लिखे सवाल पूछूंगा :–

(३) अलंकार चौथा

(१) इस अलंकार में कितने कितने स्वरों का गुट बनाया गया है ? (२) पाटी पर मैं ने कितने स्वरों के बाद स्वल्पविराम किया है ? (३) यह अलंकार झपताल में गाते हुये सम्पूर्ण आवर्तन में कितने स्वरों के कितने समूह (गुट) गाने पडेंगे। इस प्रश्न का जबाब मिलने पर पाटी पर उनका स्वर लेखन करूँगा। फिर मैं वह अलंकार सताल गा कर दिखाऊँ-गा। और मेरे बाद विद्यार्थियों को भी गाने के लिये कहूँगा। पाटी पर लिखा हुआ सब मिटाकर इसी ताल में दूसरा अलंकार लिखूंगा। और इस ताल में पहले वाले अलकार और इस अलंकार में स्वरों के गुट में क्या अन्तर है ?" ऐसा सवाल पूछूंगा। फिर इसका स्वर लेखन करके मैं स्वयं वह अलंकार सताल गा कर दिखाऊँ गा, तत्पश्चात विद्यार्थियों से भी गाने को कहूंगा। फिर सारा लिखा हुआ मिटा कर ७ मात्राओं वाला रूपक ताल का ठेका पाटी पर लिख दूंगा। थोडी देर ध्यान

(४) अलंकार ५ वा.

अलंकार चौथा

सारे सारेग, रेग रेगम, गम गमप, मप मपध, पध पधनी, धनी धनीसां,
सांनी सानीध, नीध नीधप, धप धपम, पम पमग, मग मगरे, गरे गरेसा.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
सा	रे	सा	रे	ग	रे	ग	रे	ग	म
ग	म	ग	म	प	म	प	म	प	ध
प	ध	प	ध	नी	ध	नी	ध	नी	सां
सां	नी	सां	नी	धा	नी	ध	नी	ध	प
ध	प	ध	प	म	प	म	प	म	ग
म	ग	म	ग	रे	ग	रे	ग	रे	सा

विषय (तत्वसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन

(५) ताल–रूपक (मात्रा ७)

देने के बाद इस के सम्बन्ध में प्रश्न पूछूंगा।

(१) इन नवीन ठेके का क्या नाम लिखा गया है? (२) यह कितनी मात्राओं वाला ताल है? (३) कितने विभाग किये गये हैं? (४) एक एक विभाग कितनी मात्राओं का है? (५) इस में तालियाँ कितनी हैं? (६) तालियां किस किस मात्रे पर हैं? (७) खाली किस मात्रे पर हैं? इन प्रश्नों के उत्तर मिलने के बाद में उन से कहूंगा कि वे मेरी तरफ ध्यान दें। मैं उन्हें हाथ से रूपक का ताल दे कर दिखाऊँगा। फिर विद्यार्थियों से ताल हाथ से और बोल मुंह से देने को कहूँगा। बाद में ठेके के अक्षरों में एक एक तबले पर बजाऊँगा और पूछूँगा कि ये कौनसे अक्षर हैं? इस तरह इस प्रश्न का जवाब निकाल लूंगा और यह समझा दूंगा कि यह ही ठेका एक ऐसा है जिस में सम पर ध अथवा धी के बजाय ती का अक्षर आता है। फिर सम्पूर्ण ठेका विलंबित लय में बजा कर सम और खाली पहचानने को कहूंगा। वही ठेका क्रमशः मध्य और द्रुत लय में बजाऊँ गा और फिर उसी प्रकार उन से सम और खाली की पहचान करा लूंगा। इस के बाद इस ताल का अलंकार पाटी पर लिखूंगा। लिखते समय तीन स्वरों का एक गुट (समूह) और दो दो स्वरों के दो गुट, फिर स्वल्प विराम कर के सारा अलंकार लिखूंगा; और उस अलंकार को ध्यानपूर्वक एक

अलंकार ५ वा

सारेगमगरेसारेगम, रेगमपमगरेगमप,
गमपधपमगमपध, मपधनीधपमपधनी,
पधनीसानीधपधनीसां,
सांनीधपधनीसांनीधप, नीधपमपधनीधपम,
धपमगमपधपमग, पमगरेगमपमगरे,
मगरेसारेगमगरेसा.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
सा	रे	ग	म	ग	रे	सा	रे	ग	म
रे	ग	म	प	म	ग	रे	ग	म	प
ग	म	प	ध	प	म	ग	म	प	ध
म	प	ध	नी	ध	प	म	प	ध	नी
प	ध	नी	सां	नी	ध	प	ध	नी	सां
सां	नी	ध	प	ध	नी	सां	नी	ध	प
नी	ध	प	म	प	ध	नी	ध	प	म
ध	प	म	ग	म	प	ध	प	म	ग
प	म	ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे
म	ग	रे	सा	रे	ग	म	ग	रे	सा

ताल–रूपक (मात्रा ७)

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७
ठेका	तीं	तीं	ना	धी	ना	धी	ना
चिन्ह	×			०		–	
चिन्हों का खुलासा	सम			खाली		ताली	

विषय (तत्वसहित)	पद्धति (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
	मिनट देखने को कहूँगा। फिर नीचे लिखे सवाल पूछूंगा :– (१) स्वल्प विराम मैं ने कितने स्वरों के पश्चात लिखा है ? (२) क्यों ? (३) पहला समूह तीन स्वर का और दूसरा दो स्वर का क्यों बनाया गया है ? इन सवालों का जवाब मिलेगा। मैं उन का स्वर लेखन करूँगा। फिर वह ताल में सताल गा कर दिखाऊँगा तथा विद्यार्थियों से भी उसी तरह गवा लूंगा।	
७ उपसंहार	पाटी पर लिखा हुआ सब कुछ मिटा दूंगा। आज हम ने झपताल और रूपक के ठेके सीखे। उन तालों पर अलग अलग स्वरालंकार कैसे गाये जा सकेंगे यह भी सीख लिया। अगले घंटे में रूपक ताल पर गाया जानेवाला एक दूसरा अलंकार सिखाऊँगा।	
८ आवृत्ति –	अब बताइये :– (१) झपताल में कितनी मात्रायें होती हैं ? (२) उस में तालियाँ कितनी हैं ? (३) खाली किस मात्रा पर है ? (४) हम ने इस में कौन कौन से अलंकार गाये ? (५) रूपक ताल में कितनी मात्रायें हैं ? (६) उसमें ताली और खाली किस किस मात्रा पर है ? (७) रूपक ताल में कौन कौन से अलंकार हम ने गाये ?	

अलंकार ६ वा

सारेग सारे गम, रेगम रेग मप, गमप गम पध, मपध मपधनी, पधनी पध नीसां, सांनीध सांनी धप, नीधप नीध पम, धपम धप मग, पमग पम गरे, मगरे मग रेसा.

१	२	३	४	५	६	७
तीं	तीं	ना	धी	ना	धी	ना
सा	रे	ग	सा	रे	ग	म
रे	ग	म	रे	ग	म	प
ग	म	प	ग	म	प	ध
म	प	ध	म	प	ध	नी
प	ध	नी	प	ध	नी	सां
सां	नी	ध	सां	नी	ध	प
नी	ध	प	नी	ध	प	म
ध	प	म	ध	प	म	ग
प	म	ग	प	म	ग	रे
म	ग	रे	म	ग	रे	सा

विषय(तत्वसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
९ गृहपाठ –	आज के सीखे हुये तीनों अलंकारों पर घर पर मेहनत कीजिये। और किन तालों पर प्रत्येक अलंकार कैसे गाये जाते हैं, इस का स्वर लेखन घर से कर के आइये।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ नं. ६ के विषय में विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में 'दादरा' ताल का ठेका, और दादरा तथा त्रिताल में स्वरालंकार कैसे गाया जायगा, यह सिखाने के बाद, आज 'झपताल' और 'रूपक' दोनों तालों की जानकारी, ठेके और दोनों तालों में स्वरालंकार गाने की विधि सिखाई गयी। पूर्वज्ञान यह समझ कर कि विद्यार्थी त्रिताल और दादरा के ठेके जानते हैं, और दोनों ठेकों मे स्वरालंकार गाना भी जानते हैं। प्रस्तावना में कुछ ऐसे सवाल पूछे गये जिससे यह पता चल गया, कि सिखाये हुये विषय पर विद्यार्थियों ने भली भांति अभ्यास किया है। आरंभ करते समय उन से मैं ने बताया कि उसी तरह आज दो नये तालों को समझाना है और उन में कौन से अलंकार किस तरह गाये जायेंगे यह भी सीखना है।

प्रथम झपताल का ठेका, मात्रा, खंड, चिन्ह सहित लिख दिया, एक मिनट ध्यान देने को कहा और फिर ४, ५ प्रश्न पूछे। फिर मैं ने झपताल का ठेका हाथ पर दे कर दिखाया और उन से भी दिलवा लिया। फिर तबले पर एक एक अक्षर बजा कर उन से पह–चनवा लिया। पहले सारा ठेका विलंबित लय में, फिर मध्य और द्रुत लय में बजाया। यह भी देख लिया कि तीनों लय के ठेके वे पहचानने लगे हैं। फिर इस तालपर गाया जाने वाला अलंकार लिख कर कुछ सवाल पूछे। उस का उद्देश यह था कि "झपताल की मात्राओं के २–३–२–३ खंड के अनुसार ही स्वर में भी २–३ २–३ के गुठ बनाये गये हैं" यह जवाब विद्यार्थियों की ओर से आये। उत्तर आने पर मैं ने उस अलंकार का स्वर लेखन किया। प्रथम मिले हुये उत्तर के कारण, स्वर लेखन करने पर, वह अलंकार ताल में कैसे गाया जायगा, विद्यार्थियों की समझ में आगया, यह उन के दिये उत्तर से दिखाई पड़ा। फिर मैं ने वह अलंकार सताल गा कर दिखाया, उन लोगों से भी गवाया। उन्हे यह समझाने के लिये, कि दूसरा अलंकार अलग ढंग से भी गाया जा सकता है, तथा इस लिये, कि उन का स्वरज्ञान भी पक्का हो जाय। मैं ने प्रत्येक ताल के दो दो अलंकार सिखाने का निश्चय किया।

उस के अनुसार दस स्वरों का गुट, एक आवर्तन में गाने के लिये सिखाया। पहले प्रकार में पाँच पाँच स्वरों के दो गट, वो भी ताल खण्ड के हिसाब से, २–३, २–३ कर के गाने के लिये सिखाया। इस से मेरा उद्देश यहीं था कि स्वर तथा तालों का संपूर्ण ज्ञान विद्यार्थियों को भली भांति हो जाय।

चूंकि उस के बाद दूसरा ताल रूपक (७ मात्रा) सिखाना था, इसी लिये पहले का सब लिखा हुआ मिटा

दिया गया। ऐसा न करने से विद्यार्थियों का ध्यान **इच्छित स्थान** पर न लग सकता और उन के जवाब देने में गलतियाँ हो जाती। जिस प्रकार झपताल सिखाया था उसी तरह रूपक सिखा कर उसका एक अलंकार भी बताया। पाठ समय पर समाप्त हो जाय इस लिये 'रूपक' ताल में अलंकार एक ही बतलाया। अगले पाठ में ' रूपक ' का दूसरा अलंकार तथा एक-ताल और उस के अलंकार सिखलाये जायेंगे।

तत्पश्चात पाठ दुहरा कर मुझे समाधान हो गया कि सिखाया हुआ विषय वे अच्छी तरह समझ गये हैं। घर से अलंकार की अच्छी मेहनत करने के लिये और स्वर लेखन करके लाने के लिये कह कर पाठ निश्चित समय के भीतर ही समाप्त कर दिया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ८ वाँ

पाठ का क्रमांक :- ८ वाँ (दिनांक- माहे- सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा ५ वी :- संगीत शाला का प्रथम वर्ष

विषय (उप विषय सहित) रूपक ताल का दूसरा अलंकार, एकताल का ठेका और उसके दो अलंकार

सामान :- तबला, डग्गा, हार्मोनियम (अथवा तानपूरा) फूटपट्टी।

पूर्व ज्ञान :- विद्यार्थी, रूपक ताल का ठेका, उसका अलंकार कैसे गाया जाय, और स्वर लेखन किस प्रकार किया जाय, यह जानते हैं।

प्रस्तावना :- हम ने पिछले घंटे में रूपक ताल का ठेका सीखा (१) रूपक ताल में कितनी मात्रायें होती हैं ? (२) उस के विभाग किये गये हैं ? (३) एक एक खण्ड में कितनी मात्रायें होती है ? (४) किन मात्रों पर ताली है ? (५) खाली किस मात्रा पर आता है ? (६) इस ताल का कौन सा अलंकार हमने सीखा ? (गा कर दिखाओ)

हेतु कथन :- आज हमें रूपक ताल का एक दूसरा अलंकार सीखना है। इसी प्रकार आगे के एक नये ताल का ठेका, तथा उस के कौन अलंकार किस प्रकार गाने चाहिये यह भी में बताऊंगा।

विषय (तत्व सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन – (१) अलंकार ७ वां	विद्यार्थियों से पहले में रूपक का ताल दिलवाऊंगा। उन्हे दूसरा अलंकार सिखाने के लिये अलंकार ७ वाँ तख्ता स्याह पर लिख दूंगा। लिखते समय स्वरों का विभाजन ऐसा करूंगा, कि पहला गट तीन स्वर का और दूसरे दो २-२ स्वरों का एक बन जाय। फिर उन से यह सवाल करूंगा, कि इस अलंकार की स्वर रचना और इसी ताल के पिछले अलंकार की स्वर रचना में क्या फर्क है ? फिर में पाटी पर इस के स्वर लिखूंगा जिसे में पहले ही सताल गा कर सुना दूंगा। उसी प्रकार विद्यार्थियों से भी गवा लूंगा।	

विषय (तत्व सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
(२) ताल – एकताल–	उसके बाद पाटी पर लिखा हुआ सब कुछ मिटा कर, एक ताल का ठेका, मात्रा, खण्ड और चिन्ह आदि पाटी पर लिखूंगा। विद्यार्थियों को उसे एक मिनट ध्यान से पढने के लिये कह कर, नीचे लिखे प्रश्न पूछूंगा।	
(३) हेतुप्रश्न–	(१) इस ताल का क्या नाम लिखा गया है ? (२) इस ताल में मात्रायें कितनी होती हैं ? (३) कितने विभाग किये गये हैं इस में ? (४) एक एक खण्ड में कितनी मात्रायें हैं ? (५) तालियाँ कितनी हैं ? (६) किस किस मात्रा पर तालियाँ आती हैं ? (७) खाली कितनी हैं ? (८) खाली किस मात्रा पर आती है ?	
(४) स्पष्टीकरण	मैं बताऊंगा, कि इस ताल में 'धागे' और 'त्रक' दोनो अक्षर एक एक मात्रा में कहना चाहिये। इस प्रकार हाथ से इस का ताल देते समय खाली दो बार दिखानी पडती है, किन्तु तबले पर ठेका बजाते समय बीच के मात्रे– अर्थात सातवीं मात्रा की खाली ही मुख्य समझी जाती है। यह समझाने के बाद मैं उन से कहूंगा, कि मैं जो करता हूं उसे ध्यान से देखें। पहले मैं खुद हाथ से ताल दूंगा, फिर विद्यार्थियों से ताल दिलवा कर मुंह से ठेके के बोल भी कहलवा लूंगा। तत्पश्चात ठेके के बोल के एक एक अक्षर अलग अलग बजा कर पूछूंगा, कि मैं ने कौन से अक्षर बजाये ? 'धागे' और 'त्रक' के दोनो अक्षर एक एक मात्रा में होने	

अलंकार ७ वाँ

सारेग सारे साग, रेगम रेग रेम, गमप गम गप, मपध मप मध, पधनी पध पनी, धनीसां धनी धसां. सांनीध सांनी सांध, नीधप नीध नीप, धपम धप धम, पमग पम पग, मगरे मग मरे, गरेसा गरे गसा.

१	२	३	४	५	६	७
तीं	तीं	ना	धी	ना	धी	ना
सा	रे	ग	सा	रे	सा	ग
रे	ग	म	रे	ग	रे	म
ग	म	प	ग	म	ग	प
म	प	ध	म	प	म	ध
प	ध	नी	प	ध	प	नी
ध	नी	सां	ध	नी	ध	सां
सां	नी	ध	सां	नी	सां	ध
नी	ध	प	नी	ध	नी	प
ध	प	म	ध	प	ध	म
प	म	ग	प	म	प	ग
म	ग	रे	म	ग	म	रे
ग	रे	सा	ग	रे	ग	सा

विषय (तत्व सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन

के कारण, इस समय यह दोनो अक्षर एक साथ (एक मात्रा में) बजा कर "मैं ने ये कौन से अक्षर बजाये"? यह सवाल पूछूंगा। इस के बाद सम्पूर्ण ठेका, क्रमानुसार मध्य तथा द्रुत लय में बजा कर, प्रत्येक लय के अनुसार विद्यार्थियों के हाथ से ताल दिलवा लूंगा। और फिर केवल ठेका सुन कर उन से 'सम' और 'खाली' कब आते हैं? यह प्रश्न पूछूंगा। :–

ताल–एकताल मात्रा १२

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठेका	धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
चिन्ह	×		०		२		०		३		४	
खुलासा	सम		काल		टाली		काल		टाली		टाली	

(५) अलंकार ८ वाँ–

इस के पश्चात इस ताल का अलंकार पाटी पर लिखूंगा। लिखते समय दो दो स्वर के एक गट के हिसाब से ६ गट, तत्पश्चात स्वल्प विराम, इस प्रकार एक आवर्तन के १२ स्वर लिखूंगा। थोडी देर उस पर ध्यान देने के लिये कह कर निम्न प्रश्न पूछूंगा।

(१) इस अलंकार में कितने कितने स्वरों का एक गट है? (२) दो दो स्वरों का एक एक गट क्यों किया गया है? (३) स्वल्प विराम कितने स्वरों के पश्चात किया गया है? (४) ऐसा क्यों?

इन सवालों के जवाब मिलने के बाद मैं इन अलंकारों के स्वर तख्ता स्याह पर लिखूंगा।

फिर वह अलंकार मैं गा कर दिखाऊंगा और विद्यार्थियों से गवा लूंगा। इसी ताल में दूसरा अलंकार सिखलाने के लिये पिछला लिखा हुआ सब कुछ मिटा दूंगा। और उस की जगह पर ९ वाँ अलंकार लिख दूंगा, और फिर नीचे लिखे प्रश्न पूछूंगा।

अलंकार ८ वाँ

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धीं	ना
सा	रे	सा	रे	ग	म	ग	रे	सा	रे	ग	म
रे	ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	ग	म	प
ग	म	ग	म	प	ध	प	म	ग	म	प	ध
म	प	म	प	ध	नी	ध	प	म	प	ध	नी
प	ध	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	ध	नी	सां
सां	नी	सां	नी	ध	प	ध	नी	सां	नी	ध	प
नी	ध	नी	ध	प	म	प	ध	नी	ध	प	म
ध	प	ध	प	म	ग	म	प	ध	प	म	ग
प	म	प	म	ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे
म	ग	म	ग	रे	सा	रे	ग	म	ग	रे	सा

(६) अलंकार ९ वा–

विषय (तत्वसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन

(१) इस अलंकार की तथा पिछले अलंकार की स्वर रचना में क्या अन्तर है ? (२) प्रत्येक पंक्ति में अवग्रह चिन्ह किन किन स्वरों के आगे हैं ? (३) उस का क्या अर्थ समझना चाहिये ? (४) एक आवर्तन मे हमे कितने स्वर गाने हैं ? (५) ये आठ स्वर १२ मात्रा में गाने के लिये हमे क्या करना होगा ?

इन प्रश्नों के उत्तर पाने के बाद इन स्वरों को पाटी पर लिखूंगा। और उसी प्रकार वह अलंकार सताल गा कर विद्यार्थियों से गवा लूंगा। फिर सब कुछ मिटा दूंगा।

(७) उपसंहार

आज हम ने रूपकताल का दूसरा अलंकार, एकताल का ठेका और एकताल के दो अलंकार सीखे।

(८) आवृत्ति –

अब जरा बताओ तो–

(१) एकताल में कितनी मात्रायें होती हैं ?

(२) उस के खण्ड कैसे किये गये हैं ?

(३) तालियां कितनी हैं ?

(४) खाली कहां है ?

(५) मुख्य खाली किस मात्रे पर है ?

(६) एकताल का दूसरा अलंकार गाते समय, ८ स्वर १२ मात्रा में कैसे गाये गये।

(७) ये विभिन्न अलंकार ताल में गाते समय क्या खास बात ध्यान में रखनी चाहिये ?

अलंकार ९ वा

सारेगम साऽमऽसाऽमऽ, रेगमप रेऽगऽरेऽपऽ, गमपध गऽपऽगऽध, मपधनी मऽधऽमऽनीऽ पधनीसां पऽनीऽपऽसां;

सांनीधप सांऽधसांऽपऽ, नीधपम नीऽपऽनीऽमऽ, धपमग धऽमऽधऽगऽ, पमगरे पऽगऽपऽरेऽ, मगरेसा मऽरेऽमऽसाऽ

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धीं	धीं	धागे	त्रक	तू	ना	क	त्ता	धागे	त्रक	धा	ना
सा	रे	ग	म	सा	ऽ	ग	ऽ	सा	ऽ	म	ऽ
रे	ग	म	प	रे	ऽ	म	ऽ	रे	ऽ	प	ऽ
ग	म	प	ध	ग	ऽ	प	ऽ	ग	ऽ	ध	ऽ
म	प	ध	नी	म	ऽ	ध	ऽ	म	ऽ	नी	ऽ
प	ध	नी	सां	प	ऽ	नी	ऽ	प	ऽ	सां	ऽ
सां	नी	ध	प	सां	ऽ	ध	ऽ	सां	ऽ	प	ऽ
नी	ध	प	म	नी	ऽ	प	ऽ	नी	ऽ	म	ऽ
ध	प	म	ग	ध	ऽ	म	ऽ	ध	ऽ	ग	ऽ
प	म	ग	रे	प	ऽ	ग	ऽ	प	ऽ	रे	ऽ
म	ग	रे	सा	म	ऽ	रे	ऽ	म	ऽ	सा	ऽ

विषय (तत्वासहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्ता स्याह (पाटी) लेखन
(९) गृहपाठ –	आज के सीखे हुये अलंकार अच्छी तरह याद करो। घर से उनके स्वर लेखन कर के लाओ। सीखे हुये तालों पर तुम अपने मन से कुछ नये अलंकार बैठाने का प्रयत्न करो।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ नं. ७ विषयक

विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में झपताल और रूपकताल के ठेकों की जानकारी तथा झपताल में दो अलंकार और रूपक ताल का एक अलंकार सीखने के बाद आज रूपक ताल का दूसरा अलंकार तथा एकताल का ठेका और उस के दो अलंकार सिखाने के लिये प्रयत्न किया गया।

रूपक ताल के ठेके और उसके स्वरालंकार गाने की जानकारी विद्यार्थियों को है यह स्वीकार करते हुये प्रस्तावना करते समय उनके पूर्व ज्ञान पर पांच सवाल पूछे गये। और फिर हेतुकथन में मैं ने बताया, कि आज हमें एक नवीन ताल का ठेका और उसके स्वरालंकार गाने की रीति तथा रूपक ताल का दूसरा अलंकार कैसे गाया जायगा यह भी बताया। इस प्रकार विषय प्रतिपादन आरम्भ हुआ।

सर्व प्रथम विद्यार्थियों के हाथ से रूपक ताल दिलवाया, फिर दूसरा अलंकार पाटी पर लिखा। लिखते समय मैं ने पहले तीन स्वरों का गट और दूसरे दो २–२ स्वरों का एक, इस प्रकार गटों का विभाजत किया और उन से सवाल किया, कि "इस अलंकार में और इसी ताल के पिछले अलंकार में क्या फर्क है"? उद्देश यह था, कि "पहले अलंकार की स्वर रचना में एक आवर्तन के स्वरों में " सारेग सारेगम, जैसा सरल क्रम था, और दूसरे अलकार की स्वर रचना में 'सारे–ग सारे सग' जैसा वक्र क्रम था", इस प्रकार का उत्तर विद्यार्थियों की ओर से आये। यह फर्क विद्यार्थियों की समझ में आने के बाद, मैं ने उस का स्वर लेखन पाटी पर किया। और ताल सहित वह अलंकार मैं ने गा कर दिखाया और बाद में उनसे भी गवा लिया। इस के बाद, चूंकि मुझे एकताल सिखाना था, तख्ता स्याह पर जो कुछ लिखा था, मिटा दिया। और एकताल का ठेका, मात्रा, चिन्ह आदि पाटी पर लिख दिया। उस पर ध्यान देने के लिये कह कर मैं ने ७–८ प्रश्न पूछें। "इस ताल में हाथ से ताल देते समय दो खाली आती है", फिर भी बीच के मात्रे की खाली मुख्य मानी जाती है उन्हे मैं ने यह बताया। इसी भांति इस ताल में 'धागे' और 'त्रक' ये दोनों अक्षर एक एक मात्रे में कहना चाहिये, यह भी समझाया। और फिर मैं ने अपनी ओर ध्यान देने की आज्ञा दी। मैं ने खुद एकताल का हाथ से ठेका दिया और उनसे भी दिलवाया। फिर उन बोलों के एक एक अक्षर बजा कर उन से बोल पहचानने के लिये कहा। ठीक जबाब पाने के बाद पूरा ठेका विलंबित लय में बजा कर 'सम' और 'खाली' की जगह पहचानने को कहा।

फिर मध्य और द्रुत लय में ठेका बजा कर 'सम' और 'खाली' की पहचान विद्यार्थियों से करा ली। फिर तबले पर तीनों लयों में ठेका बजाते हुये उन के हाथ से ताल दिलवाया। लय का फर्क वे समझ गये, इस पर उनकी समझ में ठेका अच्छी तरह आ गया। फिर मैं ने इस ताल का अलंकार लिखा। लिखते समय दो दो स्वरों का एक गट के अनुसार ६ गट, तत्पश्चात स्वल्प विराम, इस प्रकार एक आवर्तन के १२ स्वर लिखता गया ताकि विद्यार्थियों की समझ में यह आ जाय कि एकताल के २-२-२-२-२-२ के खण्ड के हिसाब से स्वरों के भी दो स्वरों का एक गट, यानी ६ गट १२ मात्रा में गाना है। ''इस पर जरा ध्यान दो" यह कह कर, मैं ने उन से २,३ प्रश्न पूछे। जवाब ठीक मिलने पर, मैं ने उस अलंकार के स्वर लिख दिये। फिर मैं ने उसे तालसहित गाया, उन से भी गवाया। सब मिटा कर मैं ने ९ वाँ अलंकार पाटी पर लिखा और उस पर भी तीन चार सवाल किया। इस अलंकार में ८ स्वर १२ मात्रे में गाने हैं, इसलिये अन्तिम चार स्वर के सामने अवग्रह चिन्ह (ऽ) दे कर, आखिर के चार स्वर आठ मात्रे में गाने हैं, तथा प्रथम चार, एक एक मात्रा में प्रत्येक, इस प्रकार १२ मात्राओं में ८ स्वर गाना है, यह बात विद्यार्थियों की समझ में आ गई अथवा नहीं, यही जानने के लिये मैं ने यह प्रश्न पूछे थे। उत्तर ठीक मिलने पर, इन के स्वर भी मैं ने लिख दिये; और वह अलंकार स्वयं गा कर, विद्यार्थियों से गवा लिया। इस के बाद दुहराने के हेतु पाटी पर से सब कुछ मिटा दिया। आवृत्ति में ७ सवाल पूछे। उस का अंतिम प्रश्न था "अलग अलग ये अलंकार ताल में गाते समय किस खास बात पर ध्यान रखना पड़ता है?" मेरा मतलब यह था, कि ताल में जितनी मात्रायें होती हैं, उनका मेल स्वरालंकार के गटों से बैठना चाहिये, यह बात विद्यार्थियों की समझ में आ गई है अथवा नहीं।

गृहपाठ देते समय मैं ने कहा, कि "सिखलाये हुये सारे अलंकारों पर अच्छी तरह मेहनत कर के अपने मन से एक अलंकार बैठाने की कोशिश करो और उस का स्वरलेखन भी घर से करके लाओ। इस में भी यही जानने का मेरा उद्देश था, कि ताल की मात्राओं और अलंकार के स्वरों का मेल मिलाना विद्यार्थी जान जायें। इस प्रकार आज के प्रचलित ५ मुख्य ठेकों की जानकारी और उस के ९ स्वरालंकार सिखाये गये। आगे के लिये कुछ राग और उन की चीजों के सिखलाने का आधार तय्यार कर लिया गया है।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ९ वाँ

पाठ का क्रमांक :- ८ वाँ (दिनांक- माहे- सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा ५ वी, संगीत पाठशाला का प्रथम वर्ष

सामान :- फूलों की एक सादी माला और एक सुन्दर हार; हारमोनियम

विषय :- (उप विषय सहित) राग का अर्थ और राग रचना का नियम समझाना (संवाद, वादी, संवादी, अनुवादी, -विवादी स्वर)

पूर्वज्ञान :- विद्यार्थी स्वर सम्बन्धी सारी बातें तथा आरो-हावरोह का अर्थ जानते हैं।

प्रस्तावना :- सब मिला कर कितने स्वर होते हैं, यह हमें मालूम है ? आरोह किसे कहते हैं ? अवरोह क्या है ? हमने आरोहावरोह की उपमा किससे दी थी ? यह उपमा क्यों दी गई थी ?

हेतु कथन :- हमें आज यह सीखना है, कि संगीत के १२ स्वरों में कुछ विभिन्न स्वरों के आरोहावरोह रूपी झूले को क्या कहते हैं ?

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति - (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन – (१) राग-	'बारह स्वरों में ५, ६, अथवा ७ स्वरों के आरो-हावरोही मनोरंजक स्वर मालिका या स्वरों के झोंकों को संगीत में राग कहते हैं, यह बताने के बाद में अपने बायें हाथ में फूलों की माला और दाहिने का हार दिखाकर नीचे लिखे प्रश्न विद्यार्थियों से पूछूंगा। (१) मेरे बायें हाथ में क्या है ? (२) और इस दाहिने का हाथ में क्या है ? (३) माला और हार में क्या फर्क दिखाई पडता है ? फिर मैं उन्हे समझाऊंगा कि इसी भांति आरोहा-वरोह स्वरों की माला है तथा राग फूलरूपी स्वरों का सुन्दर हार है। राग तय्यार होने की सामग्रियों में दो बातें तुम अच्छी तरह समझ गये हो इस के अलावा एक और महत्वपूर्ण चीज समझने लायक है, वह है वादी-संवादी स्वर! वादी संवादी स्वर समझाने के लिये में एक बार हार्मोनियम के एक सप्तक के सात स्वर एक साथ बजा कर पूछूंगा, कि यह आवाज कान को कैसी लगती है ? फिर नजदीक के दो स्वर एक साथ बजा कर यही सवाल पूछूंगा। फिर सा-सां, सा-प, और	राग :- बारह स्वरों में ५, ६, या ७ स्वरों की आरोहावरोही मनोरंजक स्वरमालिका को 'राग' कहते राग, तय्यार करने के लिये तीन आवश्यक बातों पर ध्यान रखना चाहिये। (१) स्वर (२) आरोहावरोह (३) वादी संवादी स्वर

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	स–म स्वरों की जोडियाँ बजा कर उन से पूछूंगा कि ये स्वर मिश्रण कैसे लगते हैं ?	
(२) स्वर–संवाद	इस प्रकार में उन्हे समझाऊँगा कि जिन दो स्वरों का मिश्रण कानों को मधुर लगे, उसे स्वर–संवाद कहते हैं। फिर हार्मोनियम पर दोनों षड्ज (विद्यार्थियों को बिना दिखाये) बजा कर पूछूंगा कि मैं ने क्या बजाया ? इसी प्रकार षड्ज पंचम और षड्ज मध्यम की जोडियाँ बजाकर भी यही सवाल पूछूंगा। उत्तर आने पर में बताऊँगा कि इस तरह (सा–सां) की जोडी षड्ज–षड्ज संवाद या षड्ज षड्ज भाव कहलाती है। स–प और स–म की जोडी को षड्ज पचम या षड्ज–मध्यम संवाद या भाव कह कर सम्बोधित करेंगे। फिर मैं विद्यार्थियों से निम्न लिखित प्रश्न पूछूंगा (१) षड्ज से चौथा स्वर कौनसा है ? (२) रिषभ से चौथा स्वर क्या है ? (३) गांधार से चौथा और (४) मध्यम से चौथा स्वर क्या कहलाता है ? (५) कौन सा स्वर मध्यम से चौथा आता है ? प्रश्नों के पश्चात में बताऊँगा कि षड्ज–मध्यम (सा–म), रिषभ पंचम (रे–प) गंधार धैवत (ग–ध), मध्यम–निषाद (म ध), और पंचम षड्ज (प–सां) इत्यादि जोडियाँ षड्ज–मध्यम भाव के अन्तरगत आती है। षड्ज–पंचम (सा–प) जोडी षड्ज पंचम भाव की है। षड्ज पंचम भाव में आने वाली बाकी जोडियाँ कौनसी हैं ? इस प्रकार के प्रश्न से षड्ज–पंचम भाव की जोडियाँ उन की समझमें आ जायेंगी। इन जोडियों में राग के अन्दर एक स्वर वादी और संवादी होता है, यह बताने के लिये पहले मे वादी संवादी का अर्थ बताऊँगा।	स्वर–संवाद :– जिन दो स्वरों का मिलाप कानों को मधुर लगता है, उसे स्वर–संवाद कहते हैं। इस प्रकार मुख्य संवाद तीन हैं :– (१) षड्ज–षड्ज–संवाद (२) षड्ज–पंचम–संवाद (३) षड्ज–मध्यम–संवाद
(३) वादी स्वर	राग में लगनेवाला एक स्वर इतना महत्वपूर्ण होता है, जिस के कारण ही राग की पहचान होती है। यह वादी स्वर कहलाता है। मैं यह भी बताऊंगा कि महत्वपूर्ण स्वर वही समझा जायेगा जिस का उपयोग उस	वादी स्वर :– रागों में लगने वाले स्वरों में जिस स्वर का उपयोग सब से अधिक किया जाता है उसे वादी स्वर कहते हैं।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	राग में अधिक से अधिक किया जाय। तत्पश्चात वादी स्वर से षड्ज-पंचम या षड्ज-मध्यम भाव पर आने	
(४) संवादी स्वर (५) अनुवादी-स्वर	वाला दूसरा स्वर, संवादी स्वर ही होता है। इन दो महत्वपूर्ण स्वरों के अतिरिक्त लगने वाले दूसरे स्वर अनुवादी कहलाते हैं।	संवादी स्वर:- वादी स्वर से षड्ज-पंचम अथवा षड्ज-मध्यम भाव से सम्बंधित स्वर, संवादी स्वर कहलाता है।
(६) विवादी-स्वर	राग में न लगने वाले बिवादी स्वर (वर्जित स्वर) कहे जाते हैं। कई बार रागों का वैचित्र बढाने के लिये विवादी स्वर बडी चतुराई से लगाये जाते हैं। इस के बाद में बताऊँगा कि सप्तक के दो भाग होते हैं। सरेगम	अनुवादी स्वर:- वादी संवादी स्वरों को छोड कर राग में लगनेवाले दूसरे स्वरों को अनुवादी स्वर कहते हैं।
(७) पूर्वांग और (८) उत्तरांग	विभाग को पूर्वांग और पधनीसां सप्तक उत्तरांग विभाग कहते हैं। यह बता कर मैं समझाऊँगा, कि राग का वादी पूर्वांग में और संवादी स्वर उत्तरांग में होता है और संवादी यदि पूर्वांग में होगा तो वादी उत्तरांग में होगा। यह नियम समझा कर राग रचना के नियम उन्हे बताऊँगा। किसी राग को मनोरंजक बनाने के लिये निम्न लिखित छः बातें आवश्यक हैं।	विवादी :- राग में न लगने वाले स्वरों को विवादी कहते हैं। विवादी स्वर कई बार रागों का वैचित्र बढाने के लिये, बडी चतुरता से लगाये जाते हैं। ऐसे वर्जित स्वरों और विवादी में अन्तर है। सारेगम- सप्तक का पूर्वांग पधनीसा- सप्तक का उत्तरांग
(९) राग रचना का नियम	(१) षड्ज (स) किसी भी राग में वर्जित नहीं रहता। (२) आरोह, अवरोह राग के लिये अत्यन्त आवश्यक है। (३) षड्ज से संवाद करने वाले मध्यम और पंचम स्वरों के कारण, ये दोनों स्वर (म,प) एक राग में ही कभी वर्जित नहीं होते (एक रहता है)। (४) प्रत्येक राग में (आरोह तथा अवरोह में) कम से कम पाँच स्वर तो होते ही हैं। (कुछ रागों के लिये यह नियम लागू नहीं है) (५) एक ही स्वर के दो रूप, शुद्ध और विकृत क्रमशः नहीं आते (अपवाद छोडकर)। (६) राग मनोरंजक होना ही चाहिये।	**रागरचना के नियम** (१) षड्ज स्वर किसी राग में वर्जित नहीं होता। (२) आरोहावरोह रागो के लिये आवश्यक है। (३) म और प के स्वर एक ही समय में वर्जित नहीं होते। (४) राग में कम से कम पाँच स्वर होने ही चाहिये। (५) एक ही स्वर के दोनो रूप क्रमशः नहीं आते। (६) मनोरंजकता राग के लिये आवश्यक है।
(१०) उपसंहार	आज हम ने राग का अर्थ तथा उस के अन्दर लगने वाली महत्वपूर्ण बातें सीखीं।	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(११) आवृत्ति–	जरा बताओ तो– (१) राग क्या है ? (२) राग की रंजकता के लिये क्या आवश्यक है ? (३) स्वर–संवाद के क्या अर्थ हैं ? (४) संवाद कितने और कौन कौन से होते हैं ? (५) वादी–संवादी का क्या मतलब है ? (६) अनुवादी, विवादी स्वर से क्या समझते हो ? (७) सप्तक के पूर्वांग और उत्तरांग क्या होते हैं ? (८) राग तय्यार करने के लिये किन नियमों का पालन करना चाहिये ?	
(१२) गृहपाठ–	संगीत में 'राग' सम्बन्धी विषय पर जो कुछ तुमने समझा है, अपने शब्दों में घर से लिख कर आओ।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. ८ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में नौ अलंकार ताल सहित कैसे गाये जा सकेंगे, बताया गया था। आज राग तथा उस की रंजकता के लिये आवश्यक नियमों पर प्रकाश डाला गया है। पूर्व ज्ञान में बताया गया, कि विद्यार्थियों को स्वर संबंधी संपूर्ण जानकारी है। आरोहावरोह और राग में फर्क समझाने के लिये फूल की एक साधारण माला और सुंदर पुष्पहार लाया गया। प्रस्तावना करते समय पूर्वज्ञान संबंधी पूछे गये। विषय प्रवेश करने के लिये मैं ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया, कि आरोहावरोह की उपमा किस से दी गई थी। विद्यार्थियों ने बताया, कि "झूले से उपमा दी गई थी।" इस उत्तर का आधार ले कर मैं ने बताया, कि "५, ६ या ७ स्वरों की आरोहावरोही रंजक स्वर मालिका, या झूले को संगीत में राग कहते हैं। फिर एक हाथ में माला और दूसरे में हार ले कर दोनों का फर्क समझाते हुये मैं ने बताया, कि आरोहावरोह फूलों की सादी माला तथा रागों का स्वर विस्तार, अर्थात वादी संवादी स्वर, हरकतें, गमक आदि की सहायता से हार के फूल, पत्तों के समान सुंदर है। यह बताने के बाद राग में रंजकता लाने के लिये तीन आवश्यक बातों का मैं ने उल्लेख किया। वह तीनों चीजें हैं स्वर, आरोहावरोह तथा वादी संवादी। मैं ने वादी संवादी समझाने के लिये, 'संवाद' किसे कहते हैं, यहाँ से शुरुआत की। बात जल्दी समझ में आ जाय इस लिये मैं ने हार्मोनियम पर बजा कर षड्ज–षड्ज, षड्ज–पंचम और षड्ज–मध्यम संवाद दिखा दिया। उन के स्वर ज्ञान का फायदा उठाते हुये "स्वरों की कौन कौन सी जोडियाँ हैं ?" यह प्रश्न पूछा। विद्यार्थियों ने उत्तर दिया। मैं ने वादी और संवादी स्वर की व्याख्या करते हुये बताया, कि इन जोडियों में राग के अन्दर एक स्वर वादी तथा दूसरा संवादी होता है, और इसी कारण रागों में रंजकता बनी रहती है। इस के बाद अनुवादी और विवादी (वर्जित) की जानकारी तथा उन में क्या फर्क है, यह भी समझा दिया। वादी संवादी का नियम का स्पष्टीकरण करते हुये मैं ने बताया, कि वादी अगर पूर्वांग में है तो संवादी उत्तरांग में और यदि वादी उत्तरांग में तो संवादी पूर्वांग में होगा। पूर्वांग और उत्तरांग का अर्थ मैं ने यह बताने के पहले ही उन्हे भली भांति समझा दिया था। बाद में राग रचना संबंधी ६ आवश्यक बातों की सूचना दी। उपसंहार के बाद आवृत्ति के समय आज के सिखाये हुये विषय पर मैं आठ सवाल पूछे। गृहपाठ में राग विषयक सारी जानकारी लिख लाने के लिये कहा। इस प्रकार निश्चित समय के अन्दर ही पाठ समाप्त हो गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १० वाँ

पाठ का क्रमांक :– ९ वाँ (दिनांक– माहे– सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा ५ वी, संगीत शाला का प्रथम वर्ष

विषय (उप विषयसहित) :– राग की मुख्य तथा उप जाति

सामान :– फल, खडिया

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थि जानते हैं कि राग क्या है, और उसे तय्यार करने में किन बातों की आवश्यकता होती है ?

प्रस्तावना :– हमने पिछले घंटे में राग के विषय में समझाया। जरा बताइये राग किसे कहते हैं ? एक राग में कम से कम कितने स्वरों की आवश्यकता होती है ?

हेतु कथन :– राग में लगने वाली अलग अलग स्वर संख्या के अनुसार कुछ वर्ग बनाये गये हैं। आज हमें उन वर्गों के विषय में जानना है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन –	आप की कक्षा में कितने विद्यार्थी हैं ? एक विद्यार्थी से यह प्रश्न पूछ कर उसे गिनने के लिये कहूँगा। उस का उत्तर आने के बाद, उस प्रथम विद्यार्थी को जिसे उस ने 'एक' गिना था, उस की जगह से उठा कर एकदम आखिरी जगह पर बिठा दूंगा और फिर पूछूं गा "अब कितने विद्यार्थी हैं ?" आखिर में गिने हुये विद्यार्थी के सामने एक विद्यार्थी और आगया; अब कितने हो गये ? जवाब मिलने पर मैं बताऊँगा कि इसी तरह राग के स्वर गिनने समय (आरोहावरोह अलग अलग) एक बार गिना हुआ स्वर पट्टीपर फिर दिखाई पडने पर उस गिनती में फिर सम्मलित करना चाहिये अथवा नहीं, इसे समझाने के लिये दुर्गा राग का आरोह (राग का नाम न बताकर) लिखूँगा; और पूछूंगा कि ये कितने स्वर हैं ? एक बार गिना हुवा स्वर यदि फिर पट्टी पर दिखाई पडा तो उसे नहीं गिनना चाहिये, यह महत्वपूर्ण बात हर एक को ध्यान में रखने के लिये कहूँगा।	सा रे म प ध सां
(अ) रागों के मुख्य वर्ग	तत्पश्चात भूप राग के (आरोहावरोह) लिख कर उन से पूछूंगा कि इस राग के आरोहावरोह में कितने कितने स्वर हैं ? इस प्रकार जिस राग के आरोह तथा अवरोह	आरोह – सा रे ग प ध सां अवरोह – सां ध प ग रे सां जिस राग के अरोह, अवरोह में

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(१) ओडव–वर्गीय-राग–	में पाँच पाँच स्वर आते हैं उसे ओढव वर्गीय राग कहते हैं"। फिर पूरिया राग के आरोहावरोह लिख कर पूछूं गा " इस राग के आरोह तथा अवरोह में कितने स्वर हैं ?	पाँच पाँच स्वर लगें, उसे 'ओडव वर्गीय राग' कहते हैं।
(२) षाडव–वर्गीय-राग–	जवाब आने पर में बताऊँगा कि इस तरह जिस राग के आरोह और अवरोह में छः छः स्वर होते हैं वे षाढव वर्गीय राग कहलाते हैं। इस के पश्चात काफी राग के आरोहावरोह लिख कर पूछू गा "इस के आरोहावरोह में कितने कितने स्वर हैं ? जबाब मिलेगा 'सात' !	आरोह – सा रे॒ ग म॑ ध नी सां अवरोह – सां नी ध म॑ ग रे॒ सा आरोह, अवरोह में छः छः स्वर लगने वाले राग 'षाडव–वर्गीय–राग' कहलाते हैं।
(३) संपूर्ण–वर्गीय-राग–	इस तरह जिसके आरोहावरोह में सात सात स्वर लगते हैं, वो सम्पूर्ण–वर्गीय राग कहलाते हैं।	आरोह – सा रे ग॒ म प ध नी॒ सां अवरोह – सां नी॒ ध प म ग॒ रे सा सात सात स्वर युक्त आरोहावरोह वाले राग 'संपूर्ण–वर्गीय–राग' होते हैं।
(ब) रागों के पोट वर्ग	इस के बाद उप वर्गों को समझाने के लिये, ओडव षाढव राग कैसा होता है, इस के उदाहरण में सूर मल्हार (अथवा धानी) राग का आरोहावरोह लिख कर प्रश्न पूछूंगा कि इस में आरोहावरोह के कितने कितने स्वर है ?	
(१) ओडव-षाडव-वर्गीय राग–	इस भाँति पाँच और छः के लिये, ओडव तथा षाढव शब्दों को मिलाकर दिखाऊँगा कि यह राग ओडव–षाडव वर्गीय हो गया। यह भी बताना आवश्यक है कि ऐसे समय पहला शब्द आरोह का और दूसरा अवरोह का शब्द दर्शाता हैं। इस के बाद नीचे लिखे प्रश्न पूछ कर, दूसरे वर्गों के नाम भी विद्यार्थियों से ही निकलवा लूंगा।	आरोह – सा रे म प नी सां अवरोह – सां नी॒ ध प म रे सा. जिस राग के आरोह में पाँच, अवरोह में छः स्वर लगते हैं वे 'ओडव–षाडव-वर्गीय–राग' होते हैं।
(२) ओडव-संपूर्ण-वर्गीय–राग–	इस के लिये पहले देस राग का आरोह, अवरोह लिखूंगा, फिर विद्यार्थियों से पूछूंगा कि इस राग के आरोह, अवरोह में कितने कितने स्वर हैं। इस का उत्तर विद्यार्थियों से मिलेगा। उस उत्तर के आधार पर में उन से पूछूंगा कि यह किस वर्ग का हुआ ? और उन्ही से इसका नाम निकलवा लूंगा।	आरोह – सा रे म प नी सां अवरोह – सां नी॒ ध प म ग रे सा. आरोहावरोह में ५, ७ स्वर वाले राग ' ओडव–संपूर्ण-वर्गीय–राग ' कहलाते हैं।
(३) षाडय-संपूर्ण-वर्गीय राग–	पुनः खमाज राग पाटी पर लिख कर इसी प्रकार का प्रश्न पूछूंगा कि इस के आरोहावरोह में कितने कितने स्वर हैं ? और यह राग किस वर्ग का होगा ? इस का नाम विद्यार्थी के मुख से ही कहला लूंगा। और पाटी पर लिखूंगा कि यह षाडव–सम्पूर्ण राग है।	आरोह – सा ग म प ध नी सां अवरोह – सां नी॒ ध प म ग रे सा. जिस के आरोह में छः तथा अवरोह में ७ स्वर हैं वह ' षाडव-संपूर्ण-वर्गीय ' राग होगा।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(४) संपूर्ण-षाडव-वर्गीय-राग– (५) संपूर्ण-ओडव-वर्गीय–राग (६) षाडव-ओडव-वर्गीय–राग	फिर खंबावती का आरोह, अवरोह पाटी पर लिखूंगा, और विद्यार्थियों से पूछूंगा "इस के आरोहावरोह के स्वरों की संख्या बताओ? इस वर्ग का क्या नाम होगा?" उन के उत्तर से यह पता चल जायगा कि विद्यार्थियों को स्वर संख्या के अनुसार रागों का वर्गीकरण करना आने लगा है। इसी तरह "सम्पूर्ण-ओडव वर्गीय राग का उदाहरण दीजिये तथा षाडव-ओडव वर्गीय राग का अर्थ समझाइये"। मैं उन से यह कहूँगा और इन की परिभाषा पाटी पर लिख कर दिखा दूंगा।	आरोह – सा रे ग म प ध नी सां अवरोह – सां नी ध प म ग सा. आरोहावरोह में क्रमशः ७ और ६ स्वर युक्त राग 'संपूर्ण-षाडव-वर्गीय' राग होगा। जिस राग के ७ तथा अवरोह में ५ स्वर होंगे वह संपूर्ण-ओडव-वर्गीय' राग होगा। जिस राग के आरोह में ६ तथा अवरोह में ५ स्वर लगते हैं वह षाडव-ओडव-वर्गीय है।
(७) संकीर्ण-वर्गीय-राग–	तत्पश्चात संकीर्ण वर्गीय राग का नाम नया होने के कारण मैं ही उसे समझाऊँगा कि "अनेक राग ऐसे भी होते हैं जिन में कुछ स्वरों के दोनों रूप (शुद्ध और विकृत) आते हैं और उन के आरोह, अवरोह में सरलता (स्वरों का क्रम) नहीं होती। ऐसे रागों को संकीर्ण वर्गीय राग कहते हैं। फिर उदाहरण के लिये केवल केदार राग का आरोह अवरोह लिख कर संकीर्ण वर्गीय राग की व्याख्या कर दूंगा।	आरोह – सा रे सा म ^{ग}प, पध पसां अवरोह – सां नी ध प, मं प ध नी ध प, मं पधपम, सारेसा जिस राग के आरोहावरोह में स्वरों का क्रम सीधा न हो कर किसी स्वर के शुद्ध विकृत दोनों रूप लगते हैं, उन्हे संकीर्ण-वर्गीय-राग कहते हैं।
उपसंहार –	इस प्रकार आज हम ने यह सीखा कि राग के मुख्य तथा उप वर्ग कितने होते हैं, और उन की पहचान क्या है।	
आवृत्ति –	जरा बताइये तो – (१) रागों के वर्ग क्योंकर निश्चित किये जाते हे! (२) सब मिला कर राग के कितने और कौन से वर्ग हैं? (३) राग के मुख्य वर्ग कौन से हैं? और उप वर्ग कौन से हैं? (४) किस प्रकार उन्हे पहचाना जाता है? (५) रागों की स्वर संख्या गिनते समय क्या खास बात ध्यान में रखनी चाहिये?	
गृहपाठ –	मेरे बताये हुये प्रश्न तथा उन के उत्तर घर से लिख लाइये।	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	(१) रागों के कितने और कौन कौन से वर्ग हैं ? (२) किस तरह रागों के अलग अलग वर्ग पहचानना चाहिये ?	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. ९ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

आठवें पाठ में राग का अर्थ तथा उसे तय्यार करने के लिये आवश्यक बातें बताई गई। आज रागों के वर्ग के सम्बन्ध में समझाया गया। प्रस्तावना करते समय पिछले विषय पर दो तीन सवाल पूछे गये, फिर उस के उत्तर के आधार पर हेतु कथन किया गया। फिर विद्यार्थियों को यह समझाने के लिये कि राग के आरोहावरोह में आने वाले स्वर कैसे गिनने चाहिये, मैं ने उन से पूछा कि "तुम्हारे वर्ग में कितने विद्यार्थी हैं ? उत्तर मिला "३०"। मैं ने फिर प्रथम बैठे हुअे लडके को उस की जगह से उठा कर आखिर की जगह पर बैठा दिया और पूछा "तीसवें विद्यार्थी के बाद मैं ने एक लडका और बैठा दिया है, अब कितने विद्यार्थी हो गये"? मैं यह जानना चाहता था कि विद्यार्थी कहीं ऐसा जबाब न दें कि अब ३१ विद्यार्थी हो गये"। किन्तु विद्यार्थियों ने जबाब दिया कि "आखिर में बैठा हुआ लड्का पहली गिनती में गिना जा चुका है, सिर्फ उस की जगह बदल दी गई है, विद्यार्थियों की संख्या नहीं बढी।" इस उत्तर के पश्चात मैं ने उन्हे समझाया कि "इसी प्रकार रागों के आरोह, अवरोह गिनते वक्त ध्यान रखना चाहिये कि स्वर एक बार गिना जाने के बाद उसे फिर (पाटीपर दिखाई पडा तो भी) दो बार नहो गिनना चाहिये।" यह समझाने के बाद प्रयोग के लिये मैं ने दुर्गा राग का तख्ता स्याह पर, आरोह, अवरोह लिख दिया और प्रश्न किया "गिन कर बताइये इस में कितने स्वर हैं ? मेरे इस प्रश्न का उद्देश यह था कि विद्यार्थी एक बार पहला षड्ज गिनने के बाद तार षडज दोबारा न गिन लें, ऐसा न हो कि वह कह दें "इस में छः स्वर हैं"। मैं ने यह सवाल पाँच छः विद्यार्थियों से किया। एक दो ने कह ही दिया कि "छः स्वर हैं", लेकिन बाकी सब ने "५ स्वर हैं" जवाब दिया। यह ठीक जवाब मिलने के पश्चात मैं ने एक बार उन की गलतियाँ फिर समझा कर भूप राग का आरोहावरोह (राग का नाम न बताकर) पाटी पर लिखा। "इसके आरोह, अवरोह में कितने कितने स्वर हैं ?" मैं ने पूछा। सब ने जवाब दिया "पाँच पाँच स्वर हैं।" मैं ने उन्हे समझाया कि "इस प्रकार जिस राग के आरोह, अवरोह में पाँच पाँच स्वर होते हैं उन्हे ओडव-वर्गीय राग कहते हैं।" इसी पद्धति के अनुसार षाडव, सम्पूर्ण, ओडव-षाडव, ओडव–सम्पूर्ण–षाडव इत्यादि राग-वर्ग, प्रत्येक के आरोहावरोह के साथ पाटी पर लिख कर मैं ने समझा दिया। इस तरह मुख्य ३ वर्ग तथा एक उपवर्ग समझाने के पश्चात बाकी वर्गों के नाम, स्वर संख्या के आधार पर, मैं ने विद्यार्थियों के मुँह से ही कहला लिया। अन्त में दो उप वर्गों के नाम मैं ने खुद लिये, और उन से पूछा कि "इस प्रकार के वर्ग में कितने कितने स्वर हो सकते हैं ?" उन के उत्तर से मुझे समाधान हो गया कि यह विषय विद्यार्थियों की समझ में भली भांति आ गया है। इस के बाद संकीर्ण वर्ग की व्याख्या मैं ने खुद कर दी, क्यों कि यह नया वर्ग था। फिर मैं ने सारा पाठ दुहरा कर गृहपाठ के लिये कुछ सवाल दिये। उन के उत्तर घर से लिख लाने को कहा। निश्चित समय में पाठ समाप्त हो गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक ११ वाँ

पाठ का क्रमांक :- १० वाँ (दिन- मास- सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा :- ५ वी, संगीत शाला का प्रथम वर्ष **विषय** :- (उप विषय सहित)

सामान :- पाटी, खडियामिट्टी, तानपूरा या हार्मोनियम **पूर्वज्ञान** :- शुद्ध विकृत स्वरों का ज्ञान, विकृत स्वरों के चिन्ह और इस सम्बन्ध की सारी जानकारी विद्यार्थियों को है।

प्रस्तावना :- (किसी विद्यार्थी को सम्बोधन करके):-- (१) तुम्हारा पूरा नाम क्या है ? (२) तुम्हारे कितने भाई हैं ? (३) अब जरा सब का नाम तो बताओ।

दूसरे विद्यार्थीसे :- (४) तुम्हे इन सारे नामों में क्या समानता दिखाई पडती है ? (५) यह तुम ने कैसे जाना कि सारे भाई एक ही व्यक्ति से सम्बन्धित हैं ?

हेतु कथन :- इसी प्रकार संगीत में भी ऐसे अनेक राग हैं जिनके आरोहावरोह भिन्न हैं, उन में लगने वाली स्वर संख्या भी भिन्न हैं, और उस में प्रत्येक के नाम भी अलग अलग हैं, किन्तु उनमें लगने वाले विकृत स्वर अवश्य एक हैं। ऐसे सारे रागों को भाई भाई समझ कर, उन में आने वाले विकृत स्वर उस के पिता है, इस कल्पना द्वारा, उन विभिन्न स्वरों के उत्पादन कर्ता का नाम मालूम करना, अथवा जिससे यह पता चल जाय कि एक पिता के ही ये बच्चे हैं। इसी लिये संगीत शास्त्र में एक पद्धति बनाई गई है। हमें आज यही मालूम करना है कि इस पद्धति का नाम क्या है, और इस राग के उत्पादन को कैसे पहचानना चाहिये।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन- थाट या मेल-	हम ने यह जान लिया है कि संगीत में कितने स्वर होते है। इन बारह स्वरों में, प्रत्येक बार विभिन्न शुद्ध-विकृत सात स्वरों के मूल क्रमानुसार की हुई केवल आरोही स्वर रचना, को थाट या मेल कहते हैं। इस प्रत्येक थाट के अलग अलग विकृत स्वरों पर से रागों का विभाजन किया जाता है। जिस प्रकार हर भाइयों के सम्पूर्ण नाम में उन के पिता के नाम का साम्य होता है, उसी के द्वारा हम यह समझ जाते है कि इन चारों लडकों का पिता कौन हो सकता है। इसी प्रकार जिस जिस राग में थाटों के विकृत स्वर होंगे वे सारे राग उसी थाट के होंगे।	थाट या मेल:- बारा शुद्ध-विकृत स्वरों में से, सात स्वरों की (प्रत्येक समय अलग अलग) मूल क्रमानुसार आरोही रचना, जिस के द्वारा रागों का वर्गीकरण किया जा सकता है; ऐसी स्वर रचना को थाट या मेल कहते हैं। (थाट में अवरोह नहीं होता, इसी लिये वह रंजक नहीं होता।)

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन

यह मैं विद्यार्थियों को अच्छी तरह समझा दूंगा। हमें अब यह देखना है कि यह किस प्रकार होता है, इस की जानकारी नीचे दे रहा हूं।

पं. व्यंकटमखी के थाट–

पूर्व समय में पं. व्यंकटमखी नामक संगीत शास्त्रज्ञ ने गणित की सहायता से ७२ थाट तय्यार किये थे। उन्ही बहत्तर थाटों में रागों का वर्गीकरण किया जाता था। किन्तु वर्तमान समय में पं. वि. ना. भातखण्डे ने एक ऐसी पद्धति तय्यार की है जिस में थाट संख्या कम करते हुये भी उस में सारे रागों का समावेश ही किया जा सकता है। भातखण्डे जी की यह सरल थाट-पद्धति आज हर जगह प्रचिलत है। इस पद्धति के अनुसार हमें देखना चाहिये, कि वे दस थाट कौन से हैं, और उन में प्रत्येक के स्वर क्या हैं। अब आप लोग संगीत के बारहों स्वर अच्छी तरह पहचाने लगे हैं। मैं हर बार एक आरोह (७ स्वर) तानपूरे पर गाता हूं। आप लोग बताइये इस में कौन कौन से शुद्ध विकृत स्वर हैं। बाद में मैं उसे तख्तास्याह पर लिख दूंगा" – यह कहकर प्रथम शुद्ध स्वरों के बिलावल थाट के स्वर में गाऊंगा और विद्यार्थिओं से स्वर पहचानने को कहूंगा – उत्तर आने पर तख्तास्याह पर लिख दूंगा – और इस के सामने कोष में उस थाट के स्वर लिख दूंगा। तत्पश्चात एक एक विकृत स्वरवालें, कल्याण और खमाज थाट के स्वर, फिर दो दो विकृत स्वरवाले थाट

पं. भातखंडे के थाट–

दस थाट और उनका वर्णन

थाट का नांव	थाट के स्वर	थाट का वर्णन
बिलावल थाट	सा रे ग म प ध नी सां	सब स्वर शुद्ध
कल्याण थाट	सा रे ग मं प ध नी सां	१ विकृत स्वर(मं तीव्र; बाकी स्वर शुद्ध)
खमाज थाट	सा रे ग म प ध नी॒ सां	१ विकृत स्वर(नी॒ कोमल; बाकी स्वर शुद्ध)
काफी थाट	सा रे् ग म प ध् नी सां	२ विकृत स्वर(रे् ध् कोमल; बाकी स्वर शुद्ध)
भैरव थाट	सा रे ग् म प ध नी॒ सां	२ विकृत स्वर (ग् नी॒ कोमल; बाकी स्वर शुद्ध)
मारवा थाट	सा रे् ग मं प ध नी सां	२ विकृत स्वर(रे् कोमल, मं तीव्र; बाकी स्वर शुद्ध)
आसावरी थाट	सा रे ग् म प ध् नी॒ सां	३ विकृत स्वर(ग्, ध्, नी॒ कोमल; बाकी स्वर शुद्ध)
पूर्वी थाट	सा रे् ग मं प ध् नी सां	३ विकृत स्वर(रे् ध् कोमल मं तीव्र बाकी स्वर शुद्ध)
तोडी थाट	सा रे् ग् मं प ध् नी सां	४ विकृत स्वर(रे्, ग्, ध् कोमल, म तीव्र; बाकी स्वर शुद्ध)
भैरवी थाट	सा रे् ग् म प ध् नी॒ सां	४ विकृत स्वर (रे् ग्, ध्, नी॒ कोमल बाकी स्वर शुद्ध)

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	के स्वर (काफी, भैरब, मारवा), बाद में तीन तीन विकृत स्वरयुक्त आसावरी और पूर्वी थाट के, और अन्त में तोडी और भैरवी थाट के स्वरों को क्रमानुसार पहले गाकर, फिर तख्तास्याह पर लिख दूंगा। उन के सामने कोठे में थाटों के वर्णन और विकृत स्वरों की संख्या लिख दी जायगी।	
बिलावल-थाट–	इस प्रकार जिस राग में सारे स्वर शुद्ध होते हैं, वे सब बिलावल थाट के राग समझे जायें गे।	
कल्याण-थाट–	जिस राग में मध्यम तीव्र और बाकी के स्वर शुद्ध होते हैं, उन्हे कल्याण थाट के राग समझने चाहिये।	
खमाज थाट–	"खमाज थाट के रागों की क्या पहचान है ?" विद्यार्थियों से इस प्रश्न का उत्तर पूछ लूंगा – जब मैं जान जाऊंगा कि विद्यार्थी ठीक ठीक उत्तर दे रहे हैं तो नीचे लिखे ढग से पूछूंगा।	
काफी थाट–	काफी थाट वाले रागों की पहचान क्या है।	
भैरव थाट–	भैरव थाट के राग की पहचान बताओ ?	
मारवा थाट–	कैसे मारवा थाट के राग पहचानोगे ?	
आसावरी थाट–	आसावरी थाट के सारे रागों की क्या विशेषता है ? (अर्थात आसावरी थाट के रागों की पहचान)	
पूर्वी थाट–	पूर्वी थाट के रागों की पहचान क्या है?	
तोडी थाट–	तोडी थाट के सारे रागों में क्या साम्य है ? (अर्थात तोडी थाट के रागों की पहचान)	

निम्न लिखित राग के स्वरों पर उनके थाट पहचानिये।

आरोह– सा रे म प ध सां
अवरोह– सां ध प म रे सा } –?

आरोह– सा रे ग म॑ प ध नी सां
अवरोह– सां नी ध प म॑ ग रे सा } –?

आरोह– सा रे म प नी सां
अवरोह– सां नी् ध प म ग रे सा } –?

आरोह– सा ग् म प नी् सां
अवरोह– सां नी् ध प म ग् रे सा } –?

आरोह– सा रे् ग म प ध् नी सां
अवरोह– सां नी ध प म ग रे् सा } –?

आरोह– सा रे् ग म॑ ध नी सां
अवरोह– सां नी ध म॑ ग रे् सा } –?

आरोह– सा रे म प ध् सां
अवरोह– सां नी् ध् प म ग् रे सा } –?

आरोह– सा ग म॑ प ध् नी सां
अवरोह– सां नी ध् प म॑ ग मग म॑ गरेसा } –?

आरोह– सा ग् म॑ प नी सां
अवरोह– सां नी ध् प म ग् रे् सा } –?

आरोह– सा रे् ग् म प ध् नी् सां
अवरोह– सां नी् ध् प म ग् रे् सा } –?

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
भैरवी थाट–	भैरवी थाट के राग कैसे पहचाने जायेंगे ? "अब बताइये कि रागों के थाट पहचानने का आधार क्या है" ? इस के बाद प्रत्येक थाट में एक एक राग के (राग का नाम न बता कर) केवल आरोहावरोह तख्तास्याह पर लिख कर, उस राग के स्वरों की सहायतासे मैं पूछूंगा कि, "किस थाट में यह राग आयेगा ? इस से मुझे पता चल जायगा कि विषय अच्छी तरह समझ में आ गया है।	
उपसंहार–	इस तरह हम ने सीख लिया कि थाट किसे कहते हैं, भातखण्डे जी के दस थाट कौन से हैं, उन में स्वर कौन कौन से लगते हैं, राग के थाट पहचाने का ढंग क्या है, इत्यादि सारी बातें हर एक के समझ में अच्छी तरह आ गई हैं।	
आवृत्ति–	जरा बताइये तो – (१) थाट किसे कहते हैं ? (२) आज के मुख्य थाट कितने हैं ? (३) किस तरह राग के थाटों की पहचान की जाती है ? (४) एक ही थाट से पैदा होने वाले अनेक रागों में किस प्रकार का साम्य होता है ?	
गृहपाठ–	'राग' और 'थाट' में क्या फर्क है ? थाटों का संगीत में क्या उपयोग है ? इन दोनो के जवाब घर से लिख कर लाइये।	
विरक्षक की सूचना–		

पाठ नं. १० विषयक

विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में रागों के मुख्य और उप वर्ग (जाति) समझाये गये। आज थाट का अर्थ, उनकी संख्या, तथा उनकी पहचान पर प्रकाश डाला गया। हम ने पूर्वज्ञान में यह मान लिया कि विद्यार्थियों को शुद्ध विकृत स्वर, राग और उसके सम्बन्ध में सारी जानकारी है। प्रस्तावना करते समय एक विद्यार्थी का संपूर्ण नाम पूछा गया, उस के कितने भाई हैं, यह भी पता लगाया, मेरा उद्देश यह था कि सगे भाईयों का नाम बताने में हर एक के नाम के आगे उस के पिता का नाम बताया जाता है (महाराष्ट्र में पुत्र के नाम में पिता का नाम जुड़ा रहता है) इसी कारण उन्हे मालूम हो जाता है कि वे सब एक ही घराने के हैं। यह पता लगाने के लिये मैं ने उनसे प्रश्न किया कि "दूसरों को यह कैसे पता चले गा कि तुम सब एक ही पिता की संतान हो?" उत्तर में उन्हो ने बताया कि "हर एक के नाम के साथ हजारे पिता का नाम जुड़ा है"। इसी का आधार लेकर हेतु कथन में ने बताया कि "संगीत में भी ऐसे अनेक राग है जिनके नाम अलग अलग, आरोहावरोह अलग अलग, यहाँ तक कि राग में स्वर संख्या भी अलग हो सकती है, किन्तु उनमें लगने वाले विकृत स्वर एक प्रकार के होते हैं। जिस तरह चारों भाईओं के नाम, स्वभाव, ऊंचाई, शरीर की बनावट अलग अलग होते हुये भी कोई एक बात ऐसी होती है जो उन के पिता जैसी होती है। उसी प्रकार अनेक रागों में सब कुछ अलग होते हुये भी विकृत स्वर एक जैसे होते हैं। ये सारे राग भाईयों के समान और विकृत स्वर पिता जैसे हैं। जिस तरह विकृत स्वरों के द्वारा उन के उत्पादक का नाम समझा जा सकता है, उसी प्रकार एक पिता के कितने बच्चे हैं, यह समझने के लिये, संगीतशास्त्र में एक विशेष पद्धति बनाई गई है। आज हमें यही समझना है कि वह पद्धति क्या है, और उस राग के उत्पादक की पहचान कैसे की जा सकती है।

प्रस्तावना और हेतु कथन के पश्तात, थाट या मेल सिखाने के लिये, मैंने उन के स्वर सम्बन्धी पूर्वज्ञान पर एक प्रश्न पूछ कर थाट की व्याख्या कर दी, फिर थाट का थोडा पूर्व इतिहास, अर्थात पं. व्यंकटमखी के ७२ थाटों का वर्णन कर के पं. भातखण्डे की उस पद्धति की जानकारी भी दी जिस से थाटों की संख्या कम हो कर केवल १० रह जाती है, उन्हीं दस थाटों में लगभग प्रत्येक रागों का समावेश हो जाता है। प्रचलित होने के कारण आज हमे इन थाटों के विषय में जानना आवश्यक है। विद्यार्थियों के स्वरज्ञान का फायदा उठा कर दसों थाट के स्वर पहले में गाता गया और विद्यार्थियों से पूछता गया कि इस में शुद्ध विकृत स्वर कौन कौन से हैं। साथ ही तख्तास्याह पर लिखता गया। प्रत्येक थाट के स्वरों के आगे, कोष्टक में उन थाटों का वर्णन, अर्थात उनके विकृत और विकृत स्वरों की संख्या भी लिखता जाता था इस के कारण थाटों की विशेषता विद्यार्थियों की समझ में फौरन आ जाती है। दसों थाट, उनके नाम, तथा उन के स्वरों की जानकारी देने के बाद थाटों का उपयोग; दस थाट के रागों का वर्गीकरण करने की रीति सिखाने के लिये मैं ने उन्हे समझाया कि "जिस राग के सारे स्वर शुद्ध होते हैं उन्हे बिलावल थाट का राग समझना चाहिये। इसी प्रकार बिलावल थाट के रागों का एक गुट किया जाता है। कल्याण थाट में भी इसी तरह उन रागों को समझना चाहिये जिन में तीव्र मध्यम और बचे हुये सारे स्वर शुद्ध होते है। अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं ने कहा कि दस थाटों में प्रत्यक थाट कें जो जो विकृत स्वर होते हैं, वे ही विकृत स्वर जिस जिस राग में होंगे, उस रागों को भी उन्ही थाटों के अन्तर्गत समझना चाहिये। रागों का थाट निश्चित करने के लिये हमें जान लेना

चाहिये कि स्वर संख्या, अथवा वर्जित स्वर का ध्यान न रख कर, केवल उस थाट के विकृत स्वर जिन रागों में होंगे वे सब के सब उसी थाट में गिने जायें गे। थाटों का उपयोग रागों के वर्गीकरण के लिये किया जाता हैं। " विकृत स्वरों की एकरूपता पर ही थाटों की पहचान की जाती है, यह बात भली भांति समझा दी। यह विषय अच्छी तरह समझा देने के लिये प्रत्येक थाट के एक एक राग के केवल आरोहावरोह मैं ने (रागों का नाम न बताते हुये) लिख दिये और प्रश्न किया कि " यह किस थाट का राग होगा ?" मैं ने जिन रागों के आरोहावरोह तख्ताख्याह पर लिखे उन में :-

१	बिलावल थाट का	——	दुर्गा राग था
२	कल्याण थाट का	——	यमन या कल्याण राग था
३	खमाज थाट का	——	देस राग था
४	काफी थाट का	——	भीमपलासी राग था
५	भैरव थाट का	——	भैरव राग था
६	मारवा थाट का	——	पूरिया राग था
७	आसावरी थाट का	——	आसावरी राग था
८	पूर्वी थाट का	——	परज राग था
९	तोडी थाट का	——	मुल्तानी राग था
१०	भैरवी थाट का	——	भैरवी राग था

ऊपर दिये हुयें रागों के नाम विद्यार्थियों को मालूम न थे आज उनके नाम बताने की जरुरत भी न थी। हमें तो सिर्फ यह देखना था कि उन रागों के विकृत स्वरों के आधार पर विद्यार्थियोंको थाट की अच्छी तरह पहचान हो गई है या नहीं। तत्पश्चात उपसंहार करके विषय दुहराते समय उस से सम्बन्धित ३, ४ सवाल पूछे। गृहपाठ में राग और थाट का फ़र्क, तथा संगीत में थाट की उपयोगिता, घर से लिख कर लाने के लिये कहा।

१ " राग में आरोह अवरोह के दोनो भाग, किन्तु थाट में केवल आरोह रहता है, इसी कारण राग में रंजकता होती है, लेकिन थाट में न तो रंजकता होती होती है न गया बजाया जा सकता है "।

२ " राग में ५, ६ या ७ स्वर हो सकते हैं, (वे सरल या वक्र भी हो सकते हैं।) थाटों में सात स्वर लगते हैं, और वह भी उन के मूल क्रमानुसार (सरल) होते हैं।" थाट का उपयोग :- यह रागों का उत्पादन होता है। विभिन्न स्वर संख्या, तथा आरोहा-वरोह वाले रागों में केवल विकृत स्वरों के आधार पर वर्गीकरण करना थाट का ही काम हैं। गृहपाठ देने का उद्देश मेरा यही था कि ऊपर लिखे हुये उत्तर विद्यार्थियों की रतफसे आयें। इस प्रकार निश्चित समय में विषय सिखला दिया गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १२ वाँ

पाठ का क्रमांक :- ११ वाँ (दिन- मास- सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा :- संगीत शाला का प्रथम वर्ष-

विषय :- (उप विषय सहित) राग-दुर्गा (राग की जानकारी तथा स्वर विस्तार)

सामान :- तानपूरा अथवा हार्मोनियम, खडिया मिट्टी,

पूर्वज्ञान :- दसों थाट, रागों के वर्ग तथा वर्जित स्वर, वादी संवादी, शुद्ध विकृत आदि स्वर क्या होते हैं, यह विद्यार्थी जानते हैं।

प्रस्तावना :- हम ने पिछले घंटे में राग के विषय में सीखा। जरा बताइये राग किसे कहते हैं ? राग तय्यार करने के लिये किन आवश्यक बातों का होना जरुरी है।

पूर्वज्ञान :- आज हमें इसी प्रकार, राग सम्बन्धी सारी बातों को समझना है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति - (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन - (१) राग-दुर्गा-	आज हमें राग दुर्गा के विषय में गायन अथवा वादन सम्बन्धी सारी बातें सीखनी हैं। हमें जो राग गाना या बजाना है उस के विषय में पहले ही सारी बातें भली भांति जान लेना बहुत जरुरी है। क्यों कि बिना इसके गाते बजाते समय हमनें आत्मविश्वास नहीं रहेगा। ये बातें बता कर, मैं विद्यार्थियों से कहूँगा कि "आज हमें इस राग के बारे में सब कुछ जान लेना है। फिर उन के पूर्वज्ञान सम्बन्धी कुछ सवाल पूछूंगा। (१) राग और थाट में क्या फर्क है ? इस के उत्तर के आधार पर, तख्तास्याह पर राग दुर्गा का आरोह तथा अवरोह लिख दूंगा। उस लिखे हुये आरोहावरोह पर विद्यार्थियों को ध्यान देने के लिये कह कर निम्नलिखित प्रश्न पूछूंगा।	**राग-दुर्गा** आरोह- सा रे म प ध सां अवरोह- सां ध प म रे सा यह राग बिलावल थाट से पैदा होता है। इस ओढव वर्गीय राग में गंधार और निषाद वर्जित हैं। इस राग के सारे स्वर शुद्ध है। वादी स्वर धैवत, और संवादी स्वर रिषभ है। इस राग का विस्तार, मंद्र और मध्य सप्तक में अधिकतर होता है इसी लिये यह शान्त प्रकृति का राग माना जाता है। इसे रात के दूसरे प्रहर में गाते हैं।
(२) हेतु प्रश्न-	(१) इस राग में कौन कौन से शुद्ध विकृत स्वर तुम्हे दिखाई पडतें हैं ? (२) जिसके सारे स्वर शुद्ध हों ऐसे थाट का नाम क्या है ? (३) यह राग किस थाट में आयेगा ?	**रागा की पकड** रेमपध मपधऽ, सरेऽ धऽसा.

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	विद्यार्थियों से इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लेने के पश्चात, क्रमश: रागों की जानकारी धीरे धीरे तख्तास्याह पर लिखना शुरु कर दूंगा। फिर कुछ ऐंसे प्रश्न पूछूंगा जिससे यह पता चल जाय कि विद्यार्थी राग का वर्ग बता सकेंगे। उदाहरणार्थ :– (१) हम किस आधार पर रागों का वर्ग निश्चित करते हैं ? (२) इस राग के आरोह तथा अवरोह में कितने कितने स्वर हे ? (३) तो फिर यह राग किस वर्ग में आये गा ? इन सवालों का जवाब मिलने के बाद, उन के बारे में एक एक वाक्य तख्तास्याह पर लिख दूंगा। तत्पश्चात इस राग के शुद्ध–विकृत–स्वर सम्बन्धी वाक्य लिखने के लिये में फिर एक प्रश्न उन से पूछूंगा। प्रश्न :– आप ने बताया कि यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता हैं, किन्तु में आप से पूछना चाहता हूँ कि इस राग के सारे स्वर किस प्रकार हें ? इस प्रश्न के बाद में स्वयं बताऊँगा कि इस राग के वादी संवादी स्वर कौन से हें, राग का विस्तार, सप्तक, प्रकृति, गाने का समय, आदि के विषय में में अच्छी तरह समझा दूंगा और तख्तास्याह पर लिख दूंगा। फिर नीचे लिखे ढंग से राग की पकड, उस के मुख्य अंग के बारे में भी बताऊँगा।	**रागा विस्तार** सा, सा, ध़ऽसा, साध़ऽप, ध़ऽसा, ध़सारेऽध़ऽसा, ध़सारेमरेऽ, ध़ऽसा; साऽ रेमपध मपधऽप, मपधऽ मरेऽ ध़ऽसा, रेमपध मपधऽ पम, मपधसांऽ ऽसांऽ, धसांरें ऽधऽसां, धसांरेंमंरेंऽधऽसांऽ सांधऽप, मपधसांऽधसांऽधऽप, रेमपध मपधऽ मपधऽ मरेऽ, ध़ऽसा.
(३) राग की पकड अथवा राग का मुख्य अंग –	राग में लगने वाले कम से कम और मुख्य स्वर जिन से राग का स्वरूप समझ में आ जाय, राग की पकड कहलाते हें। यह बताने के बाद राग का विस्तार करने के लिये में उन्हे नीचे लिखी बातें बताऊँगा।	
(४) राग का विस्तार–	राग का स्वर विस्तार करते समय, उसके आरोह अवरोह में आने वाले स्वरों का क्रम, वादी–संवादी	

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	स्वर, राग के विस्तृत सप्तकादि बातों का विशेषत: ध्यान रखना पड़ता है। आरोह अवरोह के एक एक दो दो स्वर क्रम सें लेते लेते, और उन में मुख्य स्वरों को महत्व देते हुये, स्वर विस्तार करना चाहिये। उस के उदाहरण में तख्तास्याह पर लिख दूंगा। और उसी के अनुसार में थोडे स्वर गाता या बजाता जाऊँगा। विद्यार्थियों से कहूँगा कि वे मेरा अनुकरण करें।	
(५) उपसंहार–	आज हम ने इस प्रकार राग दुर्गा सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी, प्राप्त कर ली और स्वर विस्तार भी सीख लिया। दूसरे घंटे में मैं आप को इस राग की एक चीज भी सिखाऊँ गा। तख्तास्याह साफ कर, पाठ दुहराने के लिये निम्न लिखित प्रश्न लिख दूंगा :–	
(६) आवृत्ति–	१) दुर्गा राग का आरोह अवरोह क्या है ? (गा कर या बजाकर दिखाइये) २) किस थाट से यह राग उत्पन्न होता है ? क्यों कर ? ३) दुर्गा राग का वर्ग क्या है ? इस का निश्चय कैसे करेंगे ? ४) राम दुर्गा के वादी सवादी स्वर कौन से हैं ? ५) विस्तार सप्तक कौन से हैं ? ६) इस राग की प्रकृति कैसी है ? ७) किस समय यह राग गाया जाता है ? ८) इस राग की पकड बताइये। ९) स्वर विस्तार करते समय किन मुख्य बातों का खयाल रखना पड़ता है ?	
(७) गृहपाठ–	इस राग की आवश्यक बातें, तथा स्वर विस्तार घर से अच्छी तरह याद कर के आइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. ११ विषयक
विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में पंडित भातखंडे के १० थाटों के विषय में बतलाया गया। इन दस पाठों में प्राथमिक बातें सिखाने के साथ साथ विभिन्न रागों की चीजें सिखाने के लिये पूर्व-तय्यारी कर ली गई। अब केवल आरोह अवरोह के आधारपर राग का थाट, राग का वर्ग, वर्जित स्वर, शुद्ध विकृत स्वरादि के विषय में विद्यार्थियों को पूरी जानकारी हो चुकी है।

आज के पाठ में राग दुर्गा का वर्णन तथा विस्तार लिया गया है। पाठशाला के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये चूंकि यह राग लिया गया है इसलिये सर्व प्रथम राग का विस्तार ही सिखाया गया।

संगीत के १२ स्वर, वादी, संवादी तथा वर्जित स्वर, राग, राग का वर्ग, दसों थाट और उन के स्वरों की जानकारी विद्यार्थियों को पहले से ही है। इसी को उन का पूर्व ज्ञान समझ कर प्रस्तावना करते समय मैं ने उन से पूछा कि "राग का क्या अर्थ है ?" जो राग मुझे सिखाना था उस का नाम मैं ने बता कर तख्तास्याह पर लिख दिया। राग सीखने के पहले उस के बारे में सारी बातें जान लेनी चाहिये इसी लिये शुरु में ही दुर्गा राग के विषय में सारी बातें बता दी। इस के पहले पूर्व ज्ञान संबंधा में ने पूछा कि "राग और थाट में क्या फर्क है ?" इस प्रश्न के द्वारा मैं जानना चाहता था कि विद्यार्थियों के ध्यान में आरोह तथा अवरोह नामक रागों के दोनो भाग भली भांति हैं अथवा नहीं। समाधान कारक उत्तर पाने के बाद दुर्गा राग का आरोह अवरोह मैं ने तख्तास्याह पर लिखा दिया। फिर मैं ने तीन प्रश्न पूछे। उन में पहला यह था कि "इस राग में तुम्हे कौन कौन से शुद्ध, विकृत स्वर दिखाई पड़ते हैं ?" उन्हो ने जवाब दिया कि "सारे स्वर शुद्ध हैं"। मैं ने पूछा कौन सा थाट है जिसमें सारे स्वर शुद्ध लगते हैं ? "बिलावल थाट" विद्यार्थियों ने जवाब दिया।

राग दुर्गा के थाट संबंधी मेरे प्रश्न पर उन्हों ने उत्तर दिया कि "दुर्गा राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है"। यह वाक्य मैं ने तख्ता स्याह पर लिख दिया। राग का वर्ग जानने के लिये फिर मैं ने तीन सवाल पूछे। "राग का वर्ग निश्चित करने के लिये आधार क्या है ?" उन्हो बताया कि "राग के आरोह अवरोह में लगने वाली स्वर संख्या पर उस का वर्ग निश्चित किया जाता है"।

मेरा दूसरा प्रश्न था "इस राग के आरोह अव-रोह में कितने स्वर हैं" विद्यार्थियों ने बताया "पाँच पाँच"; "फिर यह राग किस वर्ग का हुआ ?" उन्हो जवाब दिया कि "यह राग ओडव वर्गीय है"। मैं इसे भी तख्तास्याह पर लिख दिया। इसी तरह प्रश्नों के द्वारा इस राग के शुद्ध विकृत स्वर भी मैं ने पूछ लिया। जवाब पाटी पर लिख दिया। तत्पश्चात मैं ने खुद दुर्गा राग के वादी संवादी स्वर, विस्तार, सप्तक, प्रकृति तथा गाने का समय विद्यार्थियों को बताया और इसे भी लिख दिया। फिर राग के मुख्यांग अथवा पकड़ के बारे में समझाकर लिख दिया। इस प्रकार राग की संपूर्ण जानकारी के लिये दस बातों का समझ लेना आवश्यक है।

(१) राग का आरोह अवरोह
(२) थाट
(३) वर्ग
(४) वर्जित स्वर
(५) राग के शुद्ध विकृत स्वर
(६) वादी–संवादी स्वर
(७) राग के विस्तार सप्तक
(८) राग की प्रकृति
(९) गाने का समय
(१०) राग की पकड़ अथवा उस का मुख्य अंग

दुर्गा राग का विस्तार सिखाने के लिये, मैं ने समझाया कि विशेषकर आरोहावरोह के स्वरों का क्रम

राग का विस्तार सप्तक, तथा वादी संवादी स्वरों का खयाल रख कर ही विस्तार करना चाहिये। फिर लिख कर मैं ने कहा कि राग के एक एक, दो दो स्वर क्रमानुसार लेते हुये, हर बार मध्य षड्ज पर वापस आकर विस्तार करते जाना चाहिये। स्वर विस्तार भी पाटी पर मैं ने लिख दिया। थोड़े स्वर में गाता गया और उन्हें अनुकरण करने के लिये कहा। तत्पश्चात सब कुछ मिटा कर सिखलाये हुये विषय पर मैं ने ८, ९ सवाल पूछे। और अंत में राग दुर्गा संबंधी सारी आवश्यक बातें घर से भली भांति याद कर लाने को कहा। इस प्रकार निश्चित समय में पाठ समाप्त हो गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लखाक १३ वाँ

पाठ का क्रमांक :– १२ वाँ (दिन– मास– सन १९) समय ४० मिनट

कक्षा :– ५ वीं (संगीत शाला का प्रथम वर्ष) विषय :– (उप विषय सहित) राग दुर्गा की चीज (सताल गाना)

सामान :– तंबूरा, तबला, डग्गा, खड़िया मिट्टी

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थी राग दुर्गा सम्बन्धी सारी बातें समझ चुके हैं। वे हाथ से तीनताल का ठेका भी दे लेते हैं।

प्रस्तावना :– हम ने पिछले घंटे में हम ने दुर्गा राग की विस्तार सहित सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली है। (वर्ग के एक विद्यार्थी को सम्बोध करके) जरा तुम मंद्र सप्तक के पंचम और मध्य सप्तक में रिषभ तक विस्तार कर के दिखाओ। (दूसरे विद्यार्थी से) अब तुम इस के आगे मध्यसप्तक के धैवत तक विस्तार कर दिखाओ। तीसरे विद्यार्थी से – तुम तार सप्तक के मध्यम तक विस्तार करो। चौथे को – तुम अब बचा हुआ सारा विस्तार कर दिखाओ।

हेतु कथन :– इसी राग की एक चीज़ आज हमें सीखनी है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन – १ स्पष्टीकरण–	शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक गीत में 'स्थाई' और 'अन्तरा' दो विभाग होते हैं। गीत के शुरु का भाग 'स्थाई' कहलाता हैं। दूसरे भाग को 'अन्तरा' कहते हैं।	स्थाई :– गीत के प्रथम भाग को 'स्थाई' कहते हैं। (यह बहुधा पूर्व सप्तक से शुरु होती है)
२ अस्ताई– ३ अन्तरा–	'स्थाई' का आरम्भ सप्तक के पूर्व भाग से होता हैं। 'अन्तरा' सप्तक के उत्तर भाग से गाया जाता है। जिन रागों के 'मध्य' तथा 'तार' सप्तक प्रमुख हैं उन की स्थाइयाँ अधिकतर उत्तर सप्तक से शुरु होती हैं। 'ध्रुपद' नामक प्राचीन संगीत शैली में स्थाई – अन्तरा	अन्तरा :– गीत का दूसरा भाग 'अन्तरा' कहलाता है (यह उत्तर सप्तक में गाया जाता है।)
४ आभोग– ५ संचारी–	के अतिरिक्त दो भाग और भी होते हैं। उन्हे क्रमशः 'आभोग' तथा 'संचारी' कहते हैं। यह सारी बातें बताने के बाद में राग दुर्गा की चीज तख्तास्याह पर लिख दूंगा। चीज़ में उपयोग किये जाने वाले क्लिष्ट शब्दों के अर्थ भी मैं समझाता जाऊँगा और लिखता भी जाऊँगा। पहले एक एक पंक्ति, तत्पश्चात सम्पूर्ण चीज का भी अर्थ समझा दूंगा।	आभोग :– दूसरे अन्तरे को आभोग कहते हैं। संचारी :– तीसरा अन्तरा संचारी कहलाता है।

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
स्थाई की पहिली पंक्ति १ झनन झनन झन बाजे पायलिया २ राधा दुलारी चली संग सखियाँ– ३ बिसर गई री सुध सुन मुरलीया	'पायलिया' – झनक झनक आवाज निकलने वाला एक गहना जिसे औरतें पाँव में पहनती हैं। दूसरी पंक्ति का अर्थ यह है कि 'कृष्ण की दुलारी राधिका जो अपनी सहेलियों के साथ चल पडी। 'कृष्ण की बाँसुरी सुन कर राधा को अपने तनमन की सुधि तक नहीं रह गई। यह हुवा तीसरी पंक्ति का अर्थ।	**राग–दुर्गा** **अस्ताई** **ताल–त्रिताल.** झझन झनन झन बाजे पायलिया राधा दुलारी चली संग सखियाँ बिसर गई री सुध सुन मुरलिया बन्सी बजावत बन में कन्हैया व्याकुल ब्रिज के लोग लुगैया
अन्तरे की पहिली पंक्ति १ बन्सि बजावत बन में कन्हैया– २ व्याकुल ब्रिज के लोग लुगैया	अन्तरे का भावार्थ यह है :– "कन्हैय्या बन में मुर्ली बजा रहे हैं, उनकी मुर्ली की धुन सुन कर ब्रिज के सारे निवासी व्याकुल हो उठे।" इस के पश्चात मैं सम्पूर्ण चीज गा कर या बजा कर सुना दूंगा; फिर एक एक पंक्ति गाता जाऊँगा, और उसी प्रकार विद्यार्थियों से गवाता जाऊँगा। यह गीत त्रिताल में है, इसी लिये यह त्रिताल में हुवा।	**अन्तरा** बन्सी बजावत बनमें कन्हैया। व्याकुल ब्रिजके लोग लुगैया ॥१॥
६ शिक्षकों का गायन :–	ताल की गिनती भले ही पहली मात्रा (सम) से होती है। किन्तु यह कोई जरुरी नहीं है कि प्रत्येक गीत सम से शुरु किया जाय। गीत का आरम्भ किसी भी मात्रे से किया जा सकता हैं। किस ताल से गीत शुरु करना उचित है इसका निश्चय रचनाकार ही करता हैं। अभी आप लोग इतना ही ध्यान में रखिये, आप को चीज उसी हिसाब से गानी चाहिये जिस तरह गुरु जी सिखाया हो। चीज की शुरुआत किसी भी मात्रे से क्यों न की जाय किन्तु वह त्रिताल में तभी समझी जायगी जब उस की प्रत्येक पंक्ति १६ मात्रे की होगी। इस के बाद में बताऊँगा कि इस चीज की शुरु-आत खाली से होती है। "त्रिताल में खाली किस मात्रे पर आता है?", "खाली का टुकडा तबले पर कैसे बोला जाता है?" ये प्रश्न पूछने के बाद अपने हाथ से ताल देते हुये मैं चीज बताना शुरु कर दूंगा (पाठ-	**शब्दार्थ** १) पायलिया – पैंजनी, पायल २) दुलारी – लाडली; प्रिय. ३) सखियाँ – सहेलियाँ ४) सुध – होश; देहभान. ५) लोग – लोग. ६) लुगैया – नारियाँ. ७) व्याकुल – विव्हल. ८) ब्रिज – ब्रिंदावन.

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	शाला के विद्यार्थियों को) । किन्तु संगीतशाला के विद्यार्थियों को तबले पर ठेका देते हुये सिखलाऊँगा। मैं सम से ठेका देना यह जानने के लिये पहले शुरु करूंगा कि विद्यार्थियों को खाली से शुरु करना अच्छी तरह आगया है या नहीं। फिर मैं उन से कहूँगा कि "अब आप खाली से चीज गाना आरम्भ कीजिये।" और इस तरह पूरी चीज उन से गवा लूंगा। विद्यार्थियों को यह भी बता दूंगा कि मैं ने पहले ताल इस लिये बजाना शुरु किया था ताकि मुझे मालूम हो जाय कि आप को ताल का ठीक ठीक अन्दाज हो गया है या नहीं, अन्यथा गाने की बैठकों में गाना पहले शुरु किया जाता है, ताल बाद में दिया जाता है।	
७ उपसंहार–	इस प्रकार दुर्गा राग की एक चीज ताल सहित गाना हम ने सीख लिया।	
८ आवृत्ति–	१) आज की सीखी हुई चीज की शुरुआत किस मात्रे से होती है? २) यह आप कैसे समझ सकते हैं कि इस चीज का ताल "त्रिताल" है। (संगीत शाला के प्रत्येक विद्यार्थी से अलग अलग गवा लूगाँ)	
९ विद्यार्थियों का व्यक्तिगत अथवा सामुहिक गान –	किन्तु पाठशाला के विद्यार्थियों से सामूहिक रूप से गाने को कहूंगा।	
१० गृहपाठ–	घर पर अच्छी तरह मेहनत कर यह चीज बैठा कर लाओ।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १२ विषयक
विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में हम ने दुर्गा राग के संबंध में सारी बातें सीखीं। आज उसी राग में त्रिताल की एक सरल चीज सिखाई गई। प्रस्तावना करते समय राग का थोड़ा थोड़ा विस्तार विद्यार्थियों से मैं ने करा लिया। तत्पश्चात स्थाई, अंतरा, आभोग तथा संचारी की परिभाषायें समझा दीं। साथ ही चीज़ में आने वाले कठिन शब्दों के भावार्थ विद्यार्थियों को समझा दिये गये। एक बार संपूर्ण चीज़ गा कर मैं ने अलग अलग पंक्तियाँ गा कर सुनाई और विद्यार्थियों को भी वही करने के लिये कहा। " यह चीज़ त्रिताल में है " इस का अर्थ क्या है, यह भली भाँति समझा कर मैं ने बताया कि चाहे ताल का अर्थ क्या है; यह भली भाँति समजा कर मैं ने बताया कि चाहे ताल का आरंभ भले ही सम से किया जाय, किंतु गीत के लिये यह आवश्यक नहीं है। ताल की किसी भी मात्रा से चीज का आरंभ हो सकता है। केवल ध्यान यह रखा जाता है कि प्रत्येक पंक्ति एक निश्चित मात्रा के भीतर बैठनी चाहिये।

मैं ने बताया कि दुर्गा की यह चीज़ खाली से शुरु होती है। विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान संबंधी दो चार प्रश्न पूछने के बाद हाथ से ताल दे कर मैं ने चीज सिखाई। संगीत शाला के विद्यार्थियों के लिये मैं ने तबले पर पहले त्रिताल का ठेका लगाया। मैं देखना चाहता था कि विद्यार्थी खाली से चीज़ की शुरुआत कर सकते हैं या नहीं। ठेका बजाते बजाते ही मैं ने उन्हे खाली से चीज़ शुरु करने का आदेश दिया। उन्हों ने शुरुआत ठीक की। मैं ने अंत में उन्हें समझाया कि मैं ने केवल परिक्षा लेने के लिये ही ऐसा किया, नहीं तो पहले गाना शुरु किया जाता है बाद में तबला। इस के पश्चात मैं ने पूरे पाठ की आवृत्ति ली। आवृत्ति संबंधी प्रश्न पूछने के बाद मैं ने सामूहिक रूप से विद्यार्थियों से राग की चीज़ गवा ली। अंत में मैं ने गृहपाठ के लिये विद्यार्थियों से कहा कि उन्हे इस राग की चीज, अच्छी तरह मेहनत करके घर पर तय्यार कर लेना चाहिये। गृहपाठ देने के पश्चात पाठ समाप्त हो गया।

राग दुर्गा के चीज की ताल अच्छी तरह समझ में आ जाय इसीलिये उसकी स्वर लिपि नीचे दी गई है।

— स्वर लेखन —

राग – दुर्गा

ताल – त्रिताल

अस्ताई

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धी	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
–	–	–	–	–	–	–	–	झ	न	न	झ	न	न	झऽ	नऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	ध	सा	सा	रे	म	म	पध	मप
बा	ऽ	जे	पा	य	लि	या	ऽ	रा	ऽ	धा	दु	लाऽ	ऽऽ	री	ऽ
ध	ऽ	^{प}म	म	रे	रे	सा	ऽ	सा	रे	म	म	पध	मप	ध	ऽ
चऽ	लीऽ	स	ग	स	खि	या	ऽ	बि	स	र	ग	ई	री	सु	ध
धसां	रेंसां	ध	म	प	प	प	ऽ	ध	सां	रें	सां	ध	प	म	प
सु	न	मु	र	ली	ऽ	या	ऽ								
सां	ध	म	म	रे	ऽ	सा	ऽ								

अंतरा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
–	–	–	–	–	–	–	–	बं	ऽ	सि	ब	जा	ऽ	व	त
–	–	–	–	–	–	–	–	म	ऽ	प	ध	सां	ऽ	सां	सां
ब	न	मे	क	न्है	ऽ	या	ऽ	ब्या	ऽ	कु	ल	त्रि	ज	के	ऽ
ध	सां	रें	सां	ध	ऽ	म	ऽ	सां	रें	मं	रें	सां	ध	म	प
लोऽ	ऽऽ	गऽ	लुऽ	गै	ऽ	या	ऽ								
मप	धसां	धसां	धप	म	रे	सा	ऽ								

—— ——

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १४ वाँ

पाठ का क्रमांक :- १३ वाँ (दिन– मास– सन १९) **समय ४० मिनट**

कक्षा – ५ वीं; संगीत शाला का प्रथम वर्ष

विषय – (उपविषय सहित) 'तान' का अर्थ समझाने के पश्चात तानों के प्रकार तथा दुर्गा राग की चीज की तानें बताना।

सामान – तानपूरा, खड़िया मिट्टी

पूर्वज्ञान – विद्यार्थी 'गुना' का अर्थ जानते हैं। राग दुर्गा की चीज ताल में गा सकते हैं।

प्रस्तावना – तुम ने पहाडा सीखा है – दो का दूना कितना हुवा? दो चौके कितने? चार दूने कितने? अर्थात चार की संख्या दो को कितने गुनी है? आठ की संख्या दो की कितनी गुनी है?

हेतुकथन – आज हमे यही सीखना है कि इस तरह अलग अलग गुणा करने से स्वर कैसे हो जाते हैं, उसे गाया कैसे जाता है, और उसका नाम क्या है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन (१) तानें –	गीत की तालों में मूल लय, जब अलग अलग 'गुनों' में बाँट कर उस राग के स्वर या आकार में गाई जाय तो उसे उस राग के स्वर या संगीत में तान कहते हैं। राग विस्तार, आलाप और तानें, संगीत के महत्व-पूर्ण अंग हैं। इन के द्वारा गाने में सौन्दर्य तथा रंजकता उत्पन्न होती है। ये तानें सवा गुनी, डेढ़ गुनी, पौने दो गुनी, ढाई और तीन गुनी आडी लयों में भी गाई जाती हैं। तानों के प्रकार अनेक हैं, किन्तु में उन्हे बताऊंगा कि मुख्य प्रकार पाँच ही हैं, और निम्न-लिखित रीतिसे उन्हे समझा दूंगा।	तान :– गीत की तालों में मूल लय, जब अलग अलग 'गुनों' में बाँट कर उस राग के स्वर या आकार में गाई जाय तो उसे तान कहते हैं। तानों के पाँच प्रकार
(२) अलंकारिक तानें –	जो तानें राग के आरोहावरोह में लगने वाले स्वरों के **विशेष क्रम** को कायम रखते हुये गाई जाती हैं, उन्हे अलंकारिक तानें कहते हैं। उदाहरण-स्वरूप में उन्हे राग दुर्गा की, सारेमप, रेम पध, म प ध सां, पधसांरें, सां ध प म, रेसा ध सा, तान सुना दूंगा।	(१) **अलंकारिक तान**– जो तानें आरोहावरोह में लगनेवाले स्वरों के विशेष क्रम को कायम रख कर गाई जाती हैं। उदा० :– सारेमप, रेमपध, मपधसां, पधसांरें, सांधपम, रेसाधसा.
(३) सरल तान–	राग में आरोह अवरोह के स्वरों का मूलक्रम न तोड कर (तीनों सप्तक के स्वर भी लग सकते हैं) जो तानें गाई जाती हैं उन्हे 'सरल तान' कहते हैं–	(२) **सरल तान**– आरोहावरोह का मूल क्रम न तोडकर गाई जानेवाली तानें सरल तान कहलाती हैं।

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तस्याह (पाटी) लेखन
	जैसे राग दुर्गा में सारे म प ध सांरें मां, रेंसांधपमरेसा इत्यादि –	उदा० :– सारेमपधसां रें मं रें सां धप मरेसाऽ.
(४) मिश्र तान–	राग में आरोह अवरोह के स्वरों को एक साथ गूंथ कर गाना– मिश्रतान हो जायगी– उदाहरण :– सा रे म प ध प, म प ध सां प, धसां रें रें सां, ध सं ध प म रे सा, इत्यादि राग दुर्गा की मिश्र तान है। इस तान में सा रे म प स्वर आरोह के हैं या अवरोह के ? धप स्वर कैसे हैं ? धंसांरेंम अथवा रें सं स्वर किसके हैं ? आरोह अवरोह के स्वर मिला कर गाये जाते हैं इसी लिये इन्हे मिश्र तान कहते हैं।	(३) मिश्र तान– आरोह अवरोह के स्वरों को एक साथ गूंथ कर गाने से मिश्रतानें कहलाती हैं। उदा० :– सारेमपधप, मपधसां धप, धसांरेंम रेंसां, धसांधपमरे साऽ.
(५) कूट तान –	इन तानों में किसी प्रकार का स्वरक्रम नहीं निभाया जाता। तीनों सप्तक के नजदीक के, दूर के, कहीं के भी स्वरों को मिला कर ये तानें ली जाती हैं। उदाहरणार्थ :– सा रे मरे साऽ, सां रें म रें सां ऽ, ध सा धप धप मप धप मप मरे मरेसा इत्यादि दुर्गा राग की कूटतानें हैं।	(४) कूट तान– इन में कोई स्वरक्रम नहीं होता। तीनों सप्तक के किसी भी स्वर को मिला कर गाना। उदा० :– सारेमरेसाऽ सांरेंमरेंसांऽ धसां धप धप मपधप मप मरे मरे साऽ.
(६) बोलतान–	गीत के (पक्तियों की) अक्षरों को घुमाफिरा कर गाना, यही ‘ बोलतान ’ है। उदाहरण के लिये मैं राग दुर्गा की एक बोलतान ले कर सुना दूंगा। तान का यह प्रकार किंचित जटिल है, इस लिये अभी सिर्फ बोलतान का अर्थ समझा कर प्रयोग द्वारा गा कर दिखा दूंगा। तानों के ये प्रकार समझाने के पश्चात राग दुर्गा के त्रिताल की वह चीज जो विद्यार्थियों को सिखाई जा चुकी है, स्थाई अन्तरा के साथ, केवल दुगुन की तानें तख्तास्याह पर लिख दूंगा। उन में स्थाई की पहली तीन तानें आधे आधे आवर्तन की, और आगे की दो तथा अन्तरे की तीन तानें एक एक आवर्तन, अर्थात इस प्रकार आठ तानें मैं पाटी पर लिख	(५) बोल तान– गीत की पक्तियों को घुमाफिरा कर गाने से बोलतानें पैदा होती हैं। राग–दुर्गा ताल–त्रिताल अस्ताईच्या ताना (१) झनन झनन झन :– धप मप धप मप धसां धप मरे साऽ. (२) झनन झनन झन :– धसां धप धप मप धप मरे सारे साऽ.
(७) हेतु–प्रश्न–	दूंगा और नीचे लिखे हुये प्रश्न पूछूंगा (१) त्रिताल का एक आवर्तन कितनी मात्रा का होता है ? (२) आधा आवर्तन कितनी मात्रा का होगा ? (३) अब पाटी की ओर देखिये ओर बताइये कि पहली तीन तानें कहां से	

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तरुतास्याह (पाटी) लेखन
	गानी चाहिये ? (४) अपने गीत की शुरुआत किस मात्रा से है ? (५) गीत की प्रत्येक पंक्ति कितने मात्रे की है ? (६) यानी कितने आवर्तनों की है ? (७) अब बताइये कि प्रथम पंक्ति के शब्दों में आधे आधे आवर्तन में कौन कौन से शब्द आयेंगे ? इस के बाद में विद्यार्थियों को बताऊंगा कि आज हम फिलहाल दुगुनी लय की ही तानें सिखानी हैं। मैं उन से कुछ और भी सवाल पूछूंगा। (१) बोलिये, तान गाते समय एक मात्रा में कितने स्वर आयेंगे ? (२) आधे आवर्तन की तान में कितने स्वर आयेंगे ? स्पष्ट रूप से समझाने के लिये मैं उन्हे बताऊंगा कि हर ‿ अर्ध चन्द्र के चिन्ह में आने वाले हर स्वर, एक मात्रा में गिने जाते हैं। तानों में जिस स्वर के आगे ऽ इस प्रकार अवग्रह चिन्ह दिखाया गया है उस का मतलब है कि वह स्वर एक मात्रा में गाना चाहिये। इस चिन्ह के बदले उस राग के नजदीक का स्वर भी चल सकता था, परन्तु गाने की सुविधा के लिये इस चिन्ह का उपयोग किया जाता है। स्वर गिनने समय इस चिन्ह को भी उसी के साथ गिन लिया जाता है, क्यों कि तान में अवग्रह चिन्ह केवल आधी मात्रा का सूचक होता है। अच्छा, अब बताइये:– (१) पहली तीन तानों में कितने स्वर हैं ? (२) तानों के जो प्रकार हम ने सीखे, यह तीसरी तान उन में से कौन से प्रकार में गिनी जा सकती है ? (३) अब चौथी और पांचवी तान कहां से शुरू करनी चाहिये ? (४) इन तानों के स्वर गिनिये, और उसी के आधार पर बताइये कि वह तानें कितने कितने आवर्तन की हैं ? (५) यह आप ने क्यों कर बताया ? तत्पश्चात में एक एक तान– पहले स्वर, बाद में आकार गाऊंगा, और विद्यार्थियों से कहूंगा कि वे भी मेरा अनुकरण करें।	(३) झझन झझन झन :– सारे मप धसां रेंमं रेंसां धप मरे साऽ. (४) झझन झझन झन बाजे पायलिया :– धसा रेम रेसा रेम पध पम पध सांरें सांऽ धप धसां धप मप धप मरे साऽ (५) झनन झनन झन बाजे पायलिया :– धसा रेम साऽ रेम पध मऽ पध सांरें सांऽ धप धसां धप मप धप मरे साऽ. **अन्तऱ्याच्या ताना** (६) बन्सि बजावत बनमें कन्हैया :– मप धसां धप मप धप मरे सांऽ रेम पध सांऽ रेम पध सांऽ रेम पध सांऽ. (७) बन्सि बजावत बनमे कन्हैया :– धसां रेंसां धसां धप मप धऽ पध सांऽ धसां धप मरे साऽ रेम पध सांरें सांऽ
(८) शिक्षकों का तान गायन–	(पाठशाला के विद्यार्थियों को हाथ से, और संगीत शाला के विद्यार्थियों से तबले पर ठेका लगवा कर ये तानें गवा	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(९) आवृत्ति–	लूंगा। अन्तरे की भी तीनों तानें इसी प्रकार गवा लूंगा। साथ ही अलग अलग विद्यार्थियों से एक एक दो दो तानें गवा लूंगा और नीचे लिखे कुछ प्रश्न पूछूंगा:– (१) दुगुन की तानों में एक आवर्तन में कितने स्वर आते हैं ? (२) दो आवर्तन की तानों में कितने स्वर आयेंगे ?	(८) बन्सि बजावत बनमें कन्हैया :– सारे मप धसां रेंमं रेंसां धप मरे सारे साऽ रेम पध सांऽ पध साऽ पध सांऽ
(१०) उपसहार –	आज हम ने सीखा, तानें क्या होती हैं, उन के कितने मुख्य प्रकार हैं, तानें किस तरह गाई जाती हैं ?	
(११) गृहपाठ –	न तानों पर अच्छी तरह घर से अभ्यास कर के आइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १३ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में राग दुर्गा की त्रिताल की एक चीज सिखलाई गई। आज हम लोगों ने 'तान' का मुख्य पाठ लिया है। प्रथम तानों के मुख्य प्रकार बताये गये, तत्पश्चात दुर्गा राग की एक चीज में दुगुन की तानें बताई गयीं। विद्यार्थी पहाड़ा जानते हैं; 'गुना' का क्या अर्थ है यह भी उन्हें भली भाति मालूम है। उन के पूर्वज्ञान पर प्रस्तावना करते हुये, 'दुगुन' शब्द का अर्थ समझाने के लिये मैं ने उन से पूछा, 'दो दूने कितने ?' 'चार दूने कितने ?' चार संख्या दो की कितनी गुना है ? हेतुकथन में मैं ने समझाया कि आज हमें यही जानना है कि संगीत में स्वर को अलग अलग गुना कर के गाने का नाम क्या है। फिर मैं ने तान का अर्थ समझाया– मैं यह जानता था कि तानों के सारे प्रकार विद्यार्थी नहीं गा सकते– किन्तु कदाचित भविष्य में इस की आवश्यकता पड़े– इस लिये उस के पहले की सारी मैं ने कर ली।

दुर्गा राग की चीज में तानें सिखाने के लिये मैं ने पहले उन्हे तख्तास्याह पर लिख दिया। स्थाई की पहली तीन तानें आधे आवर्तन में, बाद की दो तानें और अंतरे की तीन तानें एक एक आवर्तन की लिखीं, इस के बाद मैं ने पूछा कि त्रिताल का एक आवर्तन कितनी मात्रा का हुवा ? उन्हों ने उत्तर दिया कि त्रिताल का एक आवर्तन १६ मात्रा, और आधा आवर्तन ८ मात्रा का हुवा। हमारा गीत किस मात्रे से शुरु होता है ? प्रत्येक पंक्ति कितने आवर्तन की है ? जवाब मिला कि प्रत्येक पंक्ति खाली से शुरु होती है, और उन में से प्रत्येक एक एक आवर्तन की है। मैं ने फिर प्रश्न किया कि स्थाई की पहली पंक्ति के दो आधे आधे आवर्तन में कौन कौन से शब्द आयेंगे। गीत में "झनन झनन झन" आधा तथा "बाजे पायलिया" दूसरा आधा

आवर्तन हुवा। विद्यार्थियों से यह उत्तर पाने के पश्चात में जान गया कि वे यह विषय अच्छी तरह समझ गये हैं।

में यह पहले ही बता चुका था कि आज हमें केवल दुगुन की तानों के विषय में बताना है। उसी के सम्बन्ध में मैं ने पूछा कि दुगुन लय की तानों में एक एक मात्रा में कितने स्वर आयेंगे ? आधे आवर्तन की तानों में कितने स्वर आयेंगे ? उन्हों ने ठीक जवाब दिया कि "१ मात्रा में २ स्वर, आधे आवर्तन की तान में १६ स्वर, तथा १ आवर्तन में ३२ स्वर आयेंगे"।

मैं ने बताया कि पाटी पर जो "ऽ" का अवग्रह चिन्ह लिखा गया है उस का मतलब यह है कि इस चिन्ह के पहले वाला स्वर एक मात्रा में गाना चाहिये। जिन स्वरों के नीचे ‿ अर्ध चंद्र बनाया गया है वे सब के सब एक ही मात्रे में गाये जायेंगे। स्वर गिनते समय अवग्रह चिन्ह की भी गिनती कर लेनी चाहिये। क्यों कि उस चिन्ह की गणना, तान के आधी मात्रा में की जाती है। इस अवग्रह के बजाय उस राग के नजदीक वाले स्वर से भी काम चल सकता था, किन्तु गाने की सुविधा के लिये बहुधा प्रत्येक तान के अन्त में यह चिन्ह रख दिया जाता है। ये सारी चीजें समझाने के बाद मैं ने उन का ध्यान पाटी की ओर आकर्षित किया। "आधे आवर्तन की पहली तीन तानों में कितने स्वर हैं ?" जवाब मिला "१६,१६ स्वर"। फिर मैं ने कहा कि देखिये, पाटी पर लिखा हुवा है कि "चौथी और पाँचवी एक एक आवर्तन की तान गाने के लिये शुरुवात कहाँ से करनी चाहिये ?" अब आप लोग गिन कर बताइये कि प्रत्येक तान में कितने कितने स्वर हैं, और वे तानें कितने कितने आवर्तन की हैं यह भी बताइये"। ये सारी चीजें समझाने के बाद मैं ने प्रथम स्थाई की तानों में हर तान पहले स्वर में, तत्पश्चात आकार में गा कर सुनाया, विद्यार्थियों से गवा लिया। आवृत्ति के हेतु अलग अलग विद्यार्थियों से कहा कि वे भी मेरी तरह गायें। इस प्रकार मैं ने स्थाई, अन्तरे की सारी तानें ताल सहित विद्यार्थियों से गवा लिया। आवृत्ति के हेतु अलग अलग विद्यार्थियों से (संगीतशाला के विद्यार्थियों से) तानें गवा ली। अन्त में इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न पूछने के पश्चात निश्चित समय के अन्दर ही पाठ समाप्त कर दिया गया।

———

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक - १५ वाँ

पाठ का क्रमांक १४ वाँ **दिवस** **मास** **सन** **समय ४० मिनट**

कक्षा – ५ वीं; संगीतशाला का प्रथम वर्ष

विषय – (उप विषय सहित) राग काफी (राग का विवरण तथा विस्तार)

सामान – तानपूरा (हार्मोनियम) खड़िया मिट्टी

पूर्वज्ञान – विद्यार्थी यह जानते हैं कि किसी भी राग को समझने के लियें उस के आधार स्वर तथा राग विस्तार करते समय उस के महत्व-पूर्ण अंगोंपर ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रस्तावना – पिछले घंटे में हमने दुर्गा राग संबंधी सारी बातें अच्छी तरह समझ लीं। अब ज़रा बताइये तो कि (१) राग भली भांति समझने के लिये किन किन बातों का जानना ज़रुरी है ?
(२) राग विस्तार करते समय कौन सी आवश्य बातों पर ध्यान देना चाहिय ?

हेतुकथन – आज हमें एक दूसरे राग के विषय में समझना ह और उस राग के विस्तार संबंधी पहलुओंपर ध्यान देना है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
– प्रतिपादन – १) राग काफी	आज के सिखलाये जानेवाले राग का नाम 'काफी' है। यह बताने के बाद मैं कुछ प्रश्न विद्यार्थियों से पूछूँगा और मेरे प्रश्नों का उत्तर देने के लिये उन से कहूँ गा –	**राग – काफी** आरोह :– सा रे ग॒ म प ध नी॒ सां अवरोह :– सां नी॒ ध प म ग॒ रे सा
२) राग की जाजकारी तथा हेतु-प्रश्न	(१) पाटी पर लिखे हुये काफी राग के आरोह अवरोह पर ज़रा ध्यान दीजिये और बताइये कि इस में कौन से स्वर शुद्ध हैं और कौन से विकृत ? (२) यह राग किस थाट का हैं ? इस सवालों का जवाब मिल जाने पर मैं धीरे धीरे राग संबंधी बातें पाटीपर लिखता जाऊंगा। फिर राग के वर्गपर प्रकाश डालने के लिये और भी कुछ प्रश्न विद्यार्थियों से पूछूंगा। (१) किसी राग का वर्ग निश्चत करने का आधार क्या है ? (२) इस राग के आरोह अवरोह में कितने कितने स्वर हैं ?	यह राग काफी थाट से उत्पन्न हुवा है। इस संपूर्ण वर्गीय राग में गांधार, निषाद कोमल और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। कभी कभी आरोह में शुद्ध गांधार तथा शुद्ध निषाद भी लगाते हैं। इस राग का वादी स्वर पंचम तथा संवादी रिषभ है। इस का विस्तार अधिकांश मध्य और तार सप्तक में होता है, प्रकृति चंचल है। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
३) राग की पकड ४) राग-विस्तार ५) उपसंहार ६) आवृत्ति	(३) अर्थात यह राग किस वर्ग में आया ? अंतिम प्रश्न का उत्तर में पाटीपर लिख दूंगा। फिर मैं उन्हे समझाऊंगा कि चूंकि इस राग में वर्जित स्वर का प्रश्न ही नहीं उठता, इस लिये उस संबंध में कुछ लिखना निरर्थक है। आप लोग इस राग के शुद्ध, विकृत स्वर पहले ही बता चुके हैं इस लिये अब आप ही बताइये "मैं इस विषय में क्या लिखूं ?" सवालों का जवाब में पाटीपर लिख दूंगा। फिर उन्हे यह बताऊँगा कि इस राग के आरोह में कभी कभी शुद्ध गंधार और शुद्ध निषाद भी लगाये जाते हैं। तत्पश्चात वादी संवादी स्वर, राग का विस्तार सप्तक, प्रकृति तथा गाने का समय आदि विद्यार्थियों को बतलाऊंगा और पाटीपर लिख दूंगा। अन्त में राग की पकड भी लिख दूंगा। राग विस्तार विद्यार्थियों से गवाने के पहले उसे भी पाटीपर लिख दूंगा, और फिर थोडे स्वर पहले में खुद गा कर, उन से कहूँगा कि वे भी मेरी तरह गायें। इस प्रकार हम लोगों ने आज राग 'काफी' विस्तार सहित सीख लिया। अच्छा, अब कुछ प्रश्नों का उत्तर दीजियें। (१) काफी राग के आरोह अवरोह गा कर (या बजाकर) सुनाइये। (२) किस थाट का है यह राग काफी ? आप ने कैसे पहचाना ? (३) काफी राग किस वर्ग में आता है ? किस आधारपर आपने इसका वर्ग निश्चित किया ? (४) इस राग के वादी संवादी स्वर कौन से है ? (५) प्रमुखरूप से किन सप्तकों में इस राग का विस्तार होता है। (६) (एक विद्यार्थी से) आप पंचम तक स्वर-विस्तार कीजिये।	**राग की पकड** सारेग्मपऽ, मपऽमपऽ मपधप ग् रे ऽ, सारेग्ऽ रेग् रेसा. ———————— **राग विस्तार** सा, सा, न्ीऽ पधसा, पधसारेग्रेऽ सारेग्ऽ रेसा, न्ीऽ पधसा, सारेग्मपऽ, पऽ, मपऽ, मपऽ, मपधप ग्ऽरेऽ, सारेग्ऽ रेग् ऽ रेसा, न्ी ऽ पधसा, सारेगम पधन्ीऽ ध ऽ प ऽ, मपधन्ी पधनीसां, न्ीऽपधसां ऽ, पधसांरेंगं ऽ रें ऽ सांरेंगं ऽ रें गं ऽ रेंसां, न्ी ऽ पधसां ऽ. सान्ीधपऽ, मपधन्ी पधनीसां, न्ी धप ऽ मप ऽ, मप ऽ, मपधप ग् ऽ रे ऽ, सारेग् ऽ रेग् ऽ रेसा, न्ी ऽ पधसा –

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
७) गृहपाठ	(७) (दूसरें से) और आप इससे आगे का स्वर विस्तार गा कर सुनाइये। घर से अच्छी तरह यह राग याद करके तथा स्वर विस्तार पर अभ्यास करके आइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १४ के विषय में
विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में दुर्गा राग सम्बन्धी सम्पूर्ण विवरण देने के पश्चात आज काफी नामक दूसरा राग सिखाया गया।

संपूर्ण वर्गीय राग होने के कारण इस में जरा नयापन था। इसी लिये काफी राग का चुनाव मैं ने किया। राग समझने तथा उस के विस्तार के लिये किन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान रखना चाहिए इस का पूर्व ज्ञान विद्यार्थियों को था ही। प्रस्तावना में पूर्व ज्ञान से धी दो प्रश्न पूछ कर हेतुकथन में मैं ने विद्यार्थियों को सूचित किया कि आज हमें 'काफी' राग सीखना है। इस राग के बारे में कुछ बातें तो मैं ने विद्यार्थियों से ही जान लीं। जो वे नहीं बता सकते थे उसे मैं ने स्वय समझा कर पाटी पर लिख भी दिया। राग का आरोह अवरोह मैं ने खुद लिखा किन्तु राग का थाट, वर्ग, वर्जित तथा शुद्ध विकृत स्वरों के बारे में विद्यार्थियों से ही कहलवा लिया। अलबत्ता वादी संवादी, विस्तार सप्तक, राग की प्रकृति, गाने का समय तथा पकड़ मैं ने ही बताया। फिर राग विस्तार सिखलाना शुरु किया।

प्रस्तावना में मेरे पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर में विद्यार्थियों ने पहले ही बताया था कि राग विस्तार में मुख्यरूप से (१) राग के आरोह अवरोह में स्वरों का क्रम (२) वादी संवादी स्वर (३) राग के विस्तार सप्तक आदि पर ध्यान देना आवश्यक है। विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान पर आधारित ये बातें मैं ने पाटी पर लिख दीं। तत्पश्चात काफी राग के कुछ स्वर मैं ने गाने शुरु किये और उन्हें कहा कि वे भी मेरा अनुकरण करें। अन्त में पाठ दुहराने के लिये पाटी साफ कर ७ प्रश्न पुनः मैं ने पूछे। जवाब ठीक मिला; मैं समझ गया कि यह राग विद्यार्थियों ने अच्छी तरह सीख लिया है इस लिये उन्हें घर से काफी राग पर खूब अभ्यास करने का आदेश दिया। पाठ समय के अन्दर समाप्त हो गया।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक - १६ वाँ

पाठ का क्रमांक १'१ वाँ   दिवस   . मास   सन   समय ४० मिनट

कक्षा :– ५ वीं, संगीत शाला का प्रथम वर्ष

विषय :– (उप विषय सहित) काफी राग की चीज़ (ताल सहित गाना)

सामान :– तानपूरा (हार्मोनियम), तबला डग्गा

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थियों को काफी राग की पूरी जानकारी है, राग विस्तार भी कर सकते हैं । हाथ से तीन ताल दे सकते हैं, तबले का ठेका भी विद्यार्थी समझते हैं ।

प्रस्तावना :– हम लोगों ने पिछले घंटे में राग काफी के सम्बन्ध में आवश्यक बातें सीख लीं । (एक विद्यार्थी से) "आप ज़रा मध्य षडज से मंद्र सप्तक के पंचम तक, और फिर मध्य सप्तक के गंधार तक का विस्तार कीजिये । (दूसरे विद्यार्थी से) आप मध्य षडज से मध्य सप्तक के पंचम तक, और आप (तीसरे से) मध्य षडज से तार षड्ज तक विस्तार करके दिखाइये । (चौथे से) आप बचा हुवा साग विस्तार कीजिये ।

हेतुकथन :– आज हमें इस राग में त्रिताल की एक चीज़ सीखनी है ।

विषय (अर्थसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटीलेखन)
प्रतिपादन :–	मैं यह पहले ही बता चुका हूँ कि शास्त्रीय संगीत में चीजों के दो मुख्य भाग होते हैं ।	**राग काफी ताल–त्रिताल**
१ चीज़ की स्थाई और अन्तरा–	(१) कौन से हैं वे दो भाग ? (२) स्थाई किसे कहते हैं ? अन्तरा क्या होता है ? पूर्वज्ञान के आधार में प्रश्न पूछने के बाद पाटी पर काफी राग की एक चीज़ में लिख दूँगा, और उस चीज़ में आनेवाले जटिल शब्दों का अर्थ भी समझा कर लिख दूंगा ।	**स्थाई** काहे करत अनरीत कन्हाई तोड़ मटुकिया रार बढ़ाई
२ जटिल शब्दों का अर्थ–		**अन्तरा** हेरत घेरत आन लुगाई जाय पुकारूँ यशोदा माई निकस जाय सारी ठकुराई
३ चीज़ का अर्थ–	श्रीकृष्ण से एक गोपी कहती है कि हे कन्हय्या तुम मेरे साथ ऐसा विचित्र व्यवहार क्यों करते हो, मेरी मटकी फोड़ फोड़ कर क्यों झगडा बढ़ा रहे हो ? पराई नारियों को घेरघार कर पकड़ते हो, यह कोई रीत है? अभी जाकर यशोदा मइया से शिकायत कर दूं तो तुम्हारी ये सारी ठकुराई भूल जायगी । चीज का अर्थ समझाने के बाद मैं उन्हें बताऊंगा कि यह चीज तीनताल में गाई जाती है हर पंक्ति खाली	

विषय (अर्थसहित)	पद्धति (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी लेखन)
	से शुरू होती है। एक बार फिर में उन से निम्न-लिखित प्रश्न पूछूंगा।	**शब्दार्थ**
४ शिक्षक का गायन-	(१) इस चीज़ की प्रत्येक पंक्ति में कितनी तालियाँ हैं? उत्तर पाने के पश्चात सारी चीज़ में स्वयं गा कर विद्यार्थियों को ताल सहित सुनाऊंगा।	अनरीत := अनुचित रीत मटुकिया := मटकी रार = झगड़ा आन = दूसरे की लुगाई = स्त्री, पत्नी
५ विद्यार्थियों का गायन–	तत्पश्चात विद्यार्थियों से भी गवा लूगाँ। मैं संगीत शाला के विद्यार्थियों को तबले के ठेके पर गाने का आदेश दूंगा।	
६ आवृत्ति–	स्वर और ताल में प्रत्येक विद्यार्थी से चीज गवा लूंगा।	
७ गृहपाठ–	इस चीज़ पर घर से अच्छी तरह अभ्यास कर के आइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १४ के विषय में

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में काफी राग की सम्पूर्ण जानकारी देने के पश्चात आज उसी राग में तीन ताल की एक चीज़ सिखाई गई। प्रस्तावना करते समय विद्यार्थियों से काफी राग के अलग अलग विस्तार गवा लिये गये। चीज़ सिखाने के पहले मैंने उसे तख्तास्याह पर लिख दिया और गीत का अर्थ भी विद्यार्थियों को भली भांति समझा दिया। चीज़ गाते समय मैंने उन्हें बताया कि हर पंक्ति की शुरुआत खाली से होती है। प्रथम मैं गाता था तत्पश्चात विद्यार्थी मेरा अनुकरण करते जाते थे। संगीत शाला के विद्यार्थी तबले के ठेके पर गाते थे, किन्तु दूसरे लड़के केवल हाथ से ही ताल देते जाते थे। आवृत्ति लेते समय संगीत शाला के प्रत्येक लड़कों से पूरी चीज़ स्वर और ताल में मैंने गवा ली। गृह-पाठ में मैंनें इसी चीज़ पर अच्छी तरह अभ्यास करने का आदेश दिया। अभ्यास के लिये वही चीज़ स्वरलिपि के साथ नीचे लिख दी गई है।

राग–काफी ताल–त्रिताल

–स्वरलेखन–

अस्ताई

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
–	–	–	–	–	–	–	–	कऽ	ऽऽ	हे	क	र	त	अ	म
–	–	–	–	–	–	–	–	पध	न्̱ीध	प	ग्	सा	मा	रे	प
रीत	ऽ	ऽ	क	म्हाऽ	ऽऽ	ई	ऽ	तो	ऽ	सू	म	दु	कि	यों	ऽ
प	–	–	म	पध	मप	ग्	रे	ध	–	ध	प	ध	सां	न्̱ी	–
हा	ऽ	र	ब	दा	ऽ	ई	ऽ	॥ ध्रु० ॥							
ध	म	ध	प	ग्	–	रे	–								

अन्तरा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
–	–	–	–	–	–	–	–	हे	ऽ	र	त	घेऽ	ऽ	रऽ	तऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	म	–	प	ध	पध	न्̱ी	धन्̱ी	पध
मा	ऽ	म	लु	गा	ऽ	ई	ऽ	जा	ऽ	ए	पु	का	ऽ	हूं	ऽ
नी	–	सां	सां	न्̱ी	ध	सां	ऽ	प	ध	सां	रें	गं̱	रें	सां	न्̱ी
न	सो	वाऽ	ऽऽ	मा	ऽ	ई	ऽ	नि	क	स	जाऽ	ऽ	य	स	ग
ध	प	मप	धप	ग्	–	रें	–	ध	ध	ध	पध	सां	न्̱ी	ध	प
री	ऽ	ठ	कु	रा	ऽ	ई	ऽ	॥ १ ॥							
ध	प	ध	प	ग्	–	रें	–								

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १७ वाँ

पाठ का क्रमांक :– १६ वाँ (दि. मास सन १९) **समय :–** ६० मिनट

कक्षा :– ७ वीं; संगीत शाला का द्वितीय वर्ष.

विषय :– (उप विषय सहित) मालकंस राग की चीज तथा आलाप (गाना अथवा बजाना)

सामग्री :– तानपूरा, तबला डग्गा

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थियों को मालकंस राग के विषय में संपूर्ण जानकारी है, स्वर विस्तार भी कर सकते है, त्रिताल का ठेका समझते हैं।

प्रस्तावना :– पिछले घंटे में राग मालकंस के संबंध में सारी बातें बताई गई। (मैं चार पाँच विद्यार्थियों से मालकंस का राग विस्तार गाने के लिये कहूँगा) (१) ऋतुयें कितनी होती हैं ? (२) आज–कल कौन सी ऋतु है ? (३) हम यह कैसे समझ जाते हैं कि वसंत ऋतु आ गई ?

हेतुकथन :– आज मैं राग मालकंस की एक ऐसी चीज सिखाऊँगा जिस में वसंत ऋतु का वर्णन किया गया है। साथ ही शास्त्रीय शैली के अनुसार चीज गाने का एक नया ढंग भी मैं आज सिखानेवाला हूँ।

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन (१) चीज की स्थाई–अन्तरा (२) चीज के कठिन शब्दों का अर्थ–	सर्वप्रथम मैं मालकंस की संपूर्ण चीज लिख दूंगा और फिर कठिन शब्दों का अर्थ बताने के बाद नीचे लिखे हुये प्रश्न पूछ कर विद्यार्थियों से चीज का अर्थ स्पष्ट रूप से समझ लूंगा।	**राग–मालकंस ताल–त्रिताल** **स्थाई** कोयलिया बोले अम्बुआ डार पर ऋतु वसन्त को देत संदेसवा।।
(३) हेतुप्रश्न–	शब्दों का अर्थ पाटी पर लिख दूंगा। (१) वसंत ऋतु के आगमन का संदेसा कौन देता है ? (२) कोयल कहाँ से संदेसा देती है ? क्या कहती है ? (३) भौंरें किस प्रकार संदेश देते हैं ? इन प्रश्नों के उत्तर द्वारा विद्यार्थी चीज का अर्थ समझ सकेंगे।	**अन्तरा** नयो कलियन पर गूंजत भवंग। उनके संग करत रंग रलिया। यही वसन्त को देत ससंदेवा **कठीन शब्दों का अर्थ** अम्बुआ––आम का पेड़ डार––डाली संदेसवा––संदेसा नयो––नई रंगरलियाँ––मौज, खेल
(४) शिक्षकों का गायन–	इन प्रश्नों के बाद मैं स्वयं स्थाई-अंतरा गा कर सुनाऊंगा (अथवा बजा कर)। "मैं ने जो चीज अभी अभी गाई है वह किस मात्रे से शुरु होती है" ? यह प्रश्न पूछने के पश्चात मैं एक एक पंक्ति अलग अलग गाता जाऊँगा और विद्यार्थियों को आदेश दूंगा कि	

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(५) आलाप (अलिप्त) अथवा अनिबद्ध गान।	वे भी मेरा अनुकरण करें। गाने के साथ साथ संगीत शाला के विद्यार्थी तबले पर ठेका देंगे और दूसरे विद्यार्थी केवल हाथ से। "आज तक हम लोग चीज गाने के बाद उसकी तानें गाते थे किंतु आज हमें चीज का आलाप सीखना है" यह कहने के बाद निम्न लिखित रीति से आलाप की विवेचना करके उन्हे समझा दूंगा। आकार में गाये जाने वाले किसी भी स्वर-समूह को आलाप कहते हैं। आलाप में लय का बंधन नहीं रहता। आलाप धीरे धीरे गाया जाता है। राग का स्वरूप स्पष्ट करना तथा आवश्यक रसोत्पत्ति करना ही आलाप का मुख्य उद्देश्य है। इसे अलिप्ति अथवा अनिबद्ध गान भी कहते हैं। चीज की स्थाई और अन्तरा दोनों में आलाप गाया जा सकता है। परंतु बहुधा स्थाई तथा अन्तरा की प्रथम पंक्ति में आलाप गाने की प्रथा है। मध्य षड्ज से आलाप का आरंभ किया जाता है। यदि स्थाई की पंक्ति मध्य षड्ज पर समाप्त नहीं होती तो किसी भी ऐसी पंक्ति से आलाप लिया जा सकता है जिसका अंतिम स्वर मध्य षड्ज आता हो। अन्तरे में भी यही नियम लागू हो सकता है। शास्त्र की ओर से किसी विशेष पंक्ति से ही आलाप आरंभ करने का कोई बंधन नहीं है। मैं विद्यार्थियों को यह भी समझाऊँगा कि यथासंभव स्थाई का आलाप मध्य षड्ज से प्रारंभ कर मध्य षड्ज पर ही समाप्त करना चाहिये। अंतरे का आलाप तार षड्ज से शुरु कर (उत्तर सप्तक में) तार षड्ज पर खतम करना चाहिये। किंतु नवीनता पैदा करने के लिये कभी कभी इस नियम का उल्लंघन करना भी क्षम्य है। इसके पश्चात मैं स्वरज्ञान संबंधी दो चार प्रश्न विद्यार्थियों से पूछूंगा। (१) स्थाई की प्रथम पंक्ति किस स्वर पर समाप्त होती है ? (२) दूसरी पंक्ति कहाँ समाप्त होनी चाहिये ? मैं इसी लिये विद्यार्थियों	

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(६) स्थाई के आलाप– (७) अन्तरा के आलाप–	को सलाह दूंगा कि इस चीज में प्रथम पंक्ति पर आलाप गाने की अपेक्षा दूसरी पंक्ति में अन्तिम भाग के मध्य षड्ज से आलाप शुरु करना अधिक सुविधाजनक होगा। आलाप में स्वर के क्रमों तथा लय के संबंध में कोई बंधन नहीं है। बंधन केवल इतना ही है कि स्वर उसी राग के होने चाहिये। वर्जित स्वर, विश्रांति स्थानों, तथा वादी, संवादी आदि विषयों पर अवश्य नियम पूर्वक चलना चाहिये। गाते समय तालों का भी ध्यान रखना चाहिये। जिस मात्रा से पंक्ति शुरु की जाय उसी मात्रा तक (चाहे कितने ही आवर्तन हों) आलाप गाना चाहिये। शुरु की मात्रा आने के साथ ही पंक्ति गाना आरंभ कर देना चाहिये। इस प्रकार विस्तृत वर्णन देने के पश्चात मैं खुद स्थाई के कुछ आलाप गाऊंगा, विद्यार्थियों से भी गाने के लिये कहूँगा। इस प्रकार अलग अलग विद्यार्थियों द्वारा अनेक प्रकार के आलाप गवा लूंगा।	
(८) पुनरावृत्ति–	(१) आलाप किसे कहते हैं ? आलाप के दूसरे नाम क्या क्या हैं ? (२) चीज का आलाप गाते समय किन आवश्यक बातों पर ध्यान रखना चाहिये ? (३) स्थाई और अन्तरे के आलापों में क्या अन्तर है ?	
(९) गृह पाठ–	घर से मालकंस की यह चीज और उसके आलाप, दोनों का अच्छी तरह अभ्यास करके आइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १६ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

आज तक हम लोगों ने संगीत के शास्त्रीय तथा प्रयोगात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। प्रथम वर्ष के पाठ्य-क्रम में दो रागों की रूपरेखा १५ वें पाठ तक स्पष्ट की गई। तत्पश्चात इसी पद्धति के अनुसार प्रथम वर्ष के १० राग (गां. म. वि. मण्डल के अभ्यासक्रमानुसार) सिखाये गये। अब द्वितीय वर्ष के आरम्भ में राग 'मालकंस' से शुरुवात की गई है। विद्यार्थियों को राग सम्बन्धी तथा राग–विस्तार संबंधी सम्पूर्ण जानकारी है, इसी पूर्वज्ञान का आधार लेकर पाठ आरम्भ किया गया।

प्रस्तावना करते समय मैं ने विद्यार्थियों से थोड़ा राग–विस्तार करा लिया। इस विस्तार के द्वारा मैं जानना चाहता था कि विद्यार्थियों को सिखाई हुई पिछली बातें याद हैं अथवा नहीं। चूंकि मालकंस की चीज में वसन्त ऋतु का वर्णन है इसलिये मैंने शुरु में ऋतु सम्बन्धी कुछ साधारण प्रश्न पूछे। हेतुकथन में, चीज़ वसन्त ऋतु सम्बन्धी है, यह बताने के पश्चात हम ने उन्हें सूचित किया कि आज शास्त्रीय शैली के एक नये अंग पर भी प्रकाश डाला जायगा। मैंने मालकंस की एक लोकप्रिय चीज "कोयलिया बोले अम्बुआ डार-पर" तख्तास्याह पर लिख दिया। चीज़ में आनेवाले कठिन शब्दों के अर्थ समझा कर मैंने हेतुप्रश्न के द्वारा जान लिया कि उनकी समझ में गीत का अर्थ भली भांति आ गया है। इसके पश्चात मैं वह चीज़ गाता गया और विद्यार्थी मेरा अनुकरण करते गये। संगीत शाला के विद्यार्थी तबले पर ठेका दे रहे थे, दूसरे विद्यार्थी हाथ से ताल दे रहे थे।

गान के बाद मैंने आलाप की सम्पूर्ण विवेचना कर दी। तानों की तरह कहीं कहीं आलाप भी तबले पर ठेका दे कर सिखाया जाता है। किन्तु उस रीति से विद्यार्थियों का ध्यान ताल की ओर अधिक हो कर गान की ओर कम होता है। इस ढंग से गायक की कल्पना शक्ति का विकास नहीं हो पाता। तानों के लिये यह बात नहीं है। शुरु में कुछ दिनों तक ताल–बद्ध तानें सिखाने में कोई हर्ज नहीं है। ताल का भली भांति अभ्यास हो जाने के पश्चात तानों में अपने आप एक प्रकार का निखार पैदा हो जाता है जिसका आभास पा कर विद्यार्थी को खुद ही समाधान हो जाता है।

प्रत्येक विद्यार्थी से अलग अलग आलाप गवाने के कारण इस पाठ में ६० मिनट लग गये। पाठ नं. १३ में तानें सिखाने के लिये स्पष्ट विवरण दिया जा चुका है, इसलिये तानों की अलग से एक और रूपरेखा न देकर, केवल नमूने के लिये आधे, एक और दो आवर्तनों की १२ विभिन्न तानें दी जा रही हैं:–

राग–मालकंस ताल–त्रिताल

स्थाई की तानें

१ कोयलीया बोले अंबु –	धनी	सानी	धनी	धम	गम	गसा	गम	धनी.
,, ,, अंबु	वा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

२	कोयलीया बोले अंबु –	धनी	सांगं	सांगं	सांनी	धनी	धम	गम	धनी.
	,, ,, अंबु	वा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
३	कोयलीया बोले अंबु –	निसा	गम	धनी	सांगं	सांनी	धम	गसा	निसा.
	,, ,, अंबु	वा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

४ कोयलीया बोले अंबुवा डारपर – गम धनी सां ऽ धनी सांनी धनी धम–
गम गसा निसा गम साग मध गम– धनी सांऽ.

५ कोयलीया बोले अंबुवा डारपर – गम गसा निसा गम धम गम धनी–
सांनी धनी धम गम गसा निसा गम–
धनी सां ऽ

६ कोयलीया बोले अंबुवा डारपर – मध निसां धनी सांनी धनी धम गम–
गसा निसा गम धनी सां ऽ धनी सांगं–
सांगं सांनी धनी धम गम गसा निसा–
धनी साग निसा गम धऽ गऽ मध–
नीसां मऽ धनी सांऽ

अन्तरे की तानें

७ नयो कलियन पर गुंजत भवरा – सांनी धनी सांनी धनी धम गम गसा–
निसा गम धऽ गऽ मध नीसां मऽ– धनी सांऽ

८ नयो कलियन पर गुंजत भवरा – धनी साग सांगं सांनी धनी धम गम
गसा निसा गम साग मध गम धनी– मध नीसा

९ नयो कलियनपर गुंजत भवरा – गम धनी सांऽ धनी सांगं मगं सांनीं
धनी धम गम गसा, गसा मग धम नीध सांऽ

१० नयो कलियन पर गुंजत भवरा –	गं ऽ	गं ऽ	सांनी	धनी	सांऽ	सांऽ	नीध
	मध	नीऽ	नीऽ,	नीऽ	सांऽ	सांऽ	धऽ–
	नीऽ	नीऽ	मऽ	धऽ	धऽ	गऽ	मऽ
	मऽ	साऽ	गऽ	गऽ	नीऽ	साऽ	साऽ
	साऽ	गम	धनी	सांऽ			
११ नयो कलियनपर गुंजत भवरा –	सांगं	मंगं	सांऽ,	सांग	मग	साऽ	निसा
	गम	धनी	सांऽ	धनी	सांनी	सांनी	धनी
	धम	गम	गसा,	गसा	मग	धम	नीध
	सांऽ	गसा	मग	धम	नीध	सांऽ.	गसा
	मग	धम	नीध	सांऽ			
१२ नयो कलियन पर गुंजत भवरा –	निसा	गम	धम	गम	धनी	धम	मम
	धनी	सांनी	धनी	धम	गम	गसा	निसा
	गम	धनी	सांगं	सांनी	धनी	धम	गम
	गसा,	निसा	गम	धनी	सांऽ	गम	धनी
	सांऽ,	गम	धनी	सांऽ			

— —

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १८ वाँ

पाठ का क्रमांक :– १७ वाँ (दि. मास सन् १९) **समय :–** ६० मिनट

कक्षा :– संगीत शाला का तीसरा वर्ष

विषय :– (उपविषय सहित) खयाल गायन (राग भीमपलासी का खयाल, विलंबित एकताल का ठेका

सामग्री :– तानपूरा, तबला, डग्गा

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थी भीमपलासी राग का स्वरविस्तार जानते हैं, मध्यलय में एकताल का ठेका भी उन्हे मालूम है।

प्रस्तावना :– हमने भीमपलासी का स्वर बिस्तार तथा मध्य लय की एक चीज सीख ली है। (थोड़ा थोड़ा विस्तार ३, ४ विद्यार्थियों से गवा लूंगा) आपने लय के कितने प्रकार सीखे ? उनके नाम बताइये। द्रुत लय किसे कहते हैं ? विलम्बित लय के क्या अर्थ है ? आज तक हमने जिन रागों की चीजें सीखी हैं उन्हे अधिकतर किस लय में गाते हैं ?

हेतुकथन :– आज हमें विलम्बित लय में गाया जाने वाला एक नया गीतप्रकार सीखना है; उसका विवरण इस प्रकार है।

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन– (१) खयाल–	इस नये गीत प्रकार का नाम है 'खयाल'। 'खयाल' शब्द का अर्थ तथा उसकी पूर्व ऐतिहासिक भूमिका मैं उन्हे इस प्रकार समझाऊंगा।	ख्याल (फारशी शब्द) = कल्पना; विचा
(२) 'खयाल' शब्द का अर्थ–	यह फारसी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है 'कल्पना' अथवा 'विचार'। प्रत्येक गायक अपनी कल्पना के अनुसार अलग अलग स्वर समुदायों को सुन्दरता–पूर्वक गाता है। इसी कारण इसका नाम खयाल रखा गया है।	
(३) खयाल का पूर्व इतिहास–	सर्वप्रथम अमीर खुसरू नामक गायक ने, जिसका जीवनकाल सन १२५३ से १३२५ तक था, खयाल गायकी को जन्म दिया। उनके बाद पंद्रहवी शताब्दी में जौन-पूर के सुलतान हुसेन शर्की ने भी इस शैली को पुन-र्जीवन प्रदान किया किन्तु इस काल में ध्रुपद गायकी का अधिक प्रचार होने के कारण खयाल की गायकी	अमीर खुसरु – खयाल गायकी का जन्मदाता नियामत खाँ – (सदारंग) मोहम्मद शाह की छत्रछाया में चलने वाला गायक, बीनकार और गीत रचयिता।

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	अधिक लोकप्रिय न हो सकी। तत्पश्चात दिल्ली के रसिक बादशाह मुहम्मद शाह की छत्रछाया में चलने वाले कलाकार नियामतखां बीनकार थे, साथ ही कवि और गायक भी थे। उन्होंने अपनी नवीन काव्यरचनाओं में बादशाह सलामत के गुण गाये। उस समय से खयाल गायकी अधिक प्रकाश में आने लगी। नियामतखां का उपनाम 'सदारंग' था। उनके दो लडके थे। बडा लड़का फिरोज खां अपने पिता की तरह ही कवि था। उसने अपना उपनाम 'अदारंग' रखा था। आज भी इन दोनों की रचनायें प्रचलित हैं।	फिरोज़खाँ – (अदारंग) सदारंग का बड़ा लड़का, गायक और पद्य रचयिता। भूपतखाँ – (महारंग) नियामत खाँ का दूसरा लड़का। नियामतखाँ (सदारंग) फिरोझखाँ (अदारंग) — भूपतखाँ (महारंग) —: ० :—
(४) बडा खयाल और छोटा खयाल (५) खयाल गायकी में ताल-	खयाल के दो प्रकार होते हैं, (१) बडा खयाल, (२) छोटा खयाल। विलम्बित लय में गाया जाने वाला बडा खयाल और मध्य लय में छोटा खयाल होता है। बडा खयाल विशेषकर विलम्बित एक ताल, बिलम्बित तीन ताल, तिलवाडा, झुमरा, आडा चौताल इत्यादि तालों में गाया जाता है (आजकल रूपक ताल में भी गाते हैं)। खयाल गायकी में शृंगार रस प्रधान होता है; इस में स्थाई और अन्तरा दो भाग होते हैं।	खयाल बडा ख्याल (विलंबित लय) — छोटा ख्याल (मध्य लय)
(६) बंदिश-	गीत की बन्दिश में चाल और उससे संबधित ताल का वजन दोनों का खयाल रखना पड़ता है। गीत के प्रत्येक अक्षर (स्वरसहित) ठेके के प्रत्येक बोल से बन्धे हुये रहते हैं। अनेक बार गाने पर भी उन्हे उसी प्रकार बने रहना चाहिये। इस प्रकार इन कडे नियमों का बन्दिश में पालन करना आवश्यक है। मैं उन्हे यह भी बताऊंगा की स्थाई गाने के पहले सुन्दर ढंग से आलाप तथा बोल आलाप करनी चाहिये। तत्पश्चात उसीके अनुसार अंतरे में आलाप करना अच्छा होता है। इसके बाद स्थाई अन्तरे में भांति भांति की लयकारी की तानें, बोलतानें इत्यादि लेनी चाहिये। इस प्रकार खयाल अनेक ढंग से रंगीन बना कर गाया जाता है। ये सब बताने के	गीत की बंदिश = स्वर और ताल की सजावट खयाल गायकी की विशेषतायें (१) खयाल की परम्परागत बन्दिश कायम रखना। (२) ताल का वज़न। (३) स्वरों पर अधिकार (४) सुन्दर कल्पनाओं द्वारा आभूषित आलाप तथा बोल आलाप (५) लयकारी की तानें और बोल-तानें

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	उपरांत में उन्हे खयाल गायकी की कुछ विशेषतायें समझा दूंगा।	
(७) खयाल गायकी की विशेषतायें	खयाल गाते समय :– (१) खयाल को परम्परागत बंदिश (२) ताल का वजन (३) स्वरों पर अधिकार (४) कल्पनाशक्तिद्वारा निर्मित नये नये आलाप तथा बोल आलाप (५) लयकारी की तानें तथा बोल–तानें इत्यादि महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।	
(८) विलंबित–एकताल का ठेका–	यह सब समझाने के बाद में विलम्बित एकताल का ठेका लिख कर निम्न लिखित प्रश्न पूछूंगा (१) मध्य लय के एक ताल के ठेके और इसमें क्या अन्तर है? फिर में यह ठेका तबले पर बजा कर विद्यार्थियों से सम पहचानने के लिये कहूंगा। ठेका समझाने के बाद पाटी पर में "अब तो बडी बेर" नामक भीमपलासी की	विलंबित एकताल (see table below)
(९) खयाल की चीज का अर्थ–	चीज लिख दूंगा और नीचे लिखे ढंग से उसका अर्थ समझा दूंगा। मेरे मालिक (परमेश्वर), में कितनी देर से तुम्हे पुकार रही हूं। मैं संसाररूपी भंवर में फंस गई हूँ, हे साई इस भवसागर से मुझे उबारो। अर्थ समझाने के बाद जिस मात्रा से खयाल शुरु होता है वह में उन्हे बताऊँगा। खुद एक बार स्थाई अन्तरा गाने के बाद विद्यार्थियों से भी पूरा गवा लूंगा। इसी प्रकार आलाप और तानें भी में पहले शुद्ध गाऊंगा। और विद्यार्थियों से भी गाने को कहूंगा।	राग– भिमपलासी (खयाल) ताल– वि. एकताल
(१०) उपसंहार–	आज हमें खयाल का अर्थ तथा उसकी गायकी का ढंग मालूम हो गया।	**अस्ताई** अब तो बडी बेर भई टेरत हूं। मेरे रब साइया ॥ध्रु०॥
(११) आवृत्ति–	बताइये तो। (१) खयाल शब्द का क्या अर्थ है। (२) इसे खयाल क्यों कहा गया है? (३) खयाल गायकी का जन्मदाता कौन है? ४) किसने इस गायकी की यशस्वी बनाया? (५) क्या क्या इस गायकी की विषषतायें हैं (६) बंदिश का क्या मतलब है? (७) खयाल के कितने प्रकार हैं? (८) बडा खयाल किन तालों में गाया जाता है?	**अन्तरा** भवर जाल में आन फसी हूं। भवसागर ते पार करो मेरे साईया ॥१॥

विलंबित एकताल

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठेका	धीं	धीं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
खण्ड	×		०		२		०		३		४	

विषय अर्थ सहित	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(१२) गृहपाठ–	घर से खयाल गायकी का इतिहास लिख कर लाइये। और आज के सिखलाये हुये खयाल का घर पर अभ्यास कीजिये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. १७ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

संगीतशास्त्र के तीसरे वर्ष के विद्यार्थियों को आज खयाल गायकी के विषय में बताया गया। इसके लिये राग भीमपलासी का प्रसिद्ध खयाल 'अब तो बडी बेर भई' विलम्बित एक ताल में सिखाया गया।

[सा, सा, नी़ ऽ सा, प़ नी़ ऽ सा, प़नी़सागरेसा, नी़ ऽ प़नी़ ऽ सा, नि़सा गमप गऽ मऽ, मगरेसा, नी़ऽ प़ नी़ ऽ सा, नि़सागमपगऽमऽ, गमपनी धऽप, मप गऽ मऽ मगरेसा, नी़ऽ, प़ नी़ ऽ सा, नी़सागमपनीऽ धऽप, मप गम ऽ, गमपनीऽ पनीऽसां, पनीसांगरेंसां, नी ऽ पनी ऽ सां; सांनी धप, मप गमपनीधप मप ग ऽ म ऽ, मगरेसा, नी़ऽ प़ नी़ऽ सा, प़नी़सागरेसा]

मध्य लय का एकताल तथा ऊपर लिखा हुआ राग विस्तार विद्यार्थियों का पूर्वज्ञान समझ कर प्रस्तावना करते समय उपर्युक्त स्वर विस्तार ३, ४ विद्यार्थियों से में ने गवा लिया। विलम्बित लय उनकी समझ में आ–जाय इसलिये में ने पूछा कि "लय के कितने प्रकार हैं ? उन का अर्थ क्या है ?" तत्पश्चात हेतु कथन में मैंने बतलाया कि आज हमें विलम्बित लय में गाया जाने वाला एक नया गीत प्रकार सीखना है। विषय प्रति-पादन शुरु करने के पूर्व मैंने उन्हें 'खयाल' शब्द का अर्थ समझा कर उसका पिछला इतिहास भी बता दिया। अमीर खुसरू से ले कर सदारंग, अदारंग आदि रचनाकारों के विषय में बताते हुये मैंनें कहा कि निया–मतखाँ उर्फ सदारंग के दो लडके थे, एक का नाम फिरोज खाँ और दूसरे का भूपतखाँ था। दोनों ही पिता की भांति कवि और रचनाकार थे। फिरोजखाँ का उपनाम 'अदा-रंग' और भूपतखाँ का महारंग था। खयाल गायकी किसके कारण और कब लोकप्रिय हुई इस पर प्रकाश डालते हुये बाद में विलंबित एकताल का ठेका पाटी पर लिख दिया और प्रत्यक्ष रूप से मैंने खुद बजा कर सुना भी दिया। विद्यार्थी मध्य लय और विलंबित लय का फर्क समझ गये। मैंने उन्हे समझाया कि बडा खयाल विलंबित और छोटा खयाल मध्य लय में गाया जाता है। फिर बडा खयाल और भी जिन तालों में गाया जाता है उनके नाम बताकर बडा खयाल गाने की पद्धति भी उन्हे भली भांति समझा दी। उसके बाद "अब तो बडी बेर भई" भीमपलासी का खयाल तख्तास्याह पर लिख कर उसका अर्थ स्पष्ट कर दिया। स्थाई अन्तरा मैंने खुद गाया और विद्यार्थियों से गवा लिया। ६० मिनट में इतना ही भाग समाप्त हो सकता है। अगला भाग दूसरे घंटे में सिखाना चाहिये था परन्तु पुस्तक की सुविधा के लिये इसी में २ घंटे का विषय ले लिया गया है। स्थाई अन्तरा के बाद अलग से लेनी चाहिये थी। खैर, पाठ दुहराते हुये सात आठ प्रश्न पूछे और अन्त में गृहपाठ दे कर पाठ समाप्त कर दिया। एक महत्वपूर्ण बात यह ध्यान में रखनी चाहिये कि बंधे हुये आलाप और तानें सिखाना अच्छा नहीं, इससे विद्यार्थी की कल्पना का विकास नहीं हो पाता।

संगीत विषय सम्बन्धी पाठों की रूपरेखा

लेखांक १९ वाँ

पाठ का क्रमांक :– १८ वाँ (दि. मास सन् १९) **समय :–** २ घंटे

कक्षा :– संगीत शाला का चौथा वर्ष

विषय :– (उपविषय सहित) ठुमरी गायकी की जानकारी और ठुमरी गायन (भैरवी राग की ठुमरी और दीपचंदी ताल)

सामग्री :– तानपूरा, तबला, डग्गा ।

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थियों को भैरवी राग की जानकारी है, उसका स्वर विस्तार और गीत वे जानते हैं। ख़याल गायन की रीति भी वे जानते हैं ।

प्रस्तावना :– मैं ने भैरवी राग के कुछ आलाप गाये और फिर प्रश्न किया (१) ये किस राग के स्वर हैं ? (२) मैं ने आप लोगों को भैरवी राग का जो गीत सिखाया है उसे गाकर सुनाइये (एक विद्यार्थी से) आप गाइये वह त्रिताल वाला गीत । (३) इसके पहले विलंबित लय में गाया जाने वाला एक प्रकार मैंने सिखलाया था; उस प्रकार को क्या कहते हैं ?

हेतुकथन :– आज एक और भी नया गीतप्रकार हमें सीखना है, उसके बारे में विस्तारपूर्वक विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन	
		ख्याल और ठुमरी की गायकी का फ़र्क	
		खयाल	**ठुमरी**
प्रतिपादन – १ ठुमरी –	हर मनुष्य में भावनायें होती हैं। इन्हीं भावनाओं को व्यक्त करने के लिये संगीत में अनेक उपयुक्त गीत प्रकारों की रचना की गई हैं । उनमें से एक का नाम ‘ ठुमरी ’ है। हमे आज ठुमरी ही सीखनी है । फिर मैं विद्यार्थियों को नीचे लिखे वर्णन के अनुसार समझाऊँगा ।	(१) यह गम्भीर प्रकृति का गीत प्रकार है इसलिये इसके राग और ताल गम्भीर होते हैं । ख़याल हर राग में गाया जाता है ।	(१) यह गीत प्रकार कोमल और चंचल है । इसलिये सरल राग और ताल में गाते हैं। शृंगार विरह और भक्ति ठुमरी के मुख्य भाव हैं ।
२ ठुमरी के विषय में –	ख़याल गायकी के पश्चात ही उत्तर प्रदेश में ठुमरी का चलन होने लगा । ख़याल गायकी की भाँति ठुमरी गायकी की भी एक पद्धति है । किन्तु इन दोनों शैलियों में बहुत अन्तर है । दोनों गायकियों में अन्तर बताने के पूर्व, पाटी पर खयाल और ठुमरी के दो विभाग कर दूंगा और दोनों के अन्तर लिख दूंगा ।		
३ खयाल और ठुमरी गायकी में अन्तर –	लिखते समय विद्यार्थियों से खयाल के विषय में मैं कुछ प्रश्न पूछूं गा क्योंकि उन्हे खयाल गायकी का पूर्व ज्ञान है । उत्तर मिलने पर उसके बगल में ठुमरी की जानकारी लिखता जाऊँगा।	(२) ख़याल गायन में राग के नियमों को पालन करने का बन्धन है ।	(२) ठुमरी के राग नियमों में इतना कठोर बन्धन नहीं होता ।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
४ ठुमरी के राग– ५ होरी – ६ ठुमरी के ताल–	ठुमरी अधिकतर भैरवी, पीलू, खमाज, झिंझोटी, काफी, तिलंग, तिलक कामोद, देस, पहाडी गारा, माँड आदि रागों में गाई जाती हैं। इसके ताल भी सरल होते हैं। ठुमरी की भाँति होरी भी गीत का एक प्रकार है। इसमें अधिकांश कृष्ण–लीला और होली सम्बन्धी वर्णन होता है। आज कल इसे भी ठुमरी अंग से ही गाते हैं। दीपचंदी और त्रिताल में भी गायी जाती है। ठुमरियाँ अधिकांश पंजाबी, दीपचंदी, त्रिताल, अध्धा, दादरा तथा कहरवा में गाई जाती हैं। विद्यार्थियों को यह भी जान लेना चाहिये कि ठुमरी बजाने का भी एक विशेष ढंग होता है।	(३) स्थाई अन्तरों में बन्दिश की परम्परा निभानी पड़ती है। (३) काव्य रचना पर अधिकांश अवलंबित होने के कारण इस में शब्दार्थ के अनुकूल स्वररचना बनानी पड़ती है। (४) ख़याल में बडी तानें, कूट तानें तथा अन्य लयकारी की तानें आदि लेते हैं। (४) ठुमरी में बोल आलाप, छोटी मुरकियाँ, छोटे छोटे स्वरसमूहों के प्रकार और बिलकुल छोटी तानें ली जाती हैं।
७ ठुमरी गायक–	ठुमरी गायक को चाहिये कि वह गीतों के शब्द स्वर, ताल और भावों में अपने आप को एक कर दे। वह एक ऐसे अभिनेता के समान होता है जिसे एक ही समय में अनेक भूमिकायें करनी पड़ती हैं। उसकी आवाज में लोच, सुरीलापन और कोमलता जैसे गुण अवश्य होने चाहिये। लखनऊ और बनारस की तरफ के लोग ठुमरी के प्रभावशाली गायक होते हैं। उनकी गायकी में बोल आलाप बडा ही मार्मिक और हृदयस्पर्शी होता है। पूर्वकालीन ठुमरी गायकों में सादिकअली खाँ और मौजुद्दीम खाँ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।	होरी:– होली के आनन्दोत्सव तथा कृष्ण लीला का मार्मिक बखान इस गीत-प्रकार में किया जाता है। इसका अंग ठुमरी का ही होता है। शब्द–रचना व्रज भाषा में अधिकतर होती है। इसे बहुधा दीपचन्दी और त्रिताल में गाते हैं। (१) तीरोभाव– एक राग गाते समय उसी में दूसरे राग की छाया ठीक ढंग से दिखाना। (२) आविर्भाव– तीरोभाव के पश्चात पुनः मौलिक राग पर वापस आना। (३) शेर– कविताओं की पंक्तियाँ।
८ ठुमरी का सौंदर्य –	ठुमरी में रागों का मिश्रण एक सौन्दर्य समझा जाता है। अलबत्ता रागों का मिश्रण करते समय एक बात पर ध्यान रखना चाहिये कि स्वर बडी सुन्दरता और कौशल्यपूर्ण रीतिसे लगाये जायें। स्वर योजना ऐसी हो जिससे मनुष्य का हृदय हिल जाय। ठुमरी गायन में दो बातें और समझने योग्य हैं जिसे मैं पाटी पर लिख रहा हूँ; वो हैं	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
९ आविर्भाव तथा तीरोभाव –	(१) आविर्भाव और (२) तीरोभाव। इन दोनों भावों का मैं प्रत्यक्ष उदाहरण भी प्रस्तुत कर दूंगा। तत्पश्चात में उन्हें ठुमरी गायन के बारे में निम्न लिखित बातें समझाऊं गा।	
१० ठुमरी गाने की पद्धति–	ठुमरी में भी खयाल की तरह स्थाई अन्तरे होते हैं। किसी किसी ठुमरी में शेर भी होते हैं। शेर के मानें हैं अर्थपूर्ण काव्य की पंक्तियाँ। शेरों में ताल का बंधन नहीं होता। पहले ठुमरी की स्थाई गाकर, उसमें योग्य बोल आलाप, सुंदर मुरकियाँ, छोटे स्वरसमूहों के प्रकार आदि लेते हैं। फिर अन्तरा गा कर उसमें भी इन सब का उपयोग करते हैं और बाद मे ठुमरी को मूल गम्भीर लय बढा कर स्थाई की पहली पंक्ति कव्वाली की भांति जलद लय में गाते हैं। फिर ताल बन्द	
११ शेर या दोहे–	कर शेर, दोहे या काव्य पंक्तिया भावनापूर्ण ढंग से गाकर स्थाई के सम पर आ जाते हैं। मैं आप लोगों को इसका प्रत्यक्ष प्रयोग दिखलाता हूँ।	
१२ ताल दीपचंदी–	सर्व प्रथम दीपचंदी का ठेका मै पाटीपर लिख दूंगा और समझाने के बाद तबलेपर बजाकर दिखा दूंगा। फिर भैरवी राग की एक ठुमरी लिख कर	
१३ ठुमरी का अर्थ –	उसका अर्थ भी समझा दूंगा। प्रिय के बिरह में दुखिया स्त्री कहती है कि, हे मेरे परदेशी सइयाँ तुम जल्दी आओ, मैं अकेली हूँ, समझ मे नहीं आता मैं क्या करुँ, कहाँ जाऊँ, तुम्हारी याद में मैं सारी रात व्याकुल रहती हूँ। बिरह के दुख से मुझे चैन नहीं पडता, मन हर समय उदास रहता है।	
	अर्थ समझाने के तदुपरान्त मै ठुमरी गाकर सुना दूंगा। स्थाई और अन्तरे की उठावदार ताल के जगहें समझा कर विद्यार्थियों से भी वह ठुमरी	

ताल – दीपचंदी मात्रा १४

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	धीं	ऽ	धा	धा	तीं	ऽ	ता	तीं	ऽ	धा	धा	धीं	ऽ
×			२				०			३			

राग–भैरवी (ठुमरी) ताल–दीपचंदी

अस्ताई

आ जा बलम परदेशी।
का करूँ, कैसे करूँ, कित जाऊं।
तरपत सारी रतियाँ, जाय बसे ॥ध्रु.॥

अन्तरा

बिरह की मारी मैं कल न परत है।
चित चैन न, लागी उदासी ॥१॥

विषय (अर्थ सहित)	विषय- (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	गवाऊँगा। अन्त में ठुमरी गायन की विशेषतायें समझाकर तख्तास्याह पर लिख दूंगा।	**ठुमरी गायकी की विशेषतायें** १) ठुमरी के लिये अर्थपूर्ण काव्यरचना की आवश्यकता है। २) शब्दार्थ के अनुसार सुन्दर स्वररचनायें की आवश्यकता है। ३) बोल, आलाप, सुन्दर मुरकियाँ, स्वरों के प्रकार और छोटी तानें ली जाती है। ४) ठुमरी में सरल रागों और तालों का उपयोग किया जाता है। ५) ठुमरी गायक की आवाज सुरीलीं, लचीरी और मुलायम होनी चाहिये। ६) गायक को स्वर, राग, ताल, आलाप और तानों का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिये। ७) आविर्भाव और तीरोभाव का उपयोग किया जाता है। ८) ठुमरी गायन की शैली भावनापूर्ण, कल्पनाप्रधान तथा हृदयस्पर्शी होती है।
१४ उपसंहार –	आज हमने ठुमरी गायन की शैली और साथ ही भैरवी की एक ठुमरी दीपचंदी ताल में गाना सीख लिया।	
१५ आवृत्ति –	अब बताइये :— (१) ठुमरियाँ किन किन रागों में गाई जाती हैं ? (२) ठुमरी के ताल कौन कौन से हैं ? (३) ठुमरी गायन की पद्धति बताइये। (४) खयाल और ठुमरी की गायकी में क्या अन्तर होता है ? (५) ठुमरी की गायकी में क्या विशेषतायें हैं ?	
१६ गृहपाठ –	ठुमरी के लिये अनुकूल मुरकियाँ, हरकतें और छोटे छोटे स्वर समुदायों पर अभ्यास करके आइये। जहाँ जहाँ आप लोग अच्छी ठुमरियाँ सुनें उसका यथासम्भव अनुकरण करने का प्रयत्न कीजिये।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ नं. १८ विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

पिछले पाठ में खयाल गायन के विषय में जानकारी दी गई और उसके गाने का ढंग भी बताया गया। आज ठुमरी की गायकी और साथ ही भैरवी की ठुमरी सिखाने की बारी थी। भैरवी राग के विस्तार इत्यादि तथा त्रिताल की एक चीज विद्यार्थी पहले से ही जानते थे। प्रस्तावना करते समय भैरवी के कुछ आलाप गा कर में ने विद्यार्थियों से पूछा, कि मैं किस राग का आलाप ले रहा था। उन्हो ने उत्तर दिया, ' भैरवी का '। एक दो से मैं ने भैरवी का पिछला गीत भी गवा लिया, क्योंकि मैं चाहता था कि ठुमरी शुरु करने के पहले इन लोगों का भैरवी राग पर अधिकार होना आवश्यक है। पूर्वज्ञान पर आधारित मैं ने पुन: एक प्रश्न पूछा ' आप लोगों ने विलंबित लय में गाया जाने वाला कौनसा गीत प्रकार सीखा है ? विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हो ने खयाल सीखा है। हेतुकथन में मै ने बताया कि आज भी इसी तरह का एक नया गीत प्रकार हमें सीखना है।

विषय प्रतिपादन में मैं ने बताया कि ठूमरी गायन एक ऐसा माध्यम हैं जिसके द्वारा मनोभावनायें प्रकट की जा सकती हैं। तत्पश्चात ठुमरी के विषय मे आवश्यक बातें समझा दी। ठुमरी और खयाल गायकी में क्या अन्तर है यह समझाने के लिये में ने दोनों गीत प्रकारों में राग, ताल और रस सम्बन्धी अलग अलग विवरण दिये। होरी भी ठुमरी से मिलता जुलता ही एक प्रकार है, यह बताते हुये होरी के अन्तर्गत विषयों की भी चर्चा में ने की। ठुमरी के पूर्वकालीन प्रसिद्ध गायकों के नाम और ठुमरी गायकों की आवाज के गुण-धर्म पर प्रकाश डाला गया। ठुमरी में तीरोभाव और आविर्भाव को उपयोगिता की चर्चा करते हुये शेर और दोहों का जिक्र किया। एक बार में ने ठुमरी प्रत्यक्ष गा कर सुना दी, दीपचन्दी का ताल पहले जबानी समझाया और बाद में बजा कर और भी अधिक स्पष्ट कर दिया। ठुमरी के बोलों का अर्थ भी मैं ने समझाया और उसके शब्द तख्तास्याह पर लिख दिये। गायक बिना गीत का अर्थ और उसमें अन्तर्निहित भावनायें समझे ठुमरी गायन में असर नहीं पैदा कर सकता। क्योंकि ठुमरी की स्वरयोजना शब्दों पर आधारित होती है।

भैरवी की ठुमरो पहले में ने गाकर सुनाई। स्थाई, अन्तरे में ताल के उठाव की जगहें समझाई और बाद में विद्यार्थियों से भी गवा लिया। ठुमरी की विशेषतायें समझा कर मैंने उन्हे ठुमरियाँ सुनने की सलाह दी क्यों कि सुनने से गायकी में विकास होता है। एक घंटे में ठुमरी की पूरी रूपरेखा आ नहीं सकी, इसीलिये उसे दो घंटों में विभाजित कर देना पड़ा। पहले में ठुमरी की शास्त्रीय जानकारी और दूसरा घंटा प्रत्यक्ष ठुमरी गायन के लिये निश्चित किया गया। अन्त में आवृत्ति लेते समय मैंने चार पाँच प्रश्न पूछे और गृहपाठ दे कर पाठ समाप्त कर दिया।

– स्वरलेखन –

राग – भैरवी **– ठुमरी –** **ताल – दीपचंदी.**

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	धीं	ऽ	धा	धा	तीं	ऽ	ता	तीं	ऽ	धा	धा	धीं	ऽ

अस्ताई

–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	आऽ	जाबा	लम	पर
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	सारे	मम	पम	पनी
दे	सी	ऽ	का	क	हऽऽ	कैसेक	रूं	कि	त	जा	ऊं	ऽ	तरपत
ध्	प	ऽ	प	प	ध्पम	ग्रेम	ग्	सा	ग्	रे	सा	ऽ	सारे ग्ग
सग	री	ऽ	रति	याऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	जाय	बसी	ऽऽऽ				
मम	म	ऽ	ग्प	मप	ग्मरे	ग्सारे	ग्सा	रे सा	रे सानी	॥ ध्रु. ॥			

अन्तरा

– – – | – – – – | – – – | – – बिर हकी

– – – | – – – – | – – – | – – पध़् नृीनी

मा री मैऽ | तो ऽ कलनाऽ ऽऽऽऽऽ | पर त हैऽ | ऽऽ ऽऽ चित चैत

सां सां नि़रें | सां ऽ पनी़पनी़ सांरेंगं़रेंगं़ | गं़सां गं़ रें़सां | ध़नी़ ध़प पप पप

मे ऽ ऽ | ला गिउ दाऽऽऽ ऽऽऽऽ | सी ऽ ऽऽऽऽ |

ध़् प म | म मम मपमग़ साग़ऱ्प | म ग़ साग़रे़सा | ॥ १ ॥

संगीत विषय सम्बन्धी पाठोंकी रूपरेखा

लेखांक २० वाँ

पाठ का क्रमांक :– १९ वाँ (दिनांक मास सन् १९) **समय** ४० मिनट

कक्षा ९ वीं :– संगीत शाला का तीसरा वर्ष (अर्थात कक्षा ९) (अन्य पाठशालाओं की)

सामग्री :– तानपूरा या हार्मोनियम, तबला डग्गा।

विषय :– (उपविषय सहित) 'तराना' गायकी का विवरण और तराना गायन, (राग बिहाग का तराना)

पूर्वज्ञान :– (१) विद्यार्थियों को बडे, छोटे ख्याल तथा ठुमरी की गायकी मालूम है। (२) बिहाग राग का स्वर विस्तार और उसकी चीज़ भी वे जानते हैं।

प्रस्तावना :– आज तक हम ने कौन कौन से गीत प्रकार सीखे ? (२) बड़ा खयाल किस लय में गाया जाता है ? (३) छोटा खयाल किस लय में गाते हैं ? (४) किस लय में ठुमरी गाते हैं ?

हेतुकथन :– आज हमें द्रुत (जलद) लय में गाया जाने वाला एक नया गीत प्रकार सीखना है। उसका नाम तथा उसके विषय की संपूर्ण जानकारी आज हमें मालूम करनी है।

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन–	आज तक हमने जितने भी गीत प्रकार सीखे हैं उन सब के काव्य अर्थपूर्ण थे। परंतु आज के गीत का कोई विशेष भावार्थ नहीं निकलता। इसमें दिर, दिर, ओदे तानी, यल्ली, तोन्, दानी, ना, ता, रे इत्यादि अर्थहीन शब्दों का अथवा तबला या पखावज आदि के बोलों का उपयोग किया जाता है। इसी प्रकार के शब्द, बोल अथवा अक्षरों की सहायता से अस्थाई अंतरे बांधे जाते हैं (विभिन्न तालों के)। आप ही बताइये आखिर यह अर्थहीन गीतप्रकार गाया ही क्यों जाता है ? गीत का यह प्रकार स्वर और ताल प्रधान है और जलद लय में गाया जाता है। इस लिये इसमें भी एक प्रकार की रंजकता है। श्रोताओं में यह प्रकार लोकप्रिय भी है।	
(१) तराना–	गीत के इस प्रकार को तराना कहते हैं। इसे बहुधा ख्याल गायक गाया करते हैं। यह बताने के बाद में विद्यार्थियों को तराना गाने की पद्धति भली भांति समझा दूंगा।	**तराना** द्रुत लय में गाया जाने वाला काव्य रहित गीत प्रकार।
(२) 'तराना' गाने की पद्धति–	इसमें भी अन्य गायन शैलियों की भांति आरंभ में अस्थाई अन्तरा गाया जाता है। तत्पश्चात तननन,	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	दिर, दिर इत्यादि अक्षरों की सहायता से सितार के झाला की तरह इसमें भी विस्तार किया जाता है। आलाप आकार में नहीं किये जाते परंतु इन्ही अक्षरों को बडी सफ़ाई से निश्चित लय में गाया जाता है। तराना गाने के लिये गायकों को अपनी ज़बान बहुत तय्यार करनी पड़ती हैं। मोटी जीभ इसके लिये ठीक नहीं चल पाती। तराना गायकी में लयकारी की तानें भी ली जाती हैं परंतु जिस लय में तराना होगा तानें भी उसी लय में ली जायेंगी। तानें लेते समय होश्यार तबलची ही तबले पर जलद लय का ठेका ठीक ठीक निभा सकते हैं। विलंबित और मध्यलय में तराने बहुत कम गाये जाते हैं।	**तराना** **राग–बिहाग ताल–त्रिताल** **अस्ताई** ना दिर् दिर् दानी तदानी तोम् तनन तोम्। दीम् तननननन देरें ना देरे ना दीम् ॥ धृ० ॥ **अन्तरा** ना दिर दिर दिर धेत्तेलाना दीम् तनन दीम्। दीम् तननननन देरेना देरेना दीम्। तध्डाँन् धिडनग् तिरकिड तक् तध्डाँन् तक् धा, तध्डाँन् तक धा, तध्डाँन् तक् धा, तदारे दानी ॥१॥ **ख्यालनामा तराना** विलंबित लय के तराने को ख्याल–नामा तराना कहते हैं।
(३) ख्यालनामा–तराना–	विलंबित लय के तरानों को ' ख्यालनामा–तराना ' कहते हैं।	
(४) त्रिवट –	" त्रिवट " भी तराने का एक प्रकार है। इसे " तिरवट " भी कहते हैं। इसके अस्थाई अन्तरों में केवल पखावज या तबले के ही बोल होते हैं; इसके अतिरिक्त दूसरे किसी भी प्रकार के शब्दों का उपयोग इसमें नहीं किया जाता। साधारण तराने की अपेक्षा यह अधिक कठिन होता है, परंतु इसे तराने की तरह ही गाते हैं।	
(५) तरानों के राग –	जिन रागों में खयाल गाये जाते हैं तराने भी उन्ही रागों में गाये जातें हैं।	
(६) तरानों के ताल–	तराने अलग अलग रागों में गाये जाते हैं। परंतु विशेषत: त्रिताल और एकताल में इसे ज्यादा गाते हैं। ये सारी बातें में उन्हे भली भांति समझा दूंगा। तत्प–श्चात बिहाग का एक तराना तख्तास्याह पर लिख कर इससे संबंधित कुछ प्रश्न पूछूंगा।:– (१) यह तराना किस राग का है ? (२) इसकी ताल कौन सी है ? (३) बिहाग का आरोह अवरोह बताइये। यह पूछ कर कुछ लड़कों से बिहाग का स्वर विस्तार करा लूंगा।	
(७) शिक्षकों का गायन–	तराना पहले में खुद उन्हें गा कर सुनाऊंगा। तदुपरांत में सिंधूरा काफी राग का मध्य लय का तराना	

विषय अर्थ सहित	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
(८) विद्यार्थियों का गायन–	और राग पूरिया का त्रिवट गा कर प्रत्येक का अन्तर उन्हे समझा दूगा। विद्यार्थियों से गवाने के लिये प्रथम में एक एक पंक्ति गाऊंगा और उन्हे भी अपना अनुकरण करने के लिये कहूँगा। उनके जबान पर अक्षर अच्छी तरह बैठ जाने पर लय बढा कर अस्थाई अन्तरे भी गवा लूँगा। बाद में उन्हे संपूर्ण तराना गायकी सुना कर उनसे भी गवाने का प्रयत्न करूंगा।	
(९) उपसंहार–	इस प्रकार आज हम लोगों ने द्रुतलय में गाया जाने वाला एक नया गीत प्रकार अर्थात तराना सीखा। इसमें पारंगत होने के लिये आपको तराने सुनने और गाने का अभ्यास करना चाहिये।	
(१०) आवृत्ति–	अब बताइये। (१) 'तराना' अर्थहीन गीत प्रकार होते हुये भी लोकप्रिय क्यों है ? (२) खयालनामा तराना किसे कहते हैं ? (३) त्रिवट क्या है ? (४) त्रिवट और तराने में क्या अन्तर है ? (५) तराने की विशेषतायें क्या हैं ? इसके अतिरिक्त भी विद्यार्थियों से मैं तराने की अस्थाई और अन्तरे गवा लूँगा।	
(११) गृहपाठ–	आज जो तराने मैं ने सिखाये हैं उससे अधिक जलद लय में गाने के लिये अभ्यास करके आइये। प्रयत्न कीजिये कि 'दिरदिर,' तननन इत्यादि अक्षरों के (सितार के झाला की तरह) प्रयोग आपके मूंह से जलद लय में स्पष्ट रूप से निकल सकें। जब भी कभी आपको अच्छे तराने सुनने का अवसर मिले, जरुर सुनिये और उसे अनुकरण करने का अभ्यास कीजिये।	
निरीक्षकों की सूचना		

पाठ नं. १९ विषयक

विद्यार्थी-शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

आज का विषय तराना था। बडे ख़याल, छोटे ख़याल और ठुमरी के विषय में विद्यार्थियों को पूर्व-ज्ञान था। बिहाग राग का स्वर विस्तार भी वे जानते थे। प्रस्तावना करते समय उनके जाने हुये गीत प्रकार किन लयों में गाये जाते हैं इस विषय में मैं ने उन से तीन चार प्रश्न पूछे। हेतुकथन के समय मैं ने समझाया "आज हमें द्रुत लय में गाया जाने वाला नवीन गीत प्रकार सीखना है। वह कैसे गाया जाता है और उसका नाम क्या है इत्यादि अनेक विस्तृत बातें हमें जाननी हैं। मैं ने विषय प्रतिपादन करते समय तराने की विशेषतायें बता कर इस अर्थहीन गीत-प्रकार के लोकप्रिय होने के कारण भी समझा दिया और यह भी बताया कि इसका नाम तराना है। तराना गायकी की पद्धति समझा देने के बाद त्रिवट और ख्यालनामा तराना का अर्थ भी समझाया। तत्पश्चात तराने में लगने वाले तालों का विवरण भी दिया। इस प्रकार तराने के विषय में विद्यार्थियों का कुतूहल बढ जायगा। मैं ने तदुपरांत तख्तास्याह पर राग बिहाग का एक तराना लिख दिया और उससे संबंधित कुछ सवाल भी पूछे। कुछ लड़कों से विहाग का स्वर विस्तार भी गवाया। इसके बाद मैं ने उन्हे एक तराना, गाकर सुनाया। इसीके साथ सिंधुरा काफी राग में मध्य लय का एक तराना और पूरिया राग का एक त्रिवट भी मैं ने सुनाया और इन तीन प्रकारों का अन्तर भी समझा दिया। विद्यार्थी भी इस समय तक गाने के लिये उत्सुक हो रहे थे। मैं ने उनकी सुविधा के लिये पहले तराने की एक एक पंक्ति गाई और उन्हे अनुकरण करने का आदेश दिया। जब विद्यार्थियों की ज़बान पर अक्षर और लय बैठ गये तो मैं ने लय बढा कर भी उनसे गवाया। मेरे गाने के पश्चात उन्हो ने संपूर्ण तराना गाने का यथाशक्ति प्रयास किया। उपसंहार में मैं ने कहा कि वे तराने के कुशल गायक तभी हो सकेंगे जब दूसरे गायकों को ध्यान से सुनें और अनुकरण करने का अभ्यास करें। पुनरावृत्ति के लिये मैं ने कुछ प्रश्न पूछे। अलग अलग लड़कों से तराने के स्थाई अन्तरे गवाये। अन्त में गृहपाठ दिया कि आज के तराने की अपेक्षा अधिक स्पष्ट और जलद गति की तराना गायकी का अभ्यास करके घर से आओ।

(बिहाग, सिंदुरा-काफी व पुरिया, ह्यांतील, अनुक्रमें जलद लयींतला-तराना, मध्यलयींतला तराना व त्रिवट यांचों स्वरलेखनें खालीं दिलीं आहेत.) :—

जलद्-लयींतील - तराना (१)

राग-बिहाग **स्वर-लेखन** **ताल-त्रिताल.**

अस्ताई

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धीं	धीं	ना
×				२				०				३			

–	–	–	–	–	–	–	–	ना	दिर	दिर	दा	नी	त	दा	नी
–	–	–	–	–	–	–	–	सा	म	ग	प	पं	नी	ध	सां
तोम्	ऽ	ऽऽ	त	न	न	तोम्	ऽ	दीम्	ऽ	त	न	न	न	न	न
नी	–	धप	मं	ग	म	ग	–	प	–	नी	ध	प	मं	ग	म
दे	रे	ना	दे	रे	ना	दीम्	ऽ								
प	मं	ग	म	ग	रे	सा	–								

अंतरा

–	–	–	–	–	–	–	–	ना	दिर	दिर	दिर	ध	त्ते	ला	ना
–	–	–	–	–	–	–	–	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां
दीम	ऽ	ऽ	त	न	न	दीम्	ऽ	दीम्	ऽ	त	न	न	न	न	न
सां	–	–	सां	नी	रें	सां	–	सां	–	गं	रें	सां	नी	ध	प
दे	रे	ना	दे	रें	ना	दीम्	ऽ	त	ध्डान्	ऽ	धिड्	नग	तिर	किट	तक्
नी	ध	प	म	ग	रे	सा	–	प	सां	–	सां	सां	सां	सां	सां
त	ध्डान्	ऽ	तक्	धां	ऽ	त	ध्डान्	ऽ	तक्	धा	ऽ	त	ध्डान्	ऽ	तक्
नी	सां	नी	रें	सां	–	नी	नी	–	ध	प	–	प	प	–	ध
धा	ऽ	ऽ	त	दा	रे	दा	नी								
ग	–	–	म	ग	रे	सा	ऩी								

मध्यलयींतील तराणा

राग–सिंधुरा काफी

ताल–त्रिताल

अस्ताई

तानोम् देरेना तद्रे दानी।
तादीम् दीम् तनन नितलन दारा दारा नोम्।
तन देरेना तन देरेना।
तारे तद्रे दानी ॥ धृ. ॥

अंतरा

ना दीर् दीर् दीर् दीम् तदीम् तननन दीम् तदीम् ।
तान्न देरेना तद्रे दानी ।
धगत्त किडनग तिट्किट् धुमकिट ताक्डान् ता धा दानी ॥ १ ॥

स्वर-लेखन

अस्ताई

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना	घीं	घीं	ना	ना	घीं	घीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	घीं	घीं	ना
×				–				०				–			
–	–	–	–	–	–	–	–	ता	नोम्	ऽ	दे	रे	ना	त	द्रे
–	–	–	–	–	–	–	–	नी	ध	ऽ	प	म	प	ध	प
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ता	दीम्	ऽ	दीम्	ऽ	त	न	न
ग्	–	रे	–	म	–	प	–	सा	ध	–	ध	–	ध	ध	ध
नि	त	ल	न	दाऽ	ऽ	रा	ऽ	दाऽ	ऽऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	नोम्	ऽ
ध	प	ध	प	पध	नी	ध	प	मप	धप	ग्	रे	म	–	प	–
त	न	दे	रे	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	न	देऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	प	ध	पध	नी	ध	नी	ध	प	मप	धप	ग्	–	–	–
ता	ऽ	रे	त	द्रे	दा	ऽ	नी								
ग्	–	ग्	म्	म	रे	–	सा								

अंतरा

								ना	दिर्	दिर्	दीम्	ऽ	त	दीम्	ऽ
								म	म	प	नी	प	नी	सां	–
त	न	न	न	दीम्	ऽम्	त	दीम्	ता	ऽ	न्न	दे	रे	ना	त	द्रे
नी	नी	सां	रें	सांरें	गं	रें	सां	सां	–	नी	ध	प	म	ग	रे

दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	धत्र	स्त	क्रिड्	नग्	तिट्	किट्	धुम	किट्
ग	–	म	–	म	–	म	–	पप	रें	रें	रें	नी	सां	नी	सां
ता	क्डान्	ऽ	ता	धा	ऽ	दा	नी								
नी	प	–	म	ग	–	रे	सा								

त्रिवट

राग-पुरिया

ताल-त्रिताल

अस्ताई

किड्नग् तिर्किड्तक् धिर्किड्तक् धा ती धा धा ऽ ती धा ।
धा किट्तक् धुमकिट् तक् किड्नग् तिर्किड् तक् धिर्किड् तक् ॥ धृ० ॥

अंतरा

तक् धुम्किट् धीट धीट धिं तिरकिट् तक् तिर्किट् धा
तिर्किट् तक् धिर्किड् तक् धा ऽ धागे धीं
तिक्डान् धा कत धा ऽ धागे धीं तिक्डान् धा कत धा
धागे धीं तिक्डान् धा कत धा ॥ १ ॥

स्वरलेखन

अस्ताई

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ना ×	धीं	धीं	ना	ना –	धीं	धीं	ना	ना ०	तीं	तीं	ना	ना –	धीं	धीं	ना
–	–	–	–	–	–	किड्	नग्	तिर्	किड्	तक्	धिर्	किड्	तक्	धा	ती
–	–	–	–	–	–	नी	नी	रे	मं	ग	रे	सा	नी	सा	रे
धा	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ती	धा	ऽ	धा	किट्	तक्	धुम्	किट्	तक्	किड	नग्
सा	–	–	सा	नी	रे	सा	–	सा	सा	सा	ग	ग	ग	मं	ध
तिर्	किड्	तक	धिर्	किड्	तक्										
म	ध	मं	ग	ग	ग										

अंतरा

– – – – | तक् धुम् कि ट | धी ट धी ट | धिं तिर् किट् तक्

– – – – | ग ग ग ग | म॑ म॑ ध ध | सां सां सां सां

तिर् किट् धा ऽ | तिर् किड् तक् धिर् | किड् तक् धा ऽ | धा गे धीं ऽ

सां सां सां – | नी नी रें॒ गं | गं रें॒ सां – | सां सां सां –

ति ऽ कडान् ऽ | धा ऽ क त | धा ऽ धा गे | धीं ऽ ति ऽ

नी – नी – | ध – ध नी | म॑ – म॑ म॑ | ध – नी –

कडान् ऽ धा ऽ | क त धा ऽ | धा गे धीं ऽ | ति ऽ कडान् ऽ

ध – म॑ – | ग म॑ ग – | ग ग म॑ – | ध – म॑ –

धा ऽ क त | धा ऽ

ग – रे॒ रे॒ | सा –

संगीत विषय सम्बन्धी पाठोंकी रूपरेखा

लेखांक २० वाँ

पाठ का क्रमांक :– १० वाँ (दिनांक मास सन् १९) **समय दो घंटे**

कक्षा (वर्ष) :– संगीत शाला का पाँचवाँ वर्ष

विषय :– (उपविषय सहित) धृपद, गायकी, ताल, चौताल (ध्रुपद गायकी के संबंध में पूर्ण जानकारी)

सामग्री :– तानपूरा, पखावज;

पूर्वज्ञान :– विद्यार्थियों को खयाल, ठुमरी, तराना, इत्यादि संगीत प्रकारों के विषय में संपूर्ण जानकारी है। खयाल गायकी के ताल भी वे समझते हैं : भैरव राग भी वे जानते हैं।

प्रस्तावना :– संगीत के अनेक प्रकारों में आप ने कौन कौन से प्रकार सीखे हैं ?

हेतुकथन :– आज आप को एक अति प्राचीन संगीत प्रकार सीखना है। इसकी गायन शैली भी सब से अलग है। इस शैली का नाम तथा इसके विषय में सारी बातें मैं आप लोगों को बताऊँगा।

विषय (अर्थसहित)	पद्धति – (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
प्रतिपादन– (१) धृपद–	इस अति प्राचीन गीत प्रकार का नाम ध्रुपद है। भारत में प्राचीन समय से ही इस शैली का चलन है। पंद्रहवीं शताब्दी में सर्वप्रथम ग्वालियर के राजा मानसिंह ने ध्रुपद गायकी का प्रचार किया। उन्होंने स्वयं धृपद की अनेक रचनायें भी की थीं।	**धृपद की चार प्राचीन** (१) गोवरहरी वाणी (२) डागुर वाणी (३) खंडार–वाणी और (४) नोहार वाणी
(२) 'कलाकार' और 'धृपदिये'– (३) धृपद गायका पूर्व इतिहास	पूर्वकालीन धृपद गायक 'कलाकार' कहे जाते थे परन्तु आज उन्हें केवल धृपदिये कह कर संबोधन किया जाता है। अकबर तथा शहाजहाँ के सारे दरबार गायक धृपदिये कहलाते थे (तानसेन, लालखां इत्यादि)।	संचारी = धृपद के काव्य का तीसरा भाग आभोग = धृपद के काव्य का चौथा भाग नोम् तोम् = धृपद गाने पहले, ता, न,री,द, इत्यादि अक्षरों की सहायता से ली जाने वाली लयदार आलाप
	पूर्वकालीन युग में धृपद गायकी की चार पद्धतियां प्रचार में थीं। उन पद्धतियों को वाणी कहते थे। उन चार वाणियों के नाम इस प्रकार हैं (१) खडार वाणी (२) गोवरहर वाणी (३) डागुर वाणी (४) नोहार वाणी। कदाचित इन वाणियों के नाम गायकों के निवास-स्थानों पर आधारित हैं। यह सारी बातें मैं पाटीपर लिख देने के बाद उसका पूर्व इतिहास इस प्रकार बताऊंगा। औरंगजेब ने अरसिक होने के कारण धृपदियों को अपने दरबार में कोई स्थान न दिया। तदुपरांत सौ डेढ सौ	(१) दुगुन = दो गुनी लय (२) तिगुन = तीन गुनी लय (३) चौगुन = चार गुनी लय (४) कुवाडी = सवा गुनी लय (५) आडी = डेढ़ गुनी लय (६) बियाडी = पौने दो गुनी लय

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)
	बर्षों तक इस गायकी का कोई प्रचार न हो सका। इस बिकट परिस्थिति का सामना करते हुये पुनः पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा पं. भातखंडे ने संगीत कला का पुनरुद्धार किया। वास्तव में धृपद ही भारत की कलात्मक संस्कृतमूलक तथा मर्दानी गायन पद्धति है। यह बताने के पश्चात में धृपद गायकी के संबंध में आपसे कुछ बातें बताना चाहता हूँ।
(४) धृपद गायकी	धृपद की गायकी बीर, श्रृंगार और भक्तिप्रधान गायकी है। इसका काव्य उच्च प्रकार का होता है। काव्य की भाषा हिंदी, उर्दू और ब्रज भाषा होती है। प्राचीन काल में ऋषि, मुनि ईश्वर की आराधना तथा संस्कृत श्लोक आदि धृपद में गाया करते थे। धृपद काव्य के चार भाग होते हैं – (१) स्थाई (२) अन्तरा (३) संचारी (४) आभोग। संचारी और आभोग का अर्थ मैं पाटी पर लिख दूंगा। तत्पश्चात धृपद गायकी की रीति निम्न लिखित समझाऊंगा।
(५) तोम् नोम्	जिस राग में धृपद गाना हो, सम से पहले उस का आलाप करते हैं। आलाप करते समय ता, ना, री, द, इत्यादि अक्षरों का उपयोग करते हैं। इसे आलाप न कह कर तोम् नोम् कहते हैं। कहते हैं कि पूर्वकालीन आलाप में "ॐ अनन्त नाम हरी" शब्दों में किया जाता था, तोम् नोम् उसी का अपभ्रंश है। यह तोम् नोम् बहुत देर तक बडी कुशलतापूर्वक किया जाता है। गमक आदि लेकर सितार बाजे की तरह बढत भी की जाती है। इसमें ताल नहीं होती परन्तु लय अवश्य होती है। खयाल या ठुमरी की भांति गीत शुरु हो जाने के बाद बीच में आलाप, तान इत्यादि नहीं लिये जाते। नोम्, तोम् के बाद गीत शुरु किया जाता है। गीत के साथ ही पखावज भी आरंभ हो जाता है। बंदिश

तख्तास्याह (पाटी) लेखन

	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं
एकगुन–	१	२	३	४	५	६	७
'दुगुन'–	१, २	३, ४	५, ६	७, ८	९, १०	११, १२	१३, १४
'तिगुन'–	१, २, ३	४, ५, ६	७, ८, ९	१०, ११, १२	१३,१४,१५	१६,१७,१८	१९,२०,२१
चौगुन–	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९,१०,११,१२	१३,१४,१५,१६	१७,१८,१९,२०	२१,२२,२३,२४	२५,२६,२७,२८

(सवागुना) कुवाडी – १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९,

(डेढ़गुना) आडी – १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११,

(पवने दो गुना) बियाडी – १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३,

विषय (अर्थसहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन

(६) लय के कठिण प्रकार–

संभालते हुये पहले स्थाई, अन्तरा, संचारी और आभोग गाते हैं। फिर लय के नाना प्रकार लिये जाते हैं। आप लोग लय के कौन कौन से प्रकार जानते हैं? प्रश्न का उत्तर पाने के पश्चात में उन्हे दुगुन, तिगुन, चौगुन, कुवाडी आडी, बियाडी आदि कठिन लयों के विषय में बताऊंगा। दुगुन करने के अर्थ हैं कि ताल के आधे आवर्तन में धृपद के चरण गाये जाते हैं। ऐसा करते समय ताल की सारी मात्राओं को आधे आवर्तन में गाना चाहिये। उदाहरण के लिये तीन ताल को ले लीजिये। इसे में अलग अलग लय में बिठा कर पाटी पर लिख रहा हूँ। लिखने के बाद में विद्यार्थियों के मुंह से भी कहलवा लूंगा। त्रिताल का प्रत्येक खंड कितनी मात्राओं का हैं? तो दुगुन करते समय प्रत्येक खंड कितनी मात्रा के हो जायेंगे? तिगुन और चौगुन करते समय कितनी कितनी मात्रा के प्रत्येक खण्ड बनेंगे? कुवाडी, आडी, बियाडी का अर्थ लिख देने के बाद प्रश्न पूछूंगा। चार सवा कितने? अर्थात प्रत्येक खंड में कितनी मात्रायें होंगी? इस प्रकार प्रश्नोत्तर द्वारा आडी, बियाडी का विषय समझा कर में खुद ठेके के अक्षर बोल कर लय पर और स्पष्ट प्रकाश डालूंगा। उन्हे यह भी बताऊँगा कि इस प्रकार किसी भी ताल के विभिन्न लयों को समझाया जा सकता है।

धृपद गायक इसी भांति अलग अलग लयों में धृपद के चरण गाया करते हैं। पखावज वादक भी गायक को लय के अनुसार ही साथ देता है। इस प्रकार दोनो जब एकदम सम पर आते हैं तो श्रोता आनंदविभोर हो उठते हैं। साथ ही यह भी पता चल जाता है कि गायक का ताल और लय पर कितना अधिकार है। इस गायकी में राग की शुद्धता निभाने के लिये कठिन नियमों का पालन करना पड़ता हैं।

चौताल मात्रा १२

मात्रा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
ठेका	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
खुणा	X		०		२		०		३		४	

–तानसेन कृत–

– धृपद –

राग– भैरव ताल– चौताल

अस्ताई

प्यारे तू हि ब्रह्म। तू हि विष्णु
तू महेश।
तू हि आदि तू ही अनादि। तू हि नाथ
तुहि गणेश ॥ धृ ॥

रेखा

तख्तास्याह (पाटी) लेखन

लयों के विभिन्न प्रकार. ताल–त्रिताल.

	ना	धीं	धीं	ना	ना	धीं	धीं	ना	ना	तीं	तीं	ना	ना	धी	धी	ना
एकगुन–	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
'दुगुन'–	१, २	३, ४	५, ६	७, ८	९, १०	११, १२	१३, १४	१५, १६	१७, १८	१९, २०	२१, २२	२३, २४	२५, २६	२७, २८	२९, ३०	३१, ३२
'तिगुन'–	१, २, ३	४, ५, ६	७, ८, ९	१०, ११, १२	१३, १४, १५	१६, १७, १८	१९, २०, २१	२२, २३, २४	२५, २६, २७	२८, २९, ३०	३१, ३२, ३३	३४, ३५, ३६	३७, ३८, ३९	४०, ४१, ४२	४३, ४४, ४५	४६, ४७, ४८
चौगुन–	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९, १०, ११, १२	१३, १४, १५, १६	१७, १८, १९, २०	२१, २२, २३, २४	२५, २६, २७, २८	२९, ३०, ३१, ३२	३३, ३४, ३५, ३६	३७, ३८, ३९, ४०	४१, ४२, ४३, ४४	४५, ४६, ४७, ४८	४९, ५०, ५१, ५२	५३, ५४, ५५, ५६	५७, ५८, ५९, ६०	६१, ६२, ६३, ६४

(सवागुना) कुवाडी –	१, २, ३, ४, ५,	६, ७, ८, ९, १०,	११, १२, १३, १४, १५,	१६, १७, १८, १९, २०.
(डेढ़गुना) आडी –	१, २, ३, ४, ५. ६,	७, ८, ९, १०, ११, १२,	१३, १४, १५, १६, १७, १८,	१९, २०, २१, २२, २३, २४.
(पवने दो गुना) बियाडी –	१, २, ३, ४, ५, ६, ७,	८, ९, १०, ११, १२, १३, १४,	१५, १६, १७, १८, १९, २०, २१,	२२, २३, २४, २५, २६, २७, २८.

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	तानें, हरकत और मुर्कियाँ इत्यादि लेना अनुचित है। इस गायकी के लिये एक विशेष प्रकार की गंभीर गुंजारमय आवाज तय्यार करनी पडती है। धृपद, अधिकांश चौताल, सूलफाक, झंपा, ब्रम्ह, रुद्र आदि तालों में गाया जाता है।	**अन्तरा** जल स्थल मरुत ब्योम। तुहि आकार तुही सोम। तुही ओंकार तुही मकार। निरंकार तुही धनेश ॥ १ ॥
(७) धृपद की ताल–	तत्पश्चात चौताल की विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को दूगा क्यों कि अगला धृपद चौताल में ही सिखाना है। पाटी पर लिख कर प्रत्यक्ष ताल बजा कर भी उन्हे समझाने का प्रयत्न करूँगा। विद्यार्थियों को बाद में खुद हाथ से ठेका देने का आदेश दे कर भैरव राग का एक धृपद पाटी पर लिख दूगा। धृपद सिखाने के पहले चौताल की विभिन्न लयों का अभ्यास भी मैं विद्यार्थियों से करा लूंगा।	**संचारी** तुही वेद तुही पुराण। तुही कृष्ण तुही राम। तुही ध्यान तुही ग्यान। तुही ईश तुही भुवनेश ॥२॥
(८) शिक्षक का गायन–	गीत का अर्थ समझाने के पश्चात मैं पहले गा कर सुनाऊँगा। शुरु करने के पूर्व पहले मैं राग संबंधी नोम् तोम् भी उन से कहलाऊँगा, बाद में धृपद का गीत गवाऊँगा।	**आभोग** 'तानसेन' कहत बैन। तुही दिवस तुही रैन। तुही दर तुही घर। तुही वरुण तुही दिनेश ॥३॥
(९) विद्यार्थियों का गायन–	फिर आज बताये हुये अलग अलग लय मैं पहले में उन्हे सुना कर उनसे भी बाद में उसी धृपद के चरण गवा लूंगा।	
(१०) उपसंहार–	इस प्रकार आज हम लोगों ने धृपद गायकी की संपूर्ण रूपरेखा जान ली और एक राग का धृपद भी सीख लिया।	
(११) आवृत्ति–	इन प्रश्नों का उत्तर दीजिये :– (१) धृपद गायकी का सब से पहले कब और किसने प्रचार किया ? (२) धृपद गानेवालों को पहले, क्या कहते थे ? (३) धृपद शैली की चार वाणियाँ कौन कौन सी है ? (४) धृपद गायकी की पद्धति कैसी है ? (५) नोम् तोम् क्या है और कब किया जाता है ?	

विषय (अर्थ सहित)	पद्धति– (प्रश्न सहित)	तख्तास्याह (पाटी) लेखन
	(६) आज लय के कठिन प्रकार कौन कौन से सिखायें गये ?	
(१२) गृहपाठ–	नीचे लिखी बातों पर घर से अभ्यास करके आइये। (१) आज सिखाये हुये धृपद का अलग अलग लयों में गाना। (२) हाथ से लयों की ताल देना। (३) ताल के भिन्न भिन्न लय प्रकारों पर मेहनत कीजिये। (४) खयाल और धृपद गायकी का अन्तर लिख कर लाइये।	
निरीक्षक की सूचना		

पाठ नं. २० विषयक

विद्यार्थी–शिक्षकों के लिये स्पष्टीकरण

धृपद गायकी ही आज का मुख्य विषय था। धृपद गायकी के सम्बन्ध में सारी जानकारी तथा चौताल के प्रयोगात्मक विवरण उपविषय माने गये। पूर्वज्ञान में बताया गया कि खयाल, ठुमरी, तराना आदि संगीत के प्रकार तथा भैरव राग और त्रिताल भी वे जानते हैं। हेतुकथन के अन्तर्गत उन्हे बताया गया कि आज एक ऐसा गीत प्रकार सिखाया जायगा जो अति प्राचीन हैं तथा सब से अलग हैं।

विषय प्रतिपादन में मैं ने बताया कि इस गीत–प्रकार का नाम धृपद हैं। कब और किसने इसका प्रचार किया इस सत्य पर प्रकाश डाला गया। इस गायकी का थोडा पूर्व इतिहास भी विद्यार्थियों को बताया गया। इस इतिहास का उल्लेख करते समय मैं ने धृपद शैली की चार 'वाणियों' का उल्लेख किया। धृपद गाने की रीति समझाते हुये मैं ने स्थाई, अन्तरा, संचारी और आभोग का विषद विवरण देकर लिख दिया। गायन आरम्भ करने के पूर्व मैं ने समझाया कि सर्वप्रथम उस राग का नोम् तोम् में आलाप, तत्पश्चात् स्थाई, अन्तरा, संचारी, आभोग कह कर धृपद के चरण अनेक लयों में गाये जाते हैं। उन लयों को भली भांति समझाने के बाद मैं ने शब्दों के अर्थ पाटी पर लिख दिये। उन्हे लयों को अच्छी तरह समझाने के लिये मैं ने तीनताल का उदाहरण दिया और उसीका दुगुन, तिगुन, चौगुन, कुवाडी, आडी, बियाडी करके तख्तास्याह पर समझा कर लिख दिया। विद्यार्थियों से भी हाथ से ताल दिलवाया। कठिन लयों को समझाने के पश्चात मैं ने बताया कि धृपद में हरकतें, मुर्की, तानें इत्यादि वर्जित हैं। राग की शुद्धता पर पूर्णरूप से ध्यान दिया जाता है। धृपद गायक को किस प्रकार की आवाज

तय्यार करनी चाहिये यह बता कर उन तालों के नाम भी मैं ने बताये जिनमें अधिकांश ध्रुपद गाये जाते हैं। ये सारी बातें बताने में लगभग साठ मिनिट लग गये। इसके पश्चात आता है ध्रुपद का प्रत्यक्ष गायन। चौताल का विवरण, उसके अलग अलग लय तथा प्रत्यक्ष ध्रुपद गायन इन सब में लगभग ६० मिनट और लग जाते हैं। वास्तव में यह विषय दो भागों में विभाजित होना चाहिये किन्तु पुस्तक की सुविधा के लिये इन दो घंटों की एक ही रूपरेखा तय्यार कर दी गई हैं।

दूसरे भाग का आरम्भ करते समय मैं ने सर्वप्रथम चौताल सम्बन्धी पूरी जानकारी दी। इस ताल में लय के अलग अलग प्रकारों का विभाजन भी किया गया। विद्यार्थियों से भी इन लयों का अभ्यास करा लिया गया। तत्पश्चात राग भैरव का ध्रुपद पाटी पर लिख कर मैं ने उसका शब्दार्थ उन्हे समझा दिया। पहले मैं ने भैरव राग का नोम् तोम् किया, फिर पूरा गीत गाया, विद्यार्थियों को आदेश दिया कि वे मेरा अनुकरण करें। फिर उसके अलग अलग चरण मैं ने भिन्न भिन्न लयों में गाया, उनसे भी गवा लिया।

आवृत्ति में सिखाये हुये विषय के सम्बन्ध में मैं ने ५।६ प्रश्न पूछे। गृहपाठ में उन सारी बातों पर अभ्यास करने का आदेश दिया जो मैं ने आज उन्हे सिखाई थीं। खयाल और ध्रुपद गायकी में क्या अन्तर है इसे लिख लाने को कहा। इस प्रकार सम्पूर्ण विषय दो घंटे में समाप्त हो गया।

तानसेनकृत-ध्रुपद

राग-भैरव **ताल-चौताल**

स्वरलेखन

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	किट	तक	गदि	गन

स्थाई

प्या	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ	हि	ब्र	ऽ	ह्म
ग	ऽ	रे॒	सा	नि॒	सा	रे॒	ग	रे॒	सा	ऽ	सा
तू	ऽ	हि	वि	ऽ	ष्णु	तू	ऽ	म	हे	ऽ	श
सा	ऽ	रे॒	ग	ऽ	म	प	ग	म	ध॒	ऽ	प
तू	ऽ	हि	आ	ऽ	दि	तु	हि	अ	ना	ऽ	दि
ग	ऽ	म	ध॒	ऽ	ध॒	नि	सां	नि	ध॒	ऽ	प

तू	ऽ	हि	ना	ऽ	थ	तु	हि	ग	णे	ऽ	श	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	प	ग	म	ग	रे्	ऽ	सा	॥ध्रु०॥

अन्तरा

ज	ल	ऽ	स्थ	ल	ऽ	म	रु	त	ब्यो	ऽ	म	
ग	म	ऽ	ध्	प	ध्	नि	सां	ध्	सां	ऽ	सां	
तु	हि	आ	का	ऽ	र	तु	ही	ऽ	सो	ऽ	म	
सां	सां	रें्	गं	ऽ	रें्	सां	नी	ध्	नी	ध्	प	
तु	ही	ओं	काऽ	ऽ	र	तु	ही	म	का	ऽ	र	
सां	सां	रें्	गंमं	पं	पं	म	ग	रे्	ग	रे्	सा	
नि	रं	ऽ	का	ऽ	र	तु	हि	ध	ने	ऽ	श	
नि	सां	नी	ध्	प	म	प	[म]ग	म	[ग]रे्	ऽ	सा	॥१॥

संचारी

तू	ऽ	हि	वे	ऽ	द	तु	हि	पु	रा	ऽ	ण	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	ध्	नि	सां	नि	ध्	ऽ	प	
तू	ऽ	हि	कु	ऽ	ष्ण	तू	ऽ	हि	रा	ऽ	म	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	प	म	ऽ	[ग]रे्	ग	रे्	सा	
तू	ऽ	हि	ध्या	ऽ	न	तू	ऽ	हि	ग्या	ऽ	न	
सा	ऽ	[नी]ध़्	[नी]सां	ऽ	सा	रें्	ग	रे्	सा	ऽ	सा	
तू	ऽ	हि	ई	ऽ	श	तु	ही	भुव	ने	ऽ	श	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	प	म	म	[ग]रे्	ग	रे्	सा	॥२॥

आभोग

ता	ऽ	न	से	ऽ	न	क	ह	त	बं	ऽ	न	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	ध्	नि	सां	ध्	सां	ऽ	सां	
तू	ऽ	हि	दि	व	स	तू	ऽ	हि	रैं	ऽ	न	
सां	ऽ	रें॒	गं	रें॒	सां	ध्	नी	ध्	प	ऽ	प	
तू	ऽ	हि	द	ऽ	र	तू	ऽ	हि	घ	ऽ	र	
ग	ऽ	म	ध्	ऽ	ध्	नि	सां	नि	ध्	ऽ	प	
तू	ऽ	हि	व	र	ण	तु	ही	दि	ने	ऽ	श	
ग	ऽ	म	ध्	प	स	$^{\text{ग}}$रे॒	ग	रे॒	सा	ऽ	सा	॥३॥

नोट :- पाठ नं. १२ (लेखांक१३) में पाटी लेखन के समय अस्थाई अन्तरा आदि की जानकारी देते हुये क्रमानुसार में ने प्रथम आभोग और बाद में संचारी लिखा है। परन्तु यह उल्टा हो गया है। वास्तव में तीसरा भाग संचारी और चौथा भाग आभोग है। ध्यान रखिये।

शुद्धिपत्रक

पृष्ठांक	जगह	अशुद्ध	शुद्ध
३	(खाली सारणी)	मराठीमें छपा हुवा है।	विषय-विवेचना | प्रश्न और पद्धति | पाटी-लेखन
६०	तख्तास्याह-लेखन-	'दुर्गा' की चीज का अन्तरा दुबारा छपा हुवा है।	दुबारा छपा हुवा अन्तरा 'कॅन्सल्' समझ लीजिये।
४९	तख्तास्याह-लेखन-	काफी ठाठ का वर्णन- रे्, ध् कोमल बाकी स्वर शुद्ध।	ग, नी् कोमल और बाकी स्वर शुद्ध।
४९	,, ,,	भैरव ठाठ का वर्णन- ग्, नी् कोमल बाकी स्वर शुद्ध।	रे्, ध् स्वर कोमल; बाकी स्वर शुद्ध।
५०	,, ,,	पांचवां राग -	सा रे् ग म प ध् नी सां सां नी ध् प म ग रे् सा
५०	,, ,,	८ वां राग -	सा ग मं प ध् नी सां सां नी ध् प मं ग म ग, मं ग रे् सा
५९	विषय विवेचना और ,, ,,	(१) स्थाई (२) अन्तरा (३) आभोग (४) संचारी	(१) स्थाई (२) अन्तरा (३) संचारी और (४) आभोग
७८ और ७९	तानें	स्थाई और अन्तरे की तानें मे कहीं जगें गंधार, धैवत और निषाद की निषानी स्पष्ट नहीं दिखाई देती।	उस जगें प्रत्येक तानमें, गंधार धैवत और निषाद कोमलही समझ लीजिये।
८१	तख्ता-स्याही लेखन	विचा	विचार
८३	तख्ता-स्याही लेखन	भिम्पलास की स्थाई -	स्थाई- अबतो बडी बेर टेरत हूं। करम करो मेरे रब साइयां ॥धृ.॥